हिस्नुल मुस्लिम

(कुरआन व हदीस की दुआयें)

अबु आबिद फैसल बिन सनाउल्लाह मदनी

सम्पादन
अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

حرمين
رئاسة الشؤون الدينية
بالمسجد الحرام والمسجد النبوي

হিসনুল মুসলিম

কুরআন-সুন্নাহ'র যিকির সংবলিত

ⓒ جمعية أصول للمحتوى الدعوي، ١٤٤٦ هـ

القحطاني، الدكتور سعيد بن علي بن وهف

حصن المسلم من أذكار الكتاب والسنة باللغة البنغالية. / الدكتور سعيد بن علي بن وهف القحطاني -ط ١.-الرياض، ١٤٤٦ هـ

١٠٠ ص؛ ١٢ X ١٧ سم

رقم الإيداع: ١٧٠٥٢ / ١٤٤٦

ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٨٥٣٧-٠٢-٢

حصن المسلم

مِنْ أَذْكَارِ الكِتَابِ وَالسُّنَّةِ

الفقير إلى الله تعالى
د. سعيد بن علي بن وهف القحطاني

بسم الله الرحمن الرحيم

প্রাক্কথন

إن الحمد لله، نحمده، ونستعينه، ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله صلى الله عليه وعلى أصحابه ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين وسلم تسليماً كثيراً، أما بعد:

यह संछिप्त किताब जो आप के हाथों में है मेरी,क अन्य किताब

الذِّكْرُ وَالدُّعَاءُ وَالْعِلَاجُ بِالرُّقَى مِنَ الْكِتَابِ وَالسُّنَّةِ

का सारांश है जिस में मैं ने दुआओं के भाग को संछिप्त रूप में प्रस्तुत किया है; ताकि इसे सफर में साथ रखना आसान हो।

इस किताब में मैं ने केवल दुआओं के मतन को ज़िक्र किया है और असल किताब में उल्लिखित हवालों में से केवल,क या दो हवालों पर बस किया है। जिसे सहाबी (रावी) की जानकारी या अधिक तख़रीज (हवालों) के जानने की इच्छा हो वह असल किताब की ओर पलटे।

मैं अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से उसके अच्छे नामों और उच्च गुणों (सिफात) के वास्ते से दुआ करता हूँ कि वह इस काम को अपनी रज़ामन्दी के लिए खालिस बनाये, इस से मुझे मेरी ज़िन्दगी में और मेरे मरने के बाद (भी) लाभ पहुँचाए और जो भी इस किताब को पढ़े या छपवाए या इसके प्रकाशन का कारण बने इसे उसके लिए फायदामन्द बनाये। बेशक अल्लाह पाक ही इसका मालिक और इस पर क़ादिर है।

लेखक

दिनाँकः सफ़र १४०९ हिज्री

ज़िक्र की फ़ज़ीलत

अल्लाह तआला ने फरमाया

﴿فَٱذۡكُرُونِيٓ أَذۡكُرۡكُمۡ وَٱشۡكُرُواْ لِي وَلَا تَكۡفُرُونِ﴾. [البقرة: ١٥٢]

तुम मेरा ातंच करो मैं भी तुम्हें याद करुँगा और मेरा शुक्र करो और भकवज गपुपत्रमवज न करो।
(सूरा बक़रा: १५२)

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ ذِكۡرٗا كَثِيرٗا﴾ [الأحزاب: ٤١].

ऐ ईमान वालो अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करो।
(अह्ज़ाब ४१)

﴿وَٱلذَّٰكِرِينَ ٱللَّهَ كَثِيرٗا وَٱلذَّٰكِرَٰتِ أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُم مَّغۡفِرَةٗ وَأَجۡرًا عَظِيمٗا﴾ [الأحزاب: ٣٥].

अल्लाह को बहुत याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें अल्लाह ने उन के लिए बख़्शिश् और बहुत बड़ा बदला (पुण्य) तैयार कर रखा है।
(सूरा अह्जाब ३५)

﴿وَٱذۡكُر رَّبَّكَ فِي نَفۡسِكَ تَضَرُّعٗا وَخِيفَةٗ وَدُونَ ٱلۡجَهۡرِ مِنَ ٱلۡقَوۡلِ

بِٱلْغُدُوِّ وَٱلْآصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ ٱلْغَٰفِلِينَ ﴾ [الأعراف: ٢٠٥].

और अपने रब् को अपने मन में आजिज़ी और डर से बुलन्द आवाज़ के बिना सुबह़ व शाम याद कर और ग़ाफिलों में से मत् हो जा। (सूरा आराफ: २०५)

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُ رَبَّهُ: مَثَلُ الحَيِّ وَالمَيِّتِ». (البخارى مع الفتح ٢٠٨/١١)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया: ((उस आदमी की मिसाल जो अपने रब को याद करता है और जो अपने रब को याद नहीं करता ज़िन्दा और मुर्दा की तरह् है।)) (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ११२२०८)

मुस्लिम की रिवायत में है:

وَقَالَ ﷺ: «مثل البيت الذي يذكر الله فيه والبيت الذي لا يذكر الله فيه مثل الحي والميت». (المسلم٥٣٩/١)

उस घर की मिसाल जिस में अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है और जिस घर में अल्लाह ज़िक्र नहीं किया जाता ज़िन्दा और मुर्दा की तरह है। (मुस्लिम १/५३६)

وَقَالَ ﷺ: «أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ أَعْمَالِكُمْ، وَأَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيكِكُمْ، وَأَرْفَعِهَا فِي دَرَجَاتِكُمْ، وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ إِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالوَرِقِ، وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ أَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ، فَتَضْرِبُوا أَعْنَاقَهُمْ، وَيَضْرِبُوا أَعْنَاقَكُمْ؟!»، قَالُوا: بَلَى، قال: «ذِكْرُ اللهِ تَعَالَى».

रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम् ने फरमाया: (क्या मैं तुम्हें वह काम न बताऊँ जो तुम्हारे सब कामों से बेहतर, चत्रभ्नपवक भपाथम मक ।गमख अि कि षये. तुम्हारे मर्तबा में सब से बुलन्द और तुम्हारे सोना चाँदी ख़र्च करने से बेहतर है और तुम्हारे लिए इस से भी बेहतर है कि तुम अपने दुश्मनों से मिलो तुम उनकी गर्दनें काटो और वे तुम्हारी गर्दनें काटें । सहाबा ने कहा क्यों नहीं जरुर बतलाईए । आप ने फरमाया अल्लाह तआला को याद करना । (अत७त्रिमिजी ५/४५९ इब्ने माजा २/१२४५ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३१६ और सहीह अत७त्रिमिजी ३/१३९)

وَقَالَ ﷺ: «يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي؛ فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي، وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي

مَلَإٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلَإٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً».

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है: ((मैं अपने बन्दे के उस गुमान के मुताबिक़ हूँ जो वह मेरे बारे में र खता है। और जब वह मुझे याद करता है तो मैं उस के साथ होता हूँ। यदि वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं उसे अपने दिल में याद करता हूँ और अगर वह किसी जमाअत् में मुझे याद कर ता है तो मैं उसे ऐसी जमाअत् में याद करता हूँ जो उस से बेहतर है और अगर वह एक बालिश्त मेरे क़रीब आए तो मैं एक हाथ उस के क़रीब आता हूँ और अगर वह एक हाथ मेरे क़रीब आए तो मैं दोनों हाथ फैलाने के बराबर उस के क़रीब आता हूँ और अगर वह चलकर मेरे पास आए तो मैं दौड़ कर उस के पास आता हूँ। (बुखारी ८/१७१ मुस्लिम ४/२०६१ और शब्द बुखारी के हैं)

وَعَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُسْرٍ ﷺ؛ أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ

شَرَائِعَ الإِسْلَامِ قَدْ كَثُرَتْ عَلَيَّ؛ فَأَخْبِرْنِي بِشَيْءٍ أَتَشَبَّثُ بِهِ، قَالَ: «لَا يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِنْ ذِكْرِ اللهِ».

और अब्दुल्लाह बिन बुस्र फरमाते हैं कि एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मुझ पर इस्लाम के अह्काम बहुत ज्यादा हो गए हैं। इस लिए आप मुझे कोई एक चीज़ बताएँ जिसे मैं मज़बूती के साथ पकड़ लूँ। आप ने फरमाया कि तेरी ज़बान हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर् रहे। (अतर्त्रिमिज़ी ५/४५८ इब्ने माजा २/१२४६ और देखिए सहीहुत र्त्रिमिज़ी ३/१३९ और सहीह इब्ने माजा २/३१७)

وَقَالَ ﷺ: «مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللهِ، فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ، وَالحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا؛ لَا أَقُولُ: ﴿الٓمٓ﴾ حَرْفٌ، وَلَكِنْ: أَلِفٌ حَرْفٌ، وَلَامٌ حَرْفٌ، وَمِيمٌ حَرْفٌ».

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया जो आदमी अल्लाह की किताब में से एक ह़र्फ (शब्द) पढ़े उस के लिए इस के बदले में,म गकमज ाभथचज नक खपक्व,म गकमज (मभ कि मभ) र्ला हत्रगप मव लज तपचज नक्ब मैं यह नहीं कहता कि

অলিফ্ লাম মীম এক হ़र्फ (शब्द) है बल्कि अलिफ् एक ह़र्फ है लाम एक ह़र्फ है और मीम एक ह़र्फ है । (त्रिमिज़ी ५/१७५ और देखिए सहीह त्रिमिजी ३२९, सह़ीहुल् जामिइस्सग़ीर ५/३४०)

وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ ﷺ، قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَنَحْنُ فِي الصُّفَّةِ، فَقَالَ: «أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنْ يَغْدُوَ كُلَّ يَوْمٍ إِلَى بُطْحَانَ، أَوْ إِلَى العَقِيقِ، فَيَأْتِيَ مِنْهُ بِنَاقَتَيْنِ كَوْمَاوَيْنِ فِي غَيْرِ إِثْمٍ وَلَا قَطِيعَةِ رَحِمٍ؟!»، فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ، نُحِبُّ ذَلِكَ، قَالَ: «أَفَلَا يَغْدُو أَحَدُكُمْ إِلَى المَسْجِدِ؛ فَيَعْلَمَ -أَوْ يَقْرَأَ- آيَتَيْنِ مِنْ كِتَابِ اللهِ ﷻ خَيْرٌ لَهُ مِنْ نَاقَتَيْنِ، وَثَلَاثٌ خَيْرٌ لَهُ مِنْ ثَلَاثٍ، وَأَرْبَعٌ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَرْبَعٍ، وَمِنْ أَعْدَادِهِنَّ مِنَ الإِبِلِ؟!».

उक़्बा बिन् आ़मिर (ﷺ) फरमाते हैं कि हम सुफ्फा में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् घर से निकले और फरमाया ((तुम में से कौन है जिसे यह पसन्द हो कि हर दिन बुत्हान या अ़क़ीक़ वादी की ओर जाए और वहाँ से बड़ी बड़ी कौहानों वाली दो ऊँटनियाँ लेकर आए और उसे उस में न कोई गुनाह हो और न रिश्तों नातों को तोड़ना ।)) हम ने

कहा ऐ अल्लाह के रसूल हम सभी लोग यह पसन्द करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया तो तुम में से कोई मस्जिद में क्यों नहीं जाता ताकि अल्लाह की किताब की दो आयतें सीखे या पढ़े, यह उस के लिए दो ऊँटनियों से बेहतर हैं, तीन आयतें हों तो तीन ऊँटनियों से बेहतर हैं और चार आयतें चार ऊँटनियों से, इसी प्रकार जितनी आयतें हों उतने ऊँटों से बेहतर हैं। (मुस्लिम १/५५३)

وَقَالَ ﷺ: «مَنْ قَعَدَ مَقْعَدًا لَمْ يَذْكُرِ اللهَ فِيهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللهِ تِرَةٌ، وَمَنِ اضْطَجَعَ مَضْجَعًا لَمْ يَذْكُرِ اللهَ فِيهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللهِ تِرَةٌ».

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया जो शख्स किसी ऐसी जगह बैठा जिस में उस ने अल्लाह को याद न किया तो वह अल्लाह की तरफ् से उस के लिए नुक्सान का सबब होगी और जो शख्स किसी जगह लेटा जिस में उस ने अल्लाह को याद न किया तो वह (लेटना) उस के लिए अल्लाह की ओर से नुकसानदेह साबित होगा। (अबूदाऊद ४/२६४आदि और देखिए सहीहुल् जामिअ् ५/३४२)

وَقَالَ ﷺ: «مَا جَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِسًا لَمْ يَذْكُرُوا اللهَ فِيهِ، وَلَمْ يُصَلُّوا عَلَى نَبِيِّهِمْ: إِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ تِرَةً؛ فَإِنْ شَاءَ عَذَّبَهُمْ، وَإِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهُمْ».

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमायाः ((जब कोई क़ौम किसी मजलिस में बैठे और उस जगह अल्लाह को याद न करे और अपने नबी पर दरुद न पढ़े तो ऐसी मजलिस उन के लिए नुकसानदेह साबित होगी। फिर अगर अल्लाह चाहे तो ऐसी क़ौम को अज़ाब दे या उन्हें माफ कर दे।)) (त्रिमिज़ी और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४०)

وَقَالَ ﷺ: «مَا مِنْ قَوْمٍ يَقُومُونَ مِنْ مَجْلِسٍ لَا يَذْكُرُونَ اللهَ فِيهِ إِلَّا قَامُوا عَنْ مِثْلِ جِيفَةِ حِمَارٍ، وَكَانَ لَهُمْ حَسْرَةً».

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमायाः ((जब कोई क़ौम ऐसी मजलिस से उठती है जिस में उन्हों ने अल्लाह का ज़िक्र न किया हो तो वह गदहे की (बद्बूदार) लाश जैसी चीजं से उठती है और वह मजलिस उन के लिए नविच य गलपभच मप मपवाप होगी।)) (अबूदाऊद ४/२६४, मुस्नद् अह्मद् २/३८९ और देखिए सहीहुल् जामिअ् ५/१७६)

1 নীंद से जागने के बाद की दुआ़एं

1-(1) «الحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَمَا أَمَاتَنَا، وَإِلَيْهِ النُّشُورُ».

सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें मारने के बाद ज़िन्दा किया और उसी की तरफ़ उठकर जाना है। (बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ११/११३, मुस्लिम ४/२०८३)

2-(2) «لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَالحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ العَلِيِّ العَظِيمِ، رَبِّ اغْفِرْ لِي».

अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। अल्लाह पाक है और सब तारीफ अल्लाह के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है और बुलन्दी और अज़्मत् वाले अल्लाह की

मदद् के बिना न किसी चीज़ से बचने की ताकत है और न कुछ करने की कुव्वत। ऐ मेरे रब मुझे बख्श दे। (जो आदमी रात को किसी भी समय जागे और जागने के बाद यह दुआ पढ़े तो उसे बख़्श दिया जाता है, फिर यदि कोई दुआ करे तो उस की दुआ क़बूल होती है, फिर यदि उठ खड़ा हो वुज़ू करे और नमाज़ पढ़े तो उस की नमाज़ क़बूल होती है। बुखारी फत्हुल्बारी के साथ ३/३९, शब्द इब्ने माजा के हैं देखिए सहीह इब्ने माजा २२३३५)

3-(3) «الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي فِي جَسَدِي، وَرَدَّ عَلَيَّ رُوحِي، وَأَذِنَ لِي بِذِكْرِهِ».

सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने मेरे बदन् को हर किस्म की बीमारियों से पाक रखा और मेरी जान को मेरे बदन् में लौटा दी और मुझे अपने ज़िक्र की इजाजत दी। (त्रिमिज़ी ५/४७३ और सही त्रिमिजी ३/१४४)

4-(4) ﴿إِنَّ فِي خَلْقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَٱخْتِلَٰفِ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ لَءَايَٰتٍ لِّأُو۟لِى ٱلْأَلْبَٰبِ ﴿١٩٠﴾ ٱلَّذِينَ يَذْكُرُونَ ٱللَّهَ قِيَٰمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَٰذَا بَٰطِلًا سُبْحَٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ ﴿١٩١﴾ رَبَّنَآ إِنَّكَ مَن تُدْخِلِ ٱلنَّارَ فَقَدْ

أَخْزَيْتَهُۥ ۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿١٩٢﴾ رَّبَّنَآ إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِى
لِلْإِيمَٰنِ أَنْ ءَامِنُوا۟ بِرَبِّكُمْ فَـَٔامَنَّا ۚ رَبَّنَا فَٱغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا
سَيِّـَٔاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ ٱلْأَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾ رَبَّنَا وَءَاتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ
وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ ٱلْمِيعَادَ ﴿١٩٤﴾ فَٱسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ
أَنِّى لَآ أُضِيعُ عَمَلَ عَٰمِلٍ مِّنكُم مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ ۖ بَعْضُكُم مِّنۢ بَعْضٍ ۖ
فَٱلَّذِينَ هَاجَرُوا۟ وَأُخْرِجُوا۟ مِن دِيَٰرِهِمْ وَأُوذُوا۟ فِى سَبِيلِى وَقَٰتَلُوا۟
وَقُتِلُوا۟ لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّـَٔاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن
تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ ثَوَابًا مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ عِندَهُۥ حُسْنُ ٱلثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا
يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فِى ٱلْبِلَٰدِ ﴿١٩٦﴾ مَتَٰعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَىٰهُمْ
جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ ٱلْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لَٰكِنِ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّٰتٌ تَجْرِى
مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ ۗ وَمَا عِندَ ٱللَّهِ خَيْرٌ
لِّلْأَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ لَمَن يُؤْمِنُ بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ
إِلَيْكُمْ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَٰشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ ثَمَنًا
قَلِيلًا ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ سَرِيعُ
ٱلْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱصْبِرُوا۟ وَصَابِرُوا۟ وَرَابِطُوا۟
وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾

बेशक् आसमानों और ज़मीन की पैदाइश् और रात दिन के हेरञ्तकव में अक़्ल् वालों के लिए निशानियाँ

हैं। जो खड़े, बैठे, और लेटे हर हालत् में अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और ज़मीन की पैदाइश् में सोचञयउपव मवचक हैं और कहते हैं ऐ हमारे रब तूने इन्हें बेमक़्सद नहीं पैदा किया है। तू पाक है अत: हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले। ऐ हमारे रब जिसको तू ने जहन्नम् में डाला तो अवश्य उसे तू ने रुसवा किया और ज़ालिमों का कोई मदद्गार नहीं। ऐ हमारे रब हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान के लिए पुकार रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आए। ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को माफ फरमा दे और हमारे गुनाहों को हम से मिटा दे और मरने के बाद हमें नेक बन्दों के साथ कर दे। ऐ हमारे रब तूने जिन जिन चीज़ों के बारे में हम से अपने पैग़म्बरों के ज़बानी वादे किए हैं वह हमें अता कर और क़ियामत् के दिन हमें रुसवा न करना। इस में कुछ शक् नहीं कि तू वादा ख़िलाफी नहीं करता। चुनांचे उनके रब ने उनकी दुआ क़बूल कर ली कि तुम में से किसी काम करने वाले के काम को चाहे वह मर्द हो या औरत मैं कभी नष्ट नहीं करता, तुम

আপস में,क दूसरे से हो, इसलिए वह लोग जिन्हों ने हिज्रत की और अपने घरों से निकाल दिये गये और जिन्हें मेरी राह में कष्ट दी गई और जिन्हों ने जिहाद किया और शहीद किए गए, मैं अवश्य उनकी बुराईयाँ उनसे दूर कर दूँगा और अवश्य उन्हें उन जन्नतों में ले जाऊँगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, यह है सवाब .पुण्यऋ अल्लाह की ओर से और अल्लाह ही के पास बेहतरीन बदला है। तुझे काफिरों का नगरों में चलना फिरना धोखे में न डाल दे। यह तो बहुत ही थोड़ा लाभ है, उसके बाद उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा स्थान है। लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे उनके लिए जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, उन में वह हमेशा रहें गे यह मेहमानी है अल्लाह की ओर से और नेक लोगों के लिए जो कुछ अल्लाह तआला के पास है वह बहुत ही बेहतर है। अवश्य अहले किताब में से कुछ,से भी हैं जो अल्लाह तआला पर ईमान लाते हैं और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है और उनकी ओर जो उतरा उस पर भी, अल्लाह तआला से डरते हैं और अल्लाह तआला की आयतों को थोड़ी-थोड़ी क़ीमत पर बेचते भी नहीं, उनका बदला उनके रब के

पास है, निःसन्देह अल्लाह तआला जल्द हिसाब लेने वाला है।, ईमान वालो! तुम डटे रहो और,क दूसरे को थामे रखो और जिहाद के लिए तैयार रहो और अल्लाह तआला से डरते रहो ताकि तुम कामयाब हो। (आल इम्रानः१६०-२००ऋ) (बुख़ारी फत्हुल् बारी के साथ ८/२३७, मुस्लिम १/५३०)

2 कपड़ा पहनने की दुआ

5-«الحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي كَسَانِي هَذَا (الثَّوْبَ)، وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلَا قُوَّةٍ...».

सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे यह (कपड़ा) पहनाया और मेरी किसी ताक़त् के बग़ैर मुझे अता किया। (अबूदाऊद, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा और देखिए इर्वाउल् ग़लील् ७/४७)

3 नया कपड़ा पहनने की दुआ

6-«اللّٰهُمَّ لَكَ الحَمْدُ؛ أَنْتَ كَسَوْتَنِيهِ، أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِهِ وَخَيْرِ مَا صُنِعَ لَهُ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ».

ऐ अल्लाह तेरे ही लिए तारीफ है तू ने मुझे यह पहनाया, मैं तुझ से इस की भलाई और जिस चीज़ के लिए इसे बनाया गया है उस की भलाई चाहता हूँ। और इस की बुराई से और जिस चीज़ के लिए इसे बनाया गया है उस की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। (अबूदाऊद,त्रिमिजी, बग़वी और देखिए शैख़ अल् बानी (रहि) की किताब मुख़्तसर शमाइल त्रिमिजी पृष्ठ ४७)

4 नया कपड़ा पहनने वाले के लिए दुआ

7-(1) «تُبْلِي وَيُخْلِفُ اللهُ تَعَالَى».

तू इसे पुराना करे और अल्लाह तआला इस के बाद और ज्यादा कपडें अता करे। (अबूदाऊद ४/४१, देखिए सहीह अबू दाऊद २२७६०)

8-(2) «البَسْ جَدِيدًا، وَعِشْ حَمِيدًا، وَمُتْ شَهِيدًا».

नया कपड़ा पहन्, तारीफ वाली ज़िन्दगी गुज़ार और शहीद हो के मर। (इब्ने माजा २/११७८ बग़वी १२/४१ और देखिए सही इब्ने माजा २/२७५)

5 कपड़ा उतारे तो क्या पढ़े ?

9-«بِاسْمِ اللهِ».

अल्लाह के नाम के साथ। (त्रिमिजी २/५०५ सहीहुल् जामिअ् ३/२०३ और देखिए अल्इर्वा हदीस न०–४९)

6 बैतुलऽखला (शौचालय) में दाख़िल् होने की दुआ

10-«[بِاسْمِ اللهِ]، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الخُبُثِ وَالخَبَائِثِ».

[अल्लाह के नाम से] ऐ अल्लाह मैं ख़बीसों और ख़बीसनियों (नर और मादा शैतानों) से तेरी पनाह चाहता हूँ। (बुखारी १/४५ मुस्लिम १/२८३ शुरु में बिस्मिल्लाह की वृद्धि सुनन् सअीद बिन् मन्सूर में है। देखिए फत्हुल्बारी १/२४४)

7 बैतुलऽखला (शौचालय) से निकलने की दुआ

11-«غُفْرَانَكَ».

ऐ अल्लाह मैं) तेरी बख़्शिश् माँगता हूँ। (त्रिमिजी, अबूदाऊद, इब्ने माजा, अमलुल यौम वल७लैला नसाई, देखिए तखरीज जांदुल मआद २२३८७९

८ वुज़ू से पहले की दुआ

12- «بِاسْمِ اللّٰهِ»

अल्लाह के नाम से शुरु करता हूँ। (अबूदाऊद, इब्ने माजा, मुस्नद् अह्मद्, देखिए इर्वाउल गलील १२१२२)

९ वुज़ू से फारिग् होने के बाद की दुआ

13-(1) «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ...».

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई मा्बूद नहीं। वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुह़म्मद ﷺ उस के बन्दे और रसूल हैं। (मुस्लिम १२२०९)

14-(2) «اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ، وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ».

ऐ अल्लाह मुझे बहुत अधिक तौबा करने वालों में से बना दे और मुझे पाक साफ रहने वालों में से बना दे । (त्रिमिजी १/७८और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी १/१८)

15-(3) «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ».

ऐ अल्लाह तू हर ऐब से पाक है और तेरे ही लिए सब तारीफ है । मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा को ई सच्चा मा्बूद नहीं । मैं तुझ से माफी चाहता हूँ और तुझ ही से तौबा करता हूँ । (इमाम नसाई की किताब अमलुल् यौमि वल्लैला पृष्ठ १७३ और देखिए इर्वाउल् गलील १/१३५ तथा २/९४)

10 घर से निकलते समय की दुआ

16-(1) «بِاسْمِ اللهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ».

अल्लाह के नाम से । मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया और अल्लाह की मदद् के बिना न किसी चीज़ से बचने

की हिम्मत है न कुछ करने की ताक़त। (अबूदाऊद ४/३२५, त्रिमिजी ५/४९० देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५१)

17-(2) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَضِلَّ أَوْ أُضَلَّ، أَوْ أَزِلَّ أَوْ أُزَلَّ، أَوْ أَظْلِمَ أَوْ أُظْلَمَ، أَوْ أَجْهَلَ أَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ».

ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस बात से कि गुमराह हो जाऊँ या मुझे गुमराह किया जाए या मैं फिसल् जाऊँ या मुझे फिसलाया जाए या मैं किसी पर जुल्म करुँ या कोई मुझ पर जुल्म करे या मैं किसी पर जिहालत् व नादानी करुँ या कोई मुझ पर जिहालत् व नादानी करे। (अबूदाऊद, त्रिमिजी, निसाई, इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५२ और सहीह इब्ने माजा २/३३६)

11 घर में दाख़िल् होते समय की दुआ

18-«بِاسْمِ اللهِ وَلَجْنَا، وَبِاسْمِ اللهِ خَرَجْنَا، وَعَلَى اللهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا، ثُمَّ لْيُسَلِّمْ عَلَى أَهْلِهِ».

अल्लाह के नाम से हम दाख़िल् हुए, अल्लाह के नाम के साथ निकले और अपने रब अल्लाह ही पर हम ने भरोसा किया। फिर वह अपने घर वालों को सलाम करे। (अबूदाऊद ४/३२५, खथ्थपभप दऋगक अपतं गक चपकनत्तचत्रथ खृसपव भकब दा मज गिल मपक नगि मनप नके लकापसक ष्ञूद्य दृडे खपक्व निजन भत्राीथभ भकब नक ।म५ ६६ तअ खपलभज खषाक रुपव भकब लपाृपथ नपकचक भिस खपक्व॒पपगप॒पपचक भिस खथ्थपन मप ।तंमश मवचप नक चपक ुपक्चपग मनचप नक चत्रभ्नपवक ।थ, वपच ।अचपगक मज तहन नक ग॒पपगप८८ब भत्राीथभ दृण्ज्ञड)

12 मस्जिद की तरफ़् जाने की दुआ

19-«اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي لِسَانِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَمِنْ فَوْقِي نُورًا، وَمِنْ تَحْتِي نُورًا، وَعَنْ يَمِينِي نُورًا، وَعَنْ شِمَالِي نُورًا، وَمِنْ أَمَامِي نُورًا، وَمِنْ خَلْفِي نُورًا، وَاجْعَلْ فِي نَفْسِي نُورًا، وَأَعْظِمْ لِي نُورًا، وَعَظِّمْ لِي نُورًا، وَاجْعَلْ لِي نُورًا، وَاجْعَلْنِي نُورًا، اللَّهُمَّ أَعْطِنِي نُورًا، وَاجْعَلْ فِي عَصَبِي نُورًا، وَفِي لَحْمِي نُورًا، وَفِي دَمِي نُورًا، وَفِي شَعْرِي نُورًا، وَفِي بَشَرِي نُورًا» [«اللَّهُمَّ اجْعَلْ لِي نُورًا فِي قَبْرِي... وَنُورًا فِي عِظَامِي»] [«وَزِدْنِي نُورًا، وَزِدْنِي نُورًا، وَزِدْنِي نُورًا»] [«وَهَبْ لِي نُورًا عَلَى نُورٍ»]

ऐ अल्लाह मेरे दिल् में नूर बना दे और मेरी ज़बान में नूर बना दे और मेरे कानों में नूर बना दे और मेरी आँखों में नूर बना दे और मेरे ऊपर नूर बना दे और मेरे नीचे नूर बना दे और मेरे दाएँ और बाएँ नूर बना दे और मेरे आगे और पीछे नूर बना दे और मेरे प्राण में नूर भर दे और मेरे लिए नूर को विशाल और बहुत अधिक बड़ा बना दे और मेरे बदन में नूर भर दे और मुझे नूर बना दे। ऐ अल्लाह मुझे नूर अता कर और मेरी माँसपेशियों (पट्ठों) में नूर भर दे और मेरे गोश्त में नूर भर दे और मेरे खून में नूर पैदा कर दे और मेरे बालों में नूर बना दे और मेरे चमड़े में नूर भर दे। (बुख़ारी ११२११६ हदीस न०– ६३१६, मुस्लिम १२५२६, ५२९, ५३०, हदीस न०–७६३)

{ऐ अल्लाह मेरी क़ब्र में मेरे लिए नूर बना दे और मेरी हड्डियों में भी नूर बना दे।} (त्रिमिज़ी हदीस न (३४१९, ५/४८३)

{और मेरे नूर को बढ़ा दे, मेरे नूर को अधिक कर दे और मेरे नूर को बढ़ा दे।} (इसे इमाम बुखारी ने अदबुल-मुफ़्रद हदीस न.६९५, पृष्ठ न.२५८ में रिवायत किया है,

और अल्लामा अलबानी ने सहीहुल अदबिल-मुफरद हदीस न.५३६ में इसकी सनद को सहीह कहा है)

{और मुझे नूर पर नूर अता कर।} (इसे इब्ने हज्र ने फत्हुल बारी में ज़िक्र किया है और इब्ने आसिम की तरफ मन्सूब किया है कि उन्हों ने इसे किताबुद-दुआ में ज़िक्र किया है, देखिए फत्हुलबारी ११/११८ और कहा है कि मुख्तलिफ रिवायतों से (२५) चीज़ें जमा हो गईं।)

13 मस्जिद में दाखिल् होने की दुआ

16-(1) «أَعُوذُ بِاللهِ العَظِيمِ، وَبِوَجْهِهِ الكَرِيمِ، وَسُلْطَانِهِ القَدِيمِ، مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ» [بِاسْمِ اللهِ، وَالصَّلَاةُ] [وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللهِ]، «اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ».

मैं अज़्मत् वाले अल्लाह की और उस के करीम चहरे की और उस के हमेशा से रहने वाले राज्य की पनाह चाहता हूँ मर्दूद शैतान से। अल्लाह के नाम से (दाखिल् होता हूँ) और रसूलुल्लाह ﷺ पर दरुद व सलाम हो। ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी रह्मत् के दरवाज़े खोल दे। ((१) अबूदाऊद देखिए सहीहुल्

জামিअ् ह़दीस न०–४५९१ (२) इबनुस्सुन्नी ह़दीस न०–८८ शैख़ अल्बानी (रहि) ने इसे ह़सन् कहा है। (३) अबूदाऊद १/१२६ देखिए सह़ीहुल् जामिअ् १/५२८ (४) मुस्लिम १/४९४)

सुनन इब्ने माजा में फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस में है:

«اللَّهُمَّ اغفر لي ذنوبي وافتح لي أبواب رحمتك».

''ऐ अल्लाह तू मेरे गुनाहों को बख्श दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।'' अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को इसके शवाहिद की बिना पर सहीह कहा है। (देखिए सहीह इब्ने माजा १/१२८-१२९)

14 मस्जिद से निकलने की दुआ

16-(1) «بِاسْمِ اللهِ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللهِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ، اللَّهُمَّ اعْصِمْنِي مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ».

अल्लाह के नाम के साथ और सलात व सलाम नाज़िल् हो रसूलुल्लाह ﷺ पर। ऐ अल्लाह मैं तुझ

से तेरे फज्ल का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह मुझे मर्दूद शैतान से बचा। (पिछली हदीस न.२० की रिवायतों के हवाले देखिए और "اَللّٰهُمَّ اعْصِمْنِيْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ" ८८ मप दतंपत्तप दत्र्मृगक भपतप गक ।मसप नक्ब देखिए सहीह इब्ने माजा १/१२९)

15 अज़ान की दुआएँ

22-(1) मोअज़्ज़िन के जवाब में वही कलिमा कहे जो मोअज़्ज़िन् कह रहा हो लेकिन ((हैया अलस्सलात)) और ((हैया अलल् फलाह)) के जवाब में ((ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह)) कहे। (बुख़ारी १/१५२ मुस्लिम १/२८८)

«لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ».

23-(2) मोअज़्ज़िन् के ((अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह और अशहदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह)) पढ़ने के बाद यह दुआ पढ़े:

«وَأَنَا أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ

وَرَسُولُهُ، رَضِيتُ بِاللهِ رَبًّا، وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولًا، وَبِالإِسْلَامِ دِينًا».

और मैं भी गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा को ई सच्चा माबूद नहीं। वह अकेला है उस का को ई शरीक नहीं और मोहम्मद ﷺ उस के बन्दे और रसूल हैं। मैं अल्लाह को अपना रब मानकर और मोहम्मद ﷺ को अपना रसूल मान कर और इस्लाम को अपना दीन मानकर राजी हूँ। (इब्ने खुजैमा १/२२० मुसिलम १/२९०)

24-(3) मोअज़्ज़िंन् के जवाब से फारिग् हो कर रसूलुल्लाह ﷺ पर सलात (दरुदे मसनून) पढ़े। (मुस्लिम १/२८८)

(4)-25 «اللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ، وَالصَّلَاةِ القَائِمَةِ، آتِ مُحَمَّدًا الوَسِيلَةَ وَالفَضِيلَةَ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدتَّهُ؛ [إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ المِيعَادَ]».

ऐ अल्लाह इस मुकम्मल् दावत् और क़ाईम् सलात के रब्। मुहम्मद ﷺ को वसीला और फज़ीलत् प्रदान कर और उन्हें उस मुक़ामे महमूद पर खड़ा कर जिस का तू ने उन से वादा किया है। बेशक्

तू वादा खिलाफी नहीं करता। (बुख़ारी १/१५२, दोनों कोस्ट के बीच के शब्द बैहक़ी के हैं, १२४१० इस की सनद् मपक शै ख़ बिन् बाज़ वानभनत्रथ्थपन गक तुह़्फतुल् अख़्यार ष्जूद्य घड भकब नगि मनप नक्ष)

26-(5) अज़ान और इक़ामत् (तक्बीर) के बीच अपने लिए दुआ करे क्योंकि उस समय दुआ नहीं रद् की जाती। (त्रिमिजी, अबूदाऊद, अहमद, देखिए इर्वाउल् ग़लील १/२६२)

16 नमाज़ शुरु करने की दुआएङ

अल्लाहु अक्बर् कह कर नमाज़ शुरु करे और इन दुआओं में से कोई दुआ पढ़े :

27-(1) «اللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالمَغْرِبِ، اللّٰهُمَّ نَقِّنِي مِنْ خَطَايَايَ كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، اللّٰهُمَّ اغْسِلْنِي مِنْ خَطَايَايَ بِالثَّلْجِ وَالمَاءِ وَالبَرَدِ».

ऐ अल्लाह मेरे और मेरे गुनाहों के बीच मशरिक़ और मग़रिब जितनी दूरी कर दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरे गुनाहों से इस तरह पाक व साफ कर दे जिस तरह सफेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ किया जाता

है । ऐ अल्लाह मुझे मेरे गुनाहों से बर्फ़, पानी और ओलों के साथ धो दे । (बुखारी १/१८१ मुस्लिम १/४१९)

(2)-28 «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ، وَتَعَالَى جَدُّكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ».

ऐ अल्लाह तू पाक है और हर किस्म की तारीफ सिर्फ तेरे ही लिए है । बाबरकत् है तेरा नाम और बुलन्द है तेरी शान और तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं । (अबूदाऊद, त्रिमिजी, नसाई, इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिज़ी १/७७ और सहीह इब्ने माजा १/१३५)

(3)-29 «وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ، إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ العَالَمِينَ، لَا شَرِيكَ لَهُ، وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ، وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ. اللَّهُمَّ أَنْتَ المَلِكُ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَنْتَ رَبِّي وَأَنَا عَبْدُكَ، ظَلَمْتُ نَفْسِي، وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِي؛ فَاغْفِرْ لِي ذُنُوبِي جَمِيعًا؛ إِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ. وَاهْدِنِي لِأَحْسَنِ الأَخْلَاقِ؛ لَا يَهْدِي لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ، وَاصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا؛ لَا يَصْرِفُ عَنِّي سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ. لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ، وَالخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدَيْكَ، وَالشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ، أَنَا بِكَ وَإِلَيْكَ، تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ».

२९. मैं ने अपना चेहरा उस ज़ात की तरफ् फेर लिया ाता िगक खपभिपगपकब खपक्व तंभजग मपक अगपसप एक्सू (एकाग्रचित्) हो कर और मैं मुश्रि कों में से नहीं हूँ। मेरी नमाज़ मेरी कुरबानी, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह रब्बुल् आलमीन के लिए है। उस का कोई शरीक नहीं और मुझे इसी अक़ीदे पर ईमान रखने का हुक्म दिया गया है और मैं मुसलमानों में से हूँ। ऐ अल्लाह तू ही बादशाह है, तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, तू ही मेरा रब् है और मैं तेरा बन्दा हूँ मैं ने अपने आप पर ज़ुल्म किया है और अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ। इस लिए मेरे सारे गुनाहों को बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई और गुनाहों को नहीं बख़्श सकता। और मुझे सब से अच्छे अख़लाक़ (स्वभाव) की ओर हिदायत् दे और सब से अच्छे अख़लाक़ की ओर हिदायत् तेरे सिवा कोई नहीं दे सकता। ऐ अल्लाह मैं इबादत के लिए हाजिंर हूँ तेरी तारीफ के लिए हाजिंर हूँ और हर प्रकार की भलाई तेरे हाथों में है और बुराई की निसबत् तेरी तरफ् नहीं की जा सकती। मैं तेरी तौ फीक़ं से हूँ और तेरी ओर मुतवज्जेह हूँ, तू बरकत्

वाला और बुलन्द है। मैं तुझ् से माफी माँगता हूँ और तौबा करता हूँ। (मुस्लिम १/५३४)

30-(4) «اللَّهُمَّ رَبَّ جِبْرَائِيلَ وَمِيكَائِيلَ وَإِسْرَافِيلَ، فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، عَالِمَ الغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ؛ اهْدِنِي لِمَا اخْتُلِفَ فِيهِ مِنَ الحَقِّ بِإِذْنِكَ؛ إِنَّكَ تَهْدِي مَنْ تَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ».

ऐ अल्लाह १ ऐ जिब्राईल, मीकाईल और इस्राफील के रब् आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, ग़ायब् और ह़ाजिर को जानने वाले१ अपने बन्दों के बीच तू ही उस चीज़ के बारे में फैसिला करे गा जिस में वे इख़्तिलाफ करते थे। हक़् की जिन बातों में इख़्तिलाफ हो गया है तू अपनी इजाजत से मुझे सच्चाई की ओर हिदायत् दे दे। बेशक तू जिसे चाहता है सीधी राह की तरफ् हिदायत् देता है। (मुस्लिम १/५३४)

31-(5) «اللهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، اللهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، اللهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، وَالحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا، وَالحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا، وَالحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا، وَسُبْحَانَ اللهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا».

अल्लाह सब से बड़ा है बहुत् बड़ा, अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा, अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा, और हर किस्म की तारीफ सिर्फ अल्लाह के लिए है बहुत ज्यादा तारीफ, और हर किस्म की तार ीफ सिर्फ अल्लाह के लिए है बहुत ज्यादा तारीफ और हर किस्म की तारीफ सिर्फ अल्लाह के लिए है बहुत ज्यादा तारीफ और मैं सुबह् व शाम अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ। (इस दुआ को तीन बार पढ़े) मैं अल्लाह की पनाह पकड़ता हूँ शैतान से उसकी फूँक से,उस के थुक्थुकाने से और उस के चोके से। (यानी शैतान के दुर्भावना, मक्र व फरेब और वसवसा से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ)

(अबूदाऊद १/२०३, इब्ने माजा १/२६५, मुस्नद् अह् मद् ४/८५ और मुस्लिम ने इसे इब्ने उमर ﷺ से रिवायत् किया है कि एक मर्तबा हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक आदमी ने कहा:

((अल्लाहु अक्बर् कबीरा वल्हम्दुलिल्लाहि कसीरा व सुब्हानल्लाहि बुक्रतौं व असीला))

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया फलाँ फलाँ कलिमात

के साथ दुआ माँगने वाला कौन है ? हाजिर लोगों में से एक शख्स ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैं हूँ। आप ﷺ ने फरमाया मुझे इन कलिमात से तअ़ज्जुब् हुआ कि इन के लिए आसमान के दरवाज़े खोले गए। (मुस्लिम १/४२०)

रसूलुल्लाह भ जब रात को तहज्जुद् के लिए उठते तो यह दुआ पढ़ते :

32-(6) «اللَّهُمَّ لَكَ الحَمْد؛ أَنْتَ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الحَمْدُ؛ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، [وَلَكَ الحَمْدُ؛ أَنْتَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ]، [وَلَكَ الحَمْدُ، لَكَ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ]، [وَلَكَ الحَمْدُ؛ أَنْتَ مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ]، [وَلَكَ الحَمْدُ]؛ [أَنْتَ الحَقُّ، وَوَعْدُكَ الحَقُّ، وَقَوْلُكَ الحَقُّ، وَلِقَاؤُكَ الحَقُّ، وَالجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالنَّبِيُّونَ حَقٌّ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ]، [اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ، وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ، وَبِكَ خَاصَمْتُ، وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ؛ فَاغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ]؛ [أَنْتَ المُقَدِّمُ، وَأَنْتَ المُؤَخِّرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ]، [أَنْتَ إِلَهِي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ]».

ऐ अल्लाह तेरे लिए ही तारीफ है तू ही आसमानों और ज़मीन का नूर है और उन का भी (नूर है) जो उन में हैं और तेरे ही लिए सभी तारीफ है, तू ही आसमानों और ज़मीन को क़ाईम् रखने वाला है और उन को भी (क़ाईम् रखने वाला है) जो उन में हैं। और तेरे ही लिए हर किंस्म की तारीफ है तू ही आसमानों और ज़मीन का रब् है और उन का भी (रब है) जो उन में हैं। और तेरे ही लिए तारीफ है तेरे ही लिए आसमानों तथा ज़मीन की बादशाही है और जो कुछ उन में हैं। और तेरे ही लिए हर किंस्म की तारीफ है तू आसमानों तथा ज़मीन का बादशाह है। और हर किस्म की तारीफ केवल तेरे लिए है। चध नमं नके चकवप यपलप नमं नके चकवज अपच नमं नके तूझ से मुलाक़ात ह़क् है, जन्नत् ह़क् है और जहन्नम् ह़क् है और सारे पैग़म्बर ह़क् हैं और मुह़म्मद ﷺ भी ह़क् हैं और क़यामत् ह़क् है। ऐ अल्लाह मैं तेरे लिए मुसलमान हुआ और तुझ पर मैं ने भरोसा किया और तुझी पर मैं ईमान लाया और तेरी ही तरफ् रुजूअ् किया और तेरी मदद् तथा तेरे भरोसे पर मैं ने दुश्मन् से झगड़ा किया और

तुझ को अपना ह़ाकिम् माना। इस लिए मेरे वह गुनाह बख़्श दे जो मैं ने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैं ने छिपा कर किया और जो मैं ने जाहिर में किया। तू ही सब से पहले था और तू ही बाद में भी रहेगा तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। तू ही मेरा सच्चा माबूद है तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। (बुखारी फत्हुल्बारी के साथ ३२३, ११/११६, १३२३७१,४२३, ४६५ मुस्लिम् १/५३२)

17 रुकूअ् की दुआएँ

33-(1) «سُبْحَانَ رَبِّيَ العَظِيمِ».

मेरा बडा रब् पाक है। (तीन बार पढ़े) (अबूदाऊद, त्रिमिजी, नसाई, इब्ने माजा,अह्मद् और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी १/८३)

34-(2) «سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِي».

ऐ अल्लाह हमारे रब् तू पाक है। हर किस्म की तारीफ तेरे ही लिए है। ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे। (बुखारी १/ ९९ मुस्लिम १/३५०)

(3)-35 «سُبُّوحٌ، قُدُّوسٌ، رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ».

बहुत पाकीज़गी वाला, बहुत मुक़द्दस् है फरिश्तों तथा रुह़ (जिब्रील) का रब् । (मुस्लिम १/३५३, अबूदाऊद १/२३०)

(4)-36 «اللَّهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، خَشَعَ لَكَ سَمْعِي، وَبَصَرِي، وَمُخِّي، وَعَظْمِي، وَعَصَبِي، [وَمَا اسْتَقَلَّتْ بِهِ قَدَمِي]».

ऐ अल्लाह मैं तेरे ही लिए झुका (रुकूअ् किया) और तुझी पर ईमान लाया और तेरा ही फरमाञ्बरदार बना, और तेरे लिए विनीत हो गए (झुक् गए) मेरे कान, मेरी आँखें, मेरा मग़ज़, (भेजा) मेरी हड्डियाँ, मेरे पठ्ठे और (मेरा पूरा बदन) जिसे मेरे दोनों पैर उठाए हुए हैं । (मुस्लिम १/५३४, त्रिमिजी, नसाई, अबूदाऊद)

(5)-37 «سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ وَالْمَلَكُوتِ، وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ».

पाक है बहुत ज्यादा ताकत रखने वाला, बड़े मुल्क वाला और बड़ाई तथा अज्मत् वाला (अल्लाह) । (अबूदाऊद १/२३०, नसाई, अह्मद् खपक्व दमिज गिल नगि नक)

18 রুকূअ् से उठने की दुआएइ

38-(1) «سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ».

सुन ली अल्लाह ने जिस ने उस की तारीफ की।
(बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ २/२८२)

39-(2) «رَبَّنَا وَلَكَ الحَمْدُ، حَمْدًا كَثِيرًا، طَيِّبًا، مُبَارَكًا فِيهِ».

ऐ हमारे रब तेरे ही लिए तमाम तारीफ है, बहुत अधिक पाकीज़ा तारीफ जिस में बरकत् की गई हो।
(बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ २/२८४)

40-(3) «مِلْءَ السَّمَوَاتِ، وَمِلْءَ الأَرْضِ، وَمَا بَيْنَهُمَا، وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ. أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالمَجْدِ، أَحَقُّ مَا قَالَ العَبْدُ، وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ. اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الجَدِّ مِنْكَ الجَدُّ».

(ऐ हमारे रब) तेरे ही लिए तारीफ है आसमानों और ज़मीन भर और जो कुछ उन दोनों के बीच है उसके भर और इस के बाद जो तू चाहे उसके भर। तू तारीफ तथा बुज़ुर्गी वाला है। सब से सच्ची बात

जो बन्दे ने कही यह है ७ और हम सब तेरे बन्दे हैं ७ ऐ अल्लाह जो तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं, और किसी शान वाले को उस की शान तेरे यहाँ कोई फायदा नहीं पहुँचा सकती। (मुस्लिम १/३४६)

19 सज्दे की दुआएइ

(1)-41 «سُبْحَانَ رَبِّيَ الأَعْلَى».

मेरा महान रब् पाक है। (तीन बार पढ़े) (अबूदाऊद, त्रिमिजी, नसाई, इब्ने माजा, अह्मद और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी १/८३)

(2)-42 «سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِي».

पाक है तू ऐ अल्लाह ऐ हमारे रब् और हर किंस्म की तारीफ तेरे ही लिए है। ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे। (बुख़ारी १२९९, मुस्लिम १२३५०)

(3)-43 «سُبُّوحٌ، قُدُّوسٌ، رَبُّ المَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ».

बहुत ज्यादा पाक बहुत मुक़द्दस् है फरिश्तों तथा रुह़

(জিব্রীল) কা রব্ । (মুস্লিম ১/৩৫২, অবূদাঊদ ১/২৩০)

44-(4) «اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدتُّ، وَبِكَ آمَنْتُ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ، سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِي خَلَقَهُ، وَصَوَّرَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ، تَبَارَكَ اللهُ أَحْسَنُ الخَالِقِينَ».

ऐ अल्लाह मैं ने तेरे लिए ही सज्दा किया और तुझी पर ईमान लाया, तेरा ही फरमाँबरदार बना । मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए सजदा किया जिस ने उसे पैदा किया, उस की सूरत् बनाई और कानों में सूराख़ बनाए और आँखों के शिगाफ बनाए । बर्कत् वाला है अल्लाह जो तमाम बनाने वालों से अच्छा है । (मुस्लिम १/५३४)

45-(5) «سُبْحَانَ ذِي الجَبَرُوتِ وَالمَلَكُوتِ، وَالكِبْرِيَاءِ وَالعَظَمَةِ».

पाक है बहुत ज़्यादा ताक़त रखने वाला, बड़े मुल्क वाला और बड़ाई और अज़्मत् वाला (अल्लाह) । (अबूदाऊद १/२३०, नसाई, अह्मद् खपक्व खथअपगज गक दकि निजन खअध लपह्ल ज्ञ२ज्ञटट भकब निजन मनप नक्ब)

46-(6) «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي كُلَّهُ: دِقَّهُ وَجِلَّهُ، وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ، وَعَلَانِيَتَهُ وَسِرَّهُ».

ऐ अल्लाह मेरे छोटे,बड़े, पहले, पिछले, ज़ाहिर और पोशीदा तमाम गुनाहों को बख़्श दे । (मुस्लिम १२३५०)

47-(7) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ، لَا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ، أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ».

ऐ अल्लाह मैं तेरे गुस्से से तेरी रजां की पनाह चाहता हूँ और तेरी सज़ा से तेरी माफी की पनाह चाहता हूँ । और मैं तुझ से तेरी पनाह चाहता हूँ । मैं पूरी तरह तेरी तारीफ नहीं कर सकता । तू उसी तरह है जिस तरह तू ने खुद् अपनी तारीफ की है । (मुस्लिम १२३५२)

20 दो सजदों के बीच बैठने की दुआएँ

48-(1) «رَبِّ اغْفِرْ لِي، رَبِّ اغْفِرْ لِي».

ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे । ऐ मेरे रब् मुझे बख़्श दे । (अबूदाऊद १/२३१और देखिए सहीह इब्ने माजा १/१४८)

(2)-49 «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَاجْبُرْنِي، وَعَافِنِي، وَارْزُقْنِي، وَارْفَعْنِي».

ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे और मुझ् पर रहम कर और मुझे हिदायत् दे और मेरे नुक़्सान पूरे कर दे और मुझे आ़फियत् दे और मुझे रोज़ी दे और मुझे बुलंन्द कर। (अबूदाऊद, त्रिमिजी, इब्ने माजा और देखिए सह़ीह़ त्रिमिजी १/९०, सह़ीह़ इब्ने माजा १/१४८)

21 सजदा तिलावत् की दुआ

(1)-50 «سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِي خَلَقَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ؛ ﴿فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ﴾».

मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए सजदा किया जिस ने उसे पैदा किया,और अपनी ताक़त् व कुव्वत से उस के कान में सुराख़ और आँखों के शिगाफ बनाए। बहुत बरकत् वाला है अल्लाह जो सब बनाने वालों से अच्छा है। (त्रिमिजी २/४७४, अह्मद् ६/३० और ह़ाकिम् ने इसे रिवायत् करके सह़ीह़ कहा है और इमाम ज़ंहबी ने इस बात की पुष्टि की है १२२२० और ((फतबारकल्लाहु अह्सनुल् ख़ालिक़ीन)) शब्द की वृद्धि भी ह़ाकिम् की है।)

51-(2) «اللَّهُمَّ اكْتُبْ لِي بِهَا عِنْدَكَ أَجْرًا، وَضَعْ عَنِّي بِهَا وِزْرًا، وَاجْعَلْهَا لِي عِنْدَكَ ذُخْرًا، وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوُدَ».

ऐ अल्लाह इस सज्दे के बदले में मेरे लिए अपने पास सवाब लिख दे और इस के जरिये से मेरे ऊपर से गुनाहों का बोझ उतार दे और इसे मेरे लिए अपने पास नेकियों का खजांना बना दे और इसे मेरी तरफ् से इस तरह क़बूल कर ले जिस तरह् तूने अपने बन्दे दाऊद की ओर से क़बूल किया था। (त्रिमिज़ी २/४७३ और इमाम ह़ाकिम् ने इसे रिवायत् करके सह़ीह़ कहा है और इमाम ज़ह़बी ने इस की पुष्टि की है १२२१९)

22 तशह्हुद् की दुआ

52- «التَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ، وَالصَّلَوَاتُ، وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِينَ. أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ».

ज़बान, बदन् और माल के जरिये से की जाने वाली सारी इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी और अल्लाह की रह्मत् और उस

की बरकतें । सलाम हो हम पर और अल्लाह के ने क बन्दों पर । मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाईक् नहीं । और मैं गवाही देता हूँ कि मुहमम्द भ उस के बन्दे और उस के रसूल हैं । (बुखारी फत्हुल् बारी के साथ १/१३ और मुस्लिम् १/३०१)

23 तशह्हुद के बाद नबी भ पर दरुद

(1)-53 «اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ، وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ؛ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ؛ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ. اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ، وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ؛ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ؛ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ».

ऐ अल्लाह रहमत नाजिंल कर मुहम्मद ﷺ पर और मुहम्मद ﷺ की आल पर जिस तरह तू ने रहमत नाजिंल की इब्राहीम पर और इब्राहीम की औलाद पर, बेशक तू तारीफ वाला बुजुर्गी वाला है । ऐ अल्लाह बरकत् नाज़िल फरमा मुहम्मद ﷺ पर और मुहम्मद ﷺ की आल पर जिस तरह त ने बरकत्

नाज़िल् की इब्राहीम पर और इब्राहीम की औलाद पर बेशक तू तारीफ और बुजुर्गी वाला है। (बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ६/४०८)

(2)-54 «اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ، وَعَلَى أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ؛ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ. وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ، وَعَلَى أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ؛ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ؛ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ».

५४. ऐ अल्लाह रहमत नाजिंल कर मुहम्मद भ पर और आप भ की बीवियों तथा औलाद पर जिस तरह तू ने रहमत नाजिंल की इब्राहीम की औलाद पर। और बरकत् नाज़िल् फरमा मुहम्मद् भ पर और आप की बीवियों और औलाद पर जिस तरह बरकत् नाज़िल् की तू ने इब्राहीम की औलाद पर, बेशक तू तारीफ वाला बुजुर्गी वाला है। (बुखारी फत्हुल् बारी के साथ ६/४०७ और मुस्लिम १/३०६ शब्द मुस्लिम के हैं)

24 आख़िरी तशह्हुद् के बाद और सलाम फेरने से पहले की दुआएँ

(1)-55 «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ القَبْرِ، وَمِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ،

وَمِنْ فِتْنَةِ المَحْيَا وَالمَمَاتِ، وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ المَسِيحِ الدَّجَّالِ».

ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ क़ब्र के अज़ाब से और जहन्नम् के अज़ाब से और ज़िन्दगी तथा मौत के फित्ने से और मसीह़ दज्जाल के फित्ने की बुराई से। (बुखारी २/१०२ और मुस्लिम १/४१२, और शब्द मुस्लिम के हैं)

56-(2) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ القَبْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ المَسِيحِ الدَّجَّالِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ المَحْيَا وَالمَمَاتِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ المَأْثَمِ وَالمَغْرَمِ».

ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ क़ब्र के अज़ाब से और तेरी पनाह चाहता हूँ मसीह़ दज्जाल के फित्ने से और तेरी पनाह चाहता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फित्ने से। ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ गुनाह से और क़र्ज (ऋण) से। (बुख़ारी १/२०२ तथा मुस्लिम १/४१२)

57-(3) «اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا، وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ؛ فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي؛ إِنَّكَ أَنْتَ الغَفُورُ الرَّحِيمُ».

ऐ अल्लाह मैं ने अपनी जान पर बहुत जुल्म किया और तेरे सिवा कोई और गुनाहों को माफ नही कर

सकता। इस लिए मुझे अपने ख़ास फज़्ल से बख़्श दे और मुझ पर रहम कर। बेशक तू बख़्शने वाला बहुत ज्यादा रहम करने वाला है। (बुख़ारी ८/१६८ तथा मुस्लिम् ४/२०७८)

58-(4)«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ، وَمَا أَسْرَفْتُ، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي؛ أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ».

ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे जो मैं ने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैं ने छिपाकर किया और जो मैं ने जांहिर में किया और जो मैं ने ज्यादती की और जिसे तू मुझ से ज़्यादा जानता है। तू ही पहले करने वाला है तू ही पीछे करने वाला है। तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़् नहीं। (मुस्लिम १/५३४)

59-(5)«اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ، وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ».

ऐ अल्लाह अपनी याद, अपने शुक्र और अपनी अच्छी इबादत् पर मेरी मदद् फरमा। (अबूदाऊद २/८६ तथा नसाई ३/५३ खपक्व खथ्थपभप खथअपगज गक निजन खअध लपहृल ज्ञ२द्दडद्ध भकब दकि निजन मनप नक)

(6)-60 «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ البُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ العُمُرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا، وَعَذَابِ القَبْرِ».

ऐ अल्लाह मैं कन्जूसी से तेरी पनाह चाहता हूँ और बुज़्दिली से तेरी पनाह चाहता हूँ और इस बात से तेरी पनाह चाहता हूँ कि निकम्मी उम्र की तरफ लौटाया जाऊँ और मैं दुनिया के फित्ने और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। (बुख़ारी फत्हुल् बारी के साथ ६/३५)

(7)-61 «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الجَنَّةَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ».

ऐ अल्लाह मैं तुझ् से जन्नत् का सवाल करता हूँ और जहन्नम् से तेरी पनाह चाहता हूँ। (अबूदाऊद और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३२८)

(8)-62 «اللَّهُمَّ بِعِلْمِكَ الغَيْبَ، وَقُدْرَتِكَ عَلَى الخَلْقِ؛ أَحْيِنِي مَا عَلِمْتَ الحَيَاةَ خَيْرًا لِي، وَتَوَفَّنِي إِذَا عَلِمْتَ الوَفَاةَ خَيْرًا لِي. اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَشْيَتَكَ فِي الغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، وَأَسْأَلُكَ كَلِمَةَ الحَقِّ فِي الرِّضَا وَالغَضَبِ، وَأَسْأَلُكَ القَصْدَ فِي الغِنَى وَالفَقْرِ، وَأَسْأَلُكَ نَعِيمًا لَا يَنْفَدُ، وَأَسْأَلُكَ قُرَّةَ عَيْنٍ لَا تَنْقَطِعُ، وَأَسْأَلُكَ الرِّضَا بَعْدَ

القَضَاءِ، وَأَسْأَلُكَ بَرْدَ العَيْشِ بَعْدَ المَوْتِ، وَأَسْأَلُكَ لَذَّةَ النَّظَرِ إِلَى وَجْهِكَ، وَالشَّوْقَ إِلَى لِقَائِكَ، فِي غَيْرِ ضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ، وَلَا فِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ. اللَّهُمَّ زَيِّنَّا بِزِينَةِ الإِيمَانِ، وَاجْعَلْنَا هُدَاةً مُهْتَدِينَ».

ऐ अल्लाह मैं तेरे ग़ैब जानने और मख़लूक़ पर कुद्रत् रखने के साथ सवाल करता हूँ कि मुझे उस वक़्त तक ज़िन्दा रख् जब तक तू ज़िन्दगी मेरे लिए बेहतर जाने और मुझे उस वक़्त वफात दे जब वफात मेरे लिए बेहतर जाने। ऐ अल्लाह मैं ग़ाइब् और ह़ाजिर होने की ह़ालत् में तुझ से तेरे खौफ का सवाल करता हूँ और रजा तथा नाराजंगी हर ह़ालत में तुझ से ह़क़् बात कहने की तौफीक़ का सवाल करता हूँ और तुझ से अमीरी तथा ग़रीबी में मियाना रवी का सवाल करता हूँ और तुझ से ऐसी नेमत् का सवाल करता हूँ जो कभी भी खत्म न हो और आँखों की ऐसी ठंडक् का सवाल करता हूँ जो खत्म न हो और तुझ से तेरे फैसिले पर र ाज़ी रहने का सवाल करता हूँ और तुझ से मौत के बाद खुशगवार जिंदगी का सवाल करता हूँ और तुझ से तेरे चेहरे की तरफ देखने की लज़्जत् और

तेरी मुलाक़ात के शौक़ का सवाल करता हूँ बिना किसी तक्लीफदेह मुसीबत् और गुम्राह करने वाले फित्ने के। ऐ अल्लाह हमें ईमान की ज़ीनत् (शो भा) से मुजैंयन् फरमा और हमें हिदायत् याफता रहबर बना दे। (नसाई ३/५४, ५५ तथा अह्मद् ४/३६४ खपक्व खथ्थपभप खथअपगज गक निजन खगञगपिदश ज्ञ२द्दडज्ञ भकब दकि निजन मनप नक्ब)

63-(9) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ يَا أَللهُ بِأَنَّكَ الوَاحِدُ الأَحَدُ الصَّمَدُ، الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ: أَنْ تَغْفِرَ لِي ذُنُوبِي؛ إِنَّكَ أَنْتَ الغَفُورُ الرَّحِيمُ».

ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के जंरिये से कि तू अकेला, एक और बेनियाज़ है जिस ने न किसी को जना और न वह किसी से जना गया है और न ही उस का कोई शरीक है कि तू मेरे गुनाहों को माफ फरमा दे। बेशक तू ही बख़्शने वाला मेहरबान है। (नसाई शब्द के साथ ३/५२, अह्मद् ४/३३८ खपक्व खथ्थपभप खथअपगज गक निजन खगञगपिदश ज्ञ२द्दडण भकब दकि निजन मनप नक्ब)

64-(10) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الحَمْدَ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ

لَا شَرِيكَ لَكَ، المَنَّانُ، يَا بَدِيعَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، يَا ذَا الجَلَالِ وَالإِكْرَامِ، يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ؛ إِنِّي أَسْأَلُكَ الجَنَّةَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ».

ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के साथ कि हर किस्म की तारीफ तेरे ही लिए है, तेरे सिवा कोई इबादत् के लाइक् नहीं। तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं। बेह्द् इह्सान करने वाला। ऐ आसमानों तथा ज़मीन को बनाने वाले, ऐ बुजुर्गी तथा इज़्ज़त् वाले, ऐ ज़िन्दा और क़ाइम् रखने वाले मैं तुझ से जन्नत् का सवाल करता हूँ और आग से तेरी पनाह चाहता हूँ। (अबूदाऊद, नसाई, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा और देखिए सहीह् दऋगक भपतप द्द२घद्दढ)

65-(11) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنِّي أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، الأَحَدُ الصَّمَدُ، الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ».

ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के माध्यम से कि मैं गवाही देता हूँ कि तू ही अल्लाह है तेरे सिवा कोई अन्य इबादत् के लाइक् नहीं। तू अकेला है, बेनियाज़ है जिस से न कोई पैदा हुआ और न तो वह किसी से पैदा हुआ है और न ही कोई उस का हमसर (समकक्ष) है। (अबूदाऊद २/६२, त्रिमिज़ी

५/५१५, इब्ने माजा २/१२६४, अह्मद् ५/३६० और देखिए सहीह़ इब्ने माजा २/३२९ और सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१६३)

25 नमाज़ं से सलाम फेरने के बाद की दुआयें

66-(1) «أَسْتَغْفِرُ اللهَ». रतीन बा.

मैं अल्लाह से बख़्शिश् माँगता हूँ।

«اللّٰهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ، وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ يَا ذَا الجَلَالِ وَالإِكْرَامِ».

ऐ अल्लाह तू ही सलामती वाला है और तुझी से सलामती है। ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त् वाले तू बड़ी बरकत् वाला है। (मुस्लिम १/४१४)

67-(2) «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، اللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الجَدِّ مِنْكَ الجَدُّ».

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। उसी के लिए बादशाहत्

है, और उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है । ऐ अल्लाह जो कुछ तू दे उसको कोई रोकने वाला नहीं, और जिस चीज़ से तू रो क दे उसको कोई देने वाला नहीं और किसी दौलत् मन्द को उसकी दौलत् तेरे यहाइ कुछ फायदा नहीं दे सकती । (बुखारी १२२५५, मुस्लिम १२४१४)

68-(3) «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ، وَلَهُ الفَضْلُ، وَلَهُ الثَّنَاءُ الحَسَنُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ، وَلَوْ كَرِهَ الكَافِرُونَ».

अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाइक़् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । बादशाही उसी की है और उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर कुद्रत् रखने वाला है । न बचने की ताक़त् है न कुछ करने की ताक़त लेकिन अल्लाह की मदद् के साथ । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाइक़् नहीं । और उस के सिवा हम किसी की इबादत् नहीं करते । उसी के लिए नेमत् है और उसी के लिए फज़्ल और उसी के लिए अच्छी तारीफ है । अल्लाह

के सिवा कोई इबादत् के लाइक् नहीं । हम अपनी इबादत् उसी के लिए ख़ालिस् करते हैं चाहे काफिरों को बुरा ही लगे । (मुस्लिम १/४१५)

69-(4) «سُبْحَانَ اللهِ، وَالحَمْدُ لِلّٰهِ، وَاللهُ أَكْبَرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ».

अल्लाह पाक है, हर क़िस्म की तारीफ अल्लाह के लिए है और अललाह सब से बड़ा है। अल्लाह के सिवा को ई इबादत् के लाइक् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । बादशाही उसी की है और उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर कुद्रत् रखने वाला है । (मुस्लिम १/४१८, जो आदमी हर नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े उस के गुनाह माफ कर दिए जाते हैं चाहे वे समुद्र के झाग के बराबर हों ।)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدٌۢ﴾.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلْفَلَقِ ۝١ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِى ٱلْعُقَدِ ۝٤ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ﴾.

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ﴿قُلۡ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ۝١ مَلِكِ ٱلنَّاسِ ۝٢ إِلَٰهِ
ٱلنَّاسِ ۝٣ مِن شَرِّ ٱلۡوَسۡوَاسِ ٱلۡخَنَّاسِ ۝٤ ٱلَّذِي يُوَسۡوِسُ فِي
صُدُورِ ٱلنَّاسِ ۝٥ مِنَ ٱلۡجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ﴾

अल्ला के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत दयालू बड़ा रहम करने वाला है।

“आप कह दीजिए वह अल्लाहएक है, अल्लाह तआला बेनियाज़ है, न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है और न उसका कोई समकक्ष (हमसर) है”। (सूरतुल इख्लासः १-४)

“आप कह दीजिए कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है, और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाए। और गाँठ लगाकर उन में फूँकने वालियों की बुराई से और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे। (सूरतुल फलक़:१-५)

आप कह दीजिए कि मैं लोगों के रब, लोगों के मालि और लोगों के माबूद की पनाह में आता हूँ वस्वसा डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में वस्वसा डालता है .चाहेत्रः वह जिन्न में

से हो या मानव में से। (सूरतुन्नासः१-६) (अबूदाऊद २/८६, नसाई ३/६८ और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी २/८, दग चजगपकब धिवचपकब मपक भत्रखपक्षयतंपच मनप तपचप नके लकाृपसक त्तचञ्नत्रथ अपवज ढ२टद्द)

71-(1) हर नमाज़ के बाद आयतल् कुर्सी पढ़े :

﴿ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡحَيُّ ٱلۡقَيُّومُۚ لَا تَأۡخُذُهُۥ سِنَةٞ وَلَا نَوۡمٞۚ لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۗ مَن ذَا ٱلَّذِي يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦۚ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيۡءٖ مِّنۡ عِلۡمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَۚ وَسِعَ كُرۡسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفۡظُهُمَاۚ وَهُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡعَظِيمُ ﴾ [البقرة: ٢٥٥].

अल्लाह के सिवा कोई मा़बूद (पूजनीय) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है, सबको क़ाइम् रख्ने वाला है। उसको न ऊँघ आती है न नींद आसमान और जमीन की सब चीज़ें उसी की हैं। कौन है जो उस के पास किसी की सिफारिश् करे उसकी इजाज़त् के बग़ैर। वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है, और लोग उसके इल्म से कुछ नहीं घेर (मालूम) सक्ते मगर जितना अल्लाह चाहे, और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने

वुसअत् (घेरे) में ले रखा है। और उन दोनों की हि़फ़ाजत् उसको थका नहीं सकती और वह बुलन्द है अज़्मत् वाला है।)) (तपक खपलभज नव गभपतं मक अपल दकि ष्ंक ?कि तग्गाच भकब तपगाक कि भपक्च मक ाियिप मपकदश उजतं गनजब वपकमक हजब गापिदश खभथत्रथ सपक्भ यथ्थक्थन नलजा ग (ज्ञण्णे दक्ऋगक त्रिग्गज नलजा ग) ज्ञद्दज्ञे खथ्थपभप खथअपगज गक दकि निजनत्रथ तपाभख~ छ२घघढ खपक्व ाथिाथिप खनपलजा निजनप द्२टढठे नलजा ग(ढठद्द भकब निजन मनप नक्ब)

72-(7) «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، يُحْيِي وَيُمِيتُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ».

ठद्द(अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाइक् नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। बादशाही उसी की है और उसी के लिए सब तारीफ है, यन भपवचप खपक्व ातथपचप नवे और वह हर चीज़ पर कुद्रत् रखने वाला है।

दस बार मग़्रिब् और फज्र के बाद। (त्रिमिज़ी ५/५१५ अह्मद् ४/२२७, चृपवजत मक ाथ, तंपलत्रथ भखपल लकाृप, ज्ञ२घण्ण)

73-(8) «اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا، وَرِزْقًا طَيِّبًا، وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا».

ठघ(,क खथ्थपन भक्ब चत्रश्न कि थपज्प लकगक यपथक दथ्भे ष्पमजतंप वपकतंज खपक्व मंअधथ नपकगक यपथक खभथ मप यिपथ मवचप नधङ्ब

फज्र की नमाज़ से सलाम फेरने के बाद ऊपर बयान की गई दुआ पढ़ें। (इब्ने माजा और देखिए सह़ीह़ इब्ने माजा १/१५२, भतभ्फ़त्तंयपदल ज्ञण्२ज्ञज्ञज्ञ)

26 नमाज़े इस्तिख़ारा की दुआ

74-(1) जाबिर رضي الله عنه फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह भ हमें तमाम कामों में इस्तिख़ारा करने की तालीम देते जिस तरह हमें कुरआन की किसी सूरा की तालीम देते, आप फरमाते कि तुम में से कोई आदमी जब किसी काम का इरादा करे तो फर्ज़ के सिवा (गात्तथ मज ागसच कि) दो रक्अत नमाजं अदा करे फिर यह दुआ पढ़े :

«اللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ؛ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ، وَأَنْتَ

عَلَّامُ الغُيُوبِ، اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الأَمْرَ خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي -عَاجِلِهِ وَآجِلِهِ-، فَاقْدُرْهُ لِي، وَيَسِّرْهُ لِي، ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ، وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الأَمْرَ شَرٌّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي -عَاجِلِهِ وَآجِلِهِ-، فَاصْرِفْهُ عَنِّي، وَاصْرِفْنِي عَنْهُ، وَاقْدُرْ لِيَ الخَيْرَ حَيْثُ كَانَ، ثُمَّ أَرْضِنِي بِهِ».

ऐ अल्लाह मैं तेरे इल्म की मदद् से भलाई तलब् करता हूँ और तेरी कुद्रत् की मदद् से कुद्रत् (ताकत्) माँगता हूँ। और तुझ् से तेरा अज़ीम फज़्ल माँगता हूँ। बेशक् तू ही कुद्रत् रखता है। और मैं कुद्रत् नहीं रख्ता और तू ही जानता है और मैं नहीं जानता। और तू ही ग़ैबों (परोक्ष) का जानने वाला है। ऐ अल्लाह अगर तू जानता है कि यह काम (उस काम का नाम ले) मेरे लिए मेरे दीन और मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार में - या आप ﷺ ने कहा: इस दुनिया के लिए या आख़िरत के लिए - बेहतर है तो इस काम को मेरे लिए मुक़द्दर कर दे और इसको मेरे लिए आसान बना दे फिर मेरे लिए उसमें बरकत् दे। और अगर तू जानता है कि यह काम मेरे दीन और जिन्दगी और अन्जामे

कार - सप खपष ﷺ ने कहाः इस दुनिया के लिए या आख़िरत के लिए - बुरा है तो तू इस काम को मुझ् से फेर दे और मुझ को उस काम से फेर दे। और मेरे लिए भलाई मुकंद्दर कर दे वह जहाँ भी हो। फिर तू उस काम पर मुझे् राज़ी करदे। (बुखारी ७/१६२)

जो आदमी अल्लाह से इस्तिखारा करे, मोमिन बन्दे से मश्वरा करे और साबित क़दमी .स्थिरताऋ से काम करे उसे पछतावा नही होता। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَشَاوِرْهُمْ فِي ٱلْأَمْرِ ۖ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ﴾ [آل عمران:١٥٩].

और काम में उन से मश्वरा .परामर्श) कर लिया कीजिए, फिर जब पक्का इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें। (आल इम्रानः१५९)

27 सुबह् और शाम के अज़्कार

सभी तारीफ अल्लाह के लिए है जो अकेला है और दरूद व सलाम उस पर जिस के बाद कोई नबी नहीं। (अनस ﷺ बयान करते हैं कि नबी ﷺ ने फरमायाः

''मुझेऐसे लोगों के साथ बैठना इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतान में से चार ग़ुलामों को आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्द है जो फज्र की नमाज़ से सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करते हैं। मुझेऐसे लोगों के साथ बैठना चार ग़ुलाम आज़ाद करने से अधिक पसन्द है जो अस्र की नमाज़ से सूरज डूबने तक अल्लाह का ज़िक्र करें।'' अबू दाऊद हदीस न.३६६७, और ौख अलबानी ने इसे हसन कहा है, देखिए सहीह अबू दाऊद २/६६८)

75-(1) أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَىُّ ٱلْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۗ مَن ذَا ٱلَّذِى يَشْفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ ۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ ﴾ [البقرة:٢٥٥].

मैं धुत्कारे हुए ौतान से अल्लाह की पनाह में आता हूँ।

अल्लाह के सिवा कोई मा़बूद (पूजनीय) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है, सबको क़ाइम् रख्ने वाला

है । उसको न ऊँघ आती है न नींद, आसमान और जमीन की सब चीज़ें उसी की हैं । कौन है जो उस के पास किसी की सिफारिश् करे उसकी इजाज़त् के बग़ैर । वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है, और लोग उसके इल्म से कुछ नहीं घेर (मालूम) सक्ते मगर जितना अल्लाह चाहे, और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने वुसअत् (घेरे) में ले रखा है । और उन दोनों की हिफ़ाजंत् उसको थका नहीं सकती और वह बुलन्द है अज़्मत् वाला है ।)) (जो आदमी सुबह के वक्त आयतल् कुर्सी पढ़ ले तो वह शाम तक जिन्नों (के शर् व फित्ने) से महफूज़ हो जाता है और जो आदमी शाम के वक्त् पढ़ ले तो सुबह तक् जिन्नों (के शर्) से महफूज़ हो जाता है । हाकिम १/५६२, अलबानी ने सहीहुत-तरग़ीब वत-तरहीब १/२७३ में इसे सहीह कहा है और इसे नसाई और तबरानी की ओर मनसूब किया है और तबरानी की सनद को जैयिद कहा है)

(1)-75 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝١ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ﴾.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِن شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝٤ وَمِن

شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴾.

بسم الله الرحمن الرحيم ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ۝١ مَلِكِ ٱلنَّاسِ ۝٢ إِلَٰهِ ٱلنَّاسِ ۝٣ مِن شَرِّ ٱلْوَسْوَاسِ ٱلْخَنَّاسِ ۝٤ ٱلَّذِى يُوَسْوِسُ فِى صُدُورِ ٱلنَّاسِ ۝٥ مِنَ ٱلْجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ ﴾.

अल्ला के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत दयालू बड़ा रहम करने वाला है।

''आप कह दीजिए वह अल्लाहएक है, अल्लाह तआला बेनियाज़ है, न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है और न उसका कोई समकक्ष (हमसर) है''। (सूरतुल इख्लासः १-४)

''आप कह दीजिए कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है, और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाए। और गाँठ लगाकर उन में फूँकने वालियों की बुराई से और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे। (सूरतुल फलक़:१-५)

आप कह दीजिए कि मैं लोगों के रब, लोगों के मालि और लोगों के माबूद की पनाह में आता हूँ वस्वसा

डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में वस्वसा डालता है .चाहेऋ वह जिन्न में से हो या मानव में से। (सूरतुन्नासः१-६)

(जो आदमी ऊपर की तीनों सूरतें सुबह् के वक़्त् तीन बार और शाम के वक़्त् तीन बार पढ़ ले तो ये सूरतें उस के लिए हर चीज़ से काफी हैं। खअध लपहृल द्ध२घद्दद्दे त्रिमिज़ी ५२५६७, और देखिये सहीह् त्रिमिज़ी ३/१८२)

77-(3) «أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ المُلْكُ لِلّٰهِ، وَالحَمْدُ لِلّٰهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هَذَا اليَوْمِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِي هَذَا اليَوْمِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الكَسَلِ وَسُوءِ الكِبَرِ، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي القَبْرِ».

हम ने सुबह् की और अल्लाह के मुल्क ने सुबह् की[1] और सब तारीफ अल्लाह के लिए है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाइक् नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। उसी के लिए मुल्क है। और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर

1 ज्ञ और जब शाम के वक्त् पढ़े तो यह कहे : أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ

क़ादिर है। ऐ मेरे रब् आज के इस दिन में जो ख़ैर व भलाई है और जो इस दिन के बाद ख़ैर व भलाई है मैं तुझ से इस का सवाल करता हूँ।[1] और इस दिन के शर (बुराई) से और इस के बाद वाले दिन के शर् से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ मेरे रब् मैं सुस्ती और बुढ़ापे की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ मेरे रब् मैं जहन्नम के अज़ाब और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। (मुस्लिम ४/२०८८)

78-(4) «اللّٰهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ أَمْسَيْنَا، وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوتُ، وَإِلَيْكَ النُّشُورُ».

ऐ अल्लाह तेरे ही नाम से हम ने सुबह़ की और तेरे ही नाम से हम ने शाम की[2] और तेरे ही नाम से हम ज़िन्दा हैं और तेरा ही नाम लेते हुए हम मरेंगे और तेरी ही ओर लौट कर जाना है। (त्रिमिज़ी ५/४६६ और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१४२)

---

1 और जब शाम के समय पढ़े तो इस प्रकार कहे :

« رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِيْ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا وَ أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا».

2 और जब शाम के समय पढ़े तो इस प्रकार कहे :

«اَللّٰهُمَّ بِكَ أَمْسَيْنَا، وبِكَ أَصْبَحْنَا ، وَبِكَ نَحْيَا ، وَبِكَ نَمُوْتُ وَإِلَيْكَ المَصِيْرُ».

79-(5) «اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ بِذَنْبِي؛ فَاغْفِرْ لِي؛ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ».

ऐ अल्लाह तू ही मेरा रब् है । तेरे सिवा कोई इबादत् के लाइक़् नहीं । तू ने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं अपनी ताक़त् भर तेरे वादे पर क़ाइम् हूँ । मैं ने जो कुछ किया उस के शर् (बुराई) से तेरी पनाह चाहता हूँ । अपने ऊपर तेरी ने मत् का इक़्रार करता हूँ । और अपने गुनाहों का इक़्रार करता हूँ इस लिए मुझे बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई दूसरा गुनाहों को नहीं बख़्श सकता ।[1]

(बुख़ारी ७/१५०)

80-(6) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَصْبَحْتُ أُشْهِدُكَ، وَأُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ، وَمَلَائِكَتَكَ، وَجَمِيعَ خَلْقِكَ: أَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ».

1 द्ध जो आदमी इस दुआ पर यक़ीन रखते हुए शाम को पढ़े और उसी रात उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो ऐसा आदमी जन्नत में दाख़िल् होगा और ऐसे ही अगर यह दुआ सुबह् को पढ़े और उसी दिन मर जाए तो जन्नत में दाख़िल होगा । (बुख़ारी ७/१५०)

ऐ अल्लाह मैं ने इस ह़ाल में सुबह़ की[1] कि मैं तुझे गवाह बनाता हूँ और तेरा अर्श उठाने वालों को, तेरे फरिश्तों को और तेरी तमाम मख़्लूक़ को गवाह बनाता हूँ कि तू ही अल्लाह है। चकवक ायिप मपकदश एिउप भपअधल गनजबे तू अकेला है। तेरा कोई शरीक नहीं और बेशक़ मुह़म्मद ﷺ तेरे बन्दे और रसूल हैं।[2] (अबूदाऊद ४/३१७ और इमाम बुख़ारी (रहिमहुल्लाह) की किताब अल्७अद्बुल् मुफ़्रद् हदीस न. १२०१ नसाई की अमलुल-यौमि वल-लैला न.६, इब्नुस-सुन्नी न.७०, और शैख इब्ने बाज़ ने नसाई और अबू दाऊद की सनद को हसन कहा है, तुहफतुल-अख्यार पृष्ठः २३)

81-(7) «اللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ، فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ؛ فَلَكَ الحَمْدُ، وَلَكَ الشُّكْرُ».

ऐ अल्लाह मुझ पर या तेरी मख़्लूक़ में से किसी पर जिस नेमत् ने भी सुबह़ की है[3] वह केवल तेरी तरफ से है। तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं। इस

1 और जब शाम का समय हो तो यह कहे : «اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَمْسَيْتُ

2 ट जो आदमी यह दुआ सुबह़ या शाम चार बार पढ़े गा अल्लाह तआला उसको आग (जहन्नम) से आज़ाद कर देगा।

3 और जब शाम का समय हो तो यह कहे : «اللَّهُمَّ ما أمسى بي من نعمة ...»

लिए तेरे ही लिए सब तारीफ है और तेरे ही लिए शुक्र है। (जिस ने यह दुआ सुबह के समय पढ़ी तो उसने उस दिन का ुक्र अदा कर दिया और जिस ने यह दुआ शाम के समय पढ़ी उस ने उस रात का शुक्र अदा कर दिया। अबूदाऊद ४/३१८, गपिदश मज खभथत्रथ७सपक्षभ यथ७थक्थप ग(ठे दऋगत्रा७त्रिग्गज ग(द्धज्ञे दऋगक ।नऋअपग ६भयपावलद ग(द्दघटज्ञे शैख़ इब्ने बाज़ रहि़ ने इस की सनद् को ह़सन् कहा है। देखिए तुह़्फतुल् अख़् यार पृष्ठ :.२४)

82-(8) «اللّٰهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي، اللّٰهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي، اللّٰهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي؛ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ. اللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الكُفْرِ وَالفَقْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ القَبْرِ؛ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ».

तीन बार सुबह् और तीन बार शाम को पढ़ना चाहिए।

ऐ अल्लाह मुझे मेरे बदन् में आफियत् दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरे कानों में आफियत् दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरी आँखों में आफियत् दे। तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं। ऐ अल्लाह मैं कुफ्र और फक़्र (गरीबी) से तेरी पनाह चाहता हूँ और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। तेरे सिवा कोई इबादत् के

लाइक़ नहीं । (अबूदाऊद ४/३२४, अहमद् ५/४२, अमलुल्यौमि वल्लैला नसाई हदीस न०.२२, दऋगत्रिगज नलजा ग(टढे अत्रपपवज मज खलअत्रथ७भत्रत्तवल, दऋगक अपतं गक दमिज गिल मपक नगि मनप नवे चत्रनत्तचत्रथ खृसपव ष्जूद्य५ द्दट)

83-(9) «حَسْبِيَ اللهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ، وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ».

मुझे अल्लाह ही काफी है। उस के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया और वह अर्शे अज़ीम का रब् है। (जो आदमी इस दुआ को यजि 'धि यशंग"? बद्विध यजि 'धि कि`ि, ।६, नएि अल्लाह उसके लिए दुनिया और आखिरत के कामों के लिए काफी होगा। इब्नुस-सुन्नी हदीस न.७१, बंष्इचिउइ +इरु/!ए शुअैब और अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने इसकी सनद को सहीह कहा है। देखियेः ज़ादुल मआद २/३७६)

84-(10) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ. اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ، وَأَهْلِي وَمَالِي. اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي، وَآمِنْ رَوْعَاتِي. اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِي، وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي، وَمِنْ فَوْقِي، وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي»

ऐ अल्लाह मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत् में माफी और आफियत् का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह मैं अपने दीन, अपनी दुनिया, अपने खानदान और अपने माल में तुझ से माफी और आफियत् का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह मेरी परदा वाली चीज़ पर परदा डाल दे और मेरी घब्राहटों को सुकून में बदल् दे। ऐ अल्लाह मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरे दायें तरफ से, और मेरे बायें तरफ से और मेरे ऊपर से मेरी हिफाजत् कर और इस बात से मैं तेरी अज़्मत् की पनाह चाहता हूँ कि अचानक् अपने नीचे से हलाक किया जाऊँ। (अबूदाऊद, इब्ने माजा, देखिए सहीह इब्ने माजा २/२३२)

85-(11) «اللَّهُمَّ عَالِمَ الغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي، وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشَرَكِهِ، وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِي سُوءًا، أَوْ أَجُرَّهُ إِلَى مُسْلِمٍ».

ऐ अल्लाह ऐ ग़ैब तथा हाज़िर को जानने वाले, आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले, हर चीज़ के पालनहार और मालिक ! मैं गवाही देता हूँ कि

तेरे सिवा कोई इबादत के लायक् नहीं। मैं तेरी पनाह माँगता हूँ अपने नफस् के शर् से और शैतान के शर् और उस के शिर्क से और इस बात से कि मैं अपनी जान पर कोई बुराई करुँ या किसी और मुसलमान के लिए बुराई का कारण बनूँ। (त्रिमिज़ी, अबूदाऊद, और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१४२)

«بِاسْمِ اللهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ، وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ».

अल्लाह के नाम के साथ जिस के नाम के साथ ज़मीन और आसमान में कोई चीज़ नुक्सान नहीं पहुँचाती और वही सुनने वाला और जानने वाला है। (अबूदाऊद ४/३२३, त्रिमिज़ी ५/४६५, इब्ने माजा, अहमद और देखिए सह़ीह़ इब्नेमाजा २/३३२, दऋगक अपतं गक दमिज गिल मपक नगि मनप नके चत्रनञ्तचत्रथ खृसपव५घढ०)[1]

«رَضِيتُ بِاللهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيًّا».

मैं अल्लाह के रब् होने पर और इस्लाम के दीन होने

1 जो आदमी इस दुआ को सुबह़ और शाम तीन तीन बार पढ़े गा उसे कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकती।

पर और मुह़म्मद ﷺ के नबी होने में पर राज़ी हूँ ।[1] (मुसनद् अह़्मद् ४/३३७, अमलुल-यौमि वल-लैला 'नसाई' हदीस न.४, इब्नुस-सुन्नी हदीस न.६८, अबू दाऊद ४/३१८, सुसकी"स :झ+':ए इब्ने बाज़ ने इसकी सनद को हसन कहा है, तुह्फतुल अख्यार पृष्ठः ३६)

88-(14) «يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ، بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ، أَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ، وَلَا تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ».

ऐ ज़िन्दा रहने वाले ऐ क़ाइम् रखने वाले ! मैं तेरी ही रह्मत् से फरयाद करता हूँ तू मेरे तमाम काम दुरुस्त कर दे और आँख झपक्ने के बराबर भी मुझे मेरे गह्नि के ह़वाले न कर । (हाकिम ने इसे रिवायत करके सहीह कहा है और ज़ह्बी ने इसकी पुीष्ट की है १/५४५, देखिए सह़ीह़ तरग़ीब व तरहीब १/२७३)

89-(15) «أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلهِ رَبِّ العَالَمِينَ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذَا اليَوْمِ: فَتْحَهُ، وَنَصْرَهُ، وَنُورَهُ، وَبَرَكَتَهُ، وَهُدَاهُ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيهِ، وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ».

1 जो आदमी इस दुआ को तीन बार सुबह़ और तीन बार शाम को पढ़े गा, अल्लाह तआला उसे क़यामत् के दिन जंरुर खुश कर देगा ।

हम ने सुबह् की और अल्लाह रब्बुल् आलमीन के मुल्क ने सुबह् की। ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस दिन की भलाई, इस की फत्ह् व मदद् इस का नूर और इसकी बरकत् और इस की हिदायत् का सवाल कर ता हूँ और इस दिन की बुराई तथा इस के बाद वाले दिनों की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूँ। (अबूदाऊद ४/३२२ शुऐब और अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने इसकी सनद को हसन कहा है, ज़ादुल् मआद २/३७३)

(16)-90 «أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الإِسْلَامِ، وَعَلَى كَلِمَةِ الإِخْلَاصِ، وَعَلَى دِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ ﷺ، وَعَلَى مِلَّةِ أَبِينَا إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ».

हम ने फित्रते इस्लाम और कलिमये इख़्लास और अपने नबी मुहम्मद ﷺ के दीन और अपने बाप इब्राहीम की मिल्लत् पर सुबह्[1] की जो ह़नीफ व मुस्लिम थे और वह मुश्रिकों में से न थे। (अह्मद् ३/४०६, ४०७, इब्नुस-सुन्नी की अमलुल-यौमि वल-लैला ह़दीस न.३४, सह़ीहुल्जामिअ् ४/२०९)

(17)-91 «سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ».

1 खपक्व ॅपपभ मक भिस सन मनक ५ «... أمسينا على فطرة الإسلام»

মैं अल्लाह की पाकी बयान करता और उसकी तारीफ करता हूँ। .जो आदमी सुबह और ाम इस दुआ को सौ बार पढ़े गा क़ियामत के दिन कोई आदमी उस से बेहतर अमल लेकर नहीं आए गा, हाँ अगर कोई आदमी उसी के बराबर या उस से अधिक बार इस दुआ को पढ़े (तो उस से बेहतर हो सकता हैऋ। .मुस्लिम ४/२०७१)

92-(18) «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ».

अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक़् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । उसी का मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ।

दस बार (नसाई की अमलुल-यौमि वल-लैला हदीस न.२४, देखिए सहीह तरग़ीब व तरहीब १/२७२, तुहफतुल अख्यारः४४, इस दुआ की फज़ीलत इसी किताब की हदीस न.२५५ देखिये)

सुस्ती के समयएक बार पढ़ ले। (अबू दाऊद ४/३१६,

इब्ने माजा, अहमद ४/६०, और देखिए सहीह तरग़ीब व तरहीब १/२७०, सहीह अबू दाऊद २/६५७, सहीह इब्ने माजा २/३३१, ज़ादुल मआद २/३७७)

93-(19) «لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ».

सुबह़ के वक़्त १००बार

अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक़् नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। उसी का मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।[1]

94-(20) «سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ: عَدَدَ خَلْقِهِ، وَرِضَا نَفْسِهِ، وَزِنَةَ عَرْشِهِ، وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ».

सुबह़ के वक़्त तीन बार

1 जो आदमी सुबह़ के समय इस दुआ को १०० बार पढ़े तो उस को दस गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा, उसके लिए सौ नेकियां लिखी जायें गीं और उस के सौ गुनाह माफ कर दिए जायेंगे और वह उस दिन शाम तक शैतान के शर से महफूजं रहेगा। और मपकदश खपलभज ्रा कि अकनचव खभथ थकमव गनजब खप, हपे नपङ खहव मपकदश खपलभज ्रा कि खारपम अपव दा लत्रखप मपक ष्ंक (चपक ्रा कि अकनचव नपक मिचप नक)ब (बुख़ारी ४/९५ मुस्लिम ४/२०७१)

अल्लाह पाक है और उसी के लिए हर किस्म की तारीफ है उस की मख़्लूक़ की तादाद के बराबर और उस की अपनी मर्जी और उस के अर्श के वज़न् के बराबर और उस के कलिमात की रोशनाई के बर ाबर । (मुस्लिम ४/२०९०)

95-(21) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا، وَرِزْقًا طَيِّبًا، وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا».

सन लत्रखप त्रिअन मक यम्ंच ष्ंकब

ऐ अल्लाह मैं तुझ से नफा देने वाले इल्म और पाकीज़ा रोज़ी और क़बूल होने वाले अमल् का सवाल करता हूँ । (इब्नुस-सुन्नी ने अमलुल-यौमि वल-लैला में रिवायत किया है, हदीस न.५४, इब्ने माजा न.९२५, शुअैब और अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने इसकी सनद को हसन कहा है, देखिए ज़ादुल् मआद २/३७५)

96-(22) «أَسْتَغْفِرُ اللهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ».

प्रतिदिन १०० बार

मैं अल्लाह से माफी माँगता हूँ और उसी से तौबा कर ता हूँ । (बुख़ारी फतहुल् बारी के साथ ११/१०१, मुस्लिम ४/२०७५)

97-(23) «أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ».

शाम के वक़्त तीन बार पढ़े ।

मैं अल्लाह के मुकम्मल् कलिमात के साथ उन तमाम चीज़ों की बुराई से पनाह चाहता हूँ जो उस ने पैदा की हैं । (जो आदमी ाम के वक्त तीन बार इस दुआ को पढ़े तो उसे उस रात कोई ज़हरीला जानवर नुक़सान नहीं पहुँचाएगा, अहमद २/२९०, अमलुल-यौम वल-लैला 'नसाई' न.५९०, इब्नुस-सुन्नी न.६८, और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८७, सहीह इब्ने माजा २/२६६, तुहफतुल अख्यार:४५)

(23)-98 «اللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ». रबा ९१

ऐ अल्लाह हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम भेज। (रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं जो आदमी १० बार सुबह के वक़्त और १० बार शाम को मुझ पर दरूद पढ़े तो उसे क़यामत के दिन मेरी शफाअत् नसीब होगी । (चअवपगज गक दी नलजर्ा मपक लपक गिलपकब कि ावयपसच ामसप नक ़गभकब कि,म तक्पसल नके लकाृपसक भतञ्भ़त्तंयपदल ज्ञण्२ज्ञद्दण् सही़ह तरग़ीब व तरहीब १/२७३)

28 सोने के समय की दुआएँ

अपनी दोनों हथेलियों को मिलाकर उन में फूँक मारे, फिर उन में पढ़े :

(1)-99 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝١ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ﴾.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِن شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝٤ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ﴾.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝١ مَلِكِ النَّاسِ ۝٢ إِلَٰهِ النَّاسِ ۝٣ مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝٤ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝٥ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ﴾.

अल्ला के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत दयालू बड़ा रहम करने वाला है।

"आप कह दीजिए वह अल्लाहएक है, अल्लाह तआला बेनियाज़ है, न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है और न उसका कोई समकक्ष (हमसर) है"। (सूरतुल इख्लासः १-४)

''आप कह दीजिए कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है, और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाए। और गाँठ लगाकर उन में फूँकने वालियों की बुराई से और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे''। (सूरतुल फलक़:१-५)

''आप कह दीजिए कि मैं लोगों के रब, लोगों के मालि और लोगों के माबूद की पनाह में आता हूँ वस्वसा डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में वस्वसा डालता है .चाहेऋ वह जिन्न में से हो या मानव में से''। (सूरतुन्नासः१-६)

फिर दोनों हथेलियों को अपने बदन पर जहाज़ तक हो सके फेरे। सर, चेहरा और बदन् के सामने वाले हिस्से से शुरू करे। इस प्रकार तीन बार करे। (बुख़ारी फतहुल बारी के साथ ९/६२ मुस्लिम ४/१७२३)

100-(2) ﴿ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡحَيُّ ٱلۡقَيُّومُۚ لَا تَأۡخُذُهُۥ سِنَةٞ وَلَا نَوۡمٞۚ لَّهُۥ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِۗ مَن ذَا ٱلَّذِي يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦۚ يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيۡءٖ مِّنۡ عِلۡمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا

شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرۡسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَ ۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفۡظُهُمَا ۚ وَهُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡعَظِيمُ ﴾.

अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूजनीय) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है, सबको क़ाइम् रख्ने वाला है। उसको न ऊँघ आती है न नींद आसमान और जंमीन की सब चीज़ें उसी की हैं। कौन है जो उस के पास किसी की सिफारिश् करे उसकी इजाज़त् के बग़ैर। वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है, और लोग उसके इल्म से कुछ नहीं घेर (मालूम) सक्ते मगर जितना अल्लाह चाहे, और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने वुसअत् (घेरे) में ले रखा है। और उन दोनों की हिफ़ाजंत् उसको थका नहीं सकती और वह बुलन्द है अज़्मत् वाला है। (सूरतुल बक़रा: २५५) (अगर कोई आदमी सोने के लिए जब बिस्तर पर आए और आयतल् कुर्सी पढ़ ले तो अल्लाह की ओर से उस के लिए एक मुहाफिज (निरीक्षक) मुक़र्रर् (नियुक्त) हो जाता है और सुबह तक उस के क़रीब शैतान नहीं आ सकता। (बुख़ारी फतहुल बारी के साथ ४/४८७))

101-(3) ﴿ ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَ ۚ كُلٌّ ءَامَنَ

بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِۦ ۚ وَقَالُوا۟ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا ٱكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ إِن نَّسِينَآ أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِۦ ۖ وَٱعْفُ عَنَّا وَٱغْفِرْ لَنَا وَٱرْحَمْنَا ۚ أَنتَ مَوْلَىٰنَا فَٱنصُرْنَا عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴾.

রসূল উস চীज़ पर ईमान लाए जो उसकी ओर अल्लाह की तरफ से उतारी गई और मुसलमान भी ईमान लाए। यह सब अल्लाह, उसके फरिश्ते, उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए, उसके रसूलों में से किसी के मध्य हम मतभेद नहीं करते, उन्हों ने कहा कि हम ने सुना और फरमांबरदारी की,ऐ हमारे रब! तुझ से क्षमा चाहते हैं, और हमे तेरी ही ओर लौटना है। अल्लाह किसी प्राणी पर उसकी ताक़त से अधिक बोझ नहीं डालता, जो नेकी वह करे वह उसी के लिए है और जो बुराई वह करे वह उसी पर है, हे हमारे रब! अगर हम भूल गये हों या गलती की हो, तो हमें न पकड़ना। हे हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हमसे पहले लोगों पर डाला था। हे हमारे रब! हम

पर वह बोझ न डाल जिसकी हमें ताक़त नहीं, और हमें माफ कर दे और हमें बख्श दे और हम पर दया कर तू ही हमारा मालिक है, हमें काफिर समुदाय पर विजय प्रदान कर। (सूरतुल बक़रा: २८५-२८६) (जो आदमी यह दोनों आयतें रात में पढ़ ले तो उस के लिए ये आयतें काफी हो जायेंगी। बुख़ारी फतहुल बारी के साथ ९/९४, मुस्लिम १/५५४)

102-(4) «بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي، وَبِكَ أَرْفَعُهُ؛ فَإِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَارْحَمْهَا، وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ».

तेरे ही नाम[1] से ऐ मेरे रब् मैं ने अपना पहलू (कर वट्) रखा और तेरी ही तौफीक से इसे उठाऊँगा। इस लिए अगर तू मेरी जान (प्राण) को रोक ले तो उस पर रहम कर और अगर उसे छोड़ दे तो तू उस की हिफाज़त् कर जैसा कि तू अपने नेक बन्दों की हिफाजत् करता है। (बुख़ारी ११/१२६ मुस्लिम ४/२०८४)

103-(5) «اللَّهُمَّ إِنَّكَ خَلَقْتَ نَفْسِي وَأَنْتَ تَوَفَّاهَا، لَكَ مَمَاتُهَا

1 "जब तुम में से कोई आदमी अपने बिस्तर से उठे और फिर दुबारा उसकी ओर आए तो उसे अपने तहबन्द के किनारे से तीन बार झाड़ ले और बिस्मिल्लाह कहे, क्योंकि उसे पता नहीं कि उसके बाद उस पर कौन सी चीज़ आगई हो और जब बिस्तर पर लेटे तो यह दुआ पढ़े ..."

وَمَحْيَاهَا؛ إِنْ أَحْيَيْتَهَا فَاحْفَظْهَا، وَإِنْ أَمَتَّهَا فَاغْفِرْ لَهَا. اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ العَافِيَةَ».

ऐ अल्लाह तू ने ही मेरी जान (प्राण) पैदा की और तू ही उसे मौत देगा। तेरे ही कब्जें में उस को मारना और जिन्दा रखना है। अगर तू इसे जिंन्दा रखे तो इस की हिफाज़त् कर और अगर इसे मौत दे तो इसे बख़्श दे। ऐ अल्लाह मैं तुझ से आफियत् का सवाल करता हूँ। (मुस्लिम ४/२०८३, अहमद के शब्द हैं २२७९)

(6)-104 «اللَّهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ».

ऐ अल्लाह मुझे (ा लिग) अपने अज़ाब से बचा जिस दिन तू अपने बन्दों को उठायेगा। (रसूलुल्लाह भ जब सोने का इरादा करते तो अपना दायाँ हाथ अपने रुख़सार (गाल) के नीचे रखते फिर तीन बार यह दुआ पढ़ते। अबूदाऊद के शब्द हैं ४/३११ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४३)

(7)-105 «بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا».

ऐ अल्लाह मैं तेरे ही नाम से मरता हूँ और ज़िन्दा होता हूँ। (बुख़ारी फतहुल बारी के साथ ११/११३ मुस्लिम ४/२०८३)

(8)-106 «سُبْحَانَ اللهِ»، 33 বার «الحَمْدُ لِلّه»، 33 বার «اللهُ أَكْبَرُ» 34 বার

जो आदमी बिस्तर पर लेटते हुए ३३ बार सुब्हानल्लाह .अल्लाह पाक हैऋ ३३ बार अल्हमदु-लिल्लाह .सब तारीफ अल्लाह के लिए हैऋ और ३४ बार अल्लाहु अक्बर .अल्लाह सब से बड़ा हैऋ पढ़े तो यह उसके लिए खादिम से बेहतर है। (बुख़ारी फतहुल बारी के साथ ७/७१ मुस्लिम ४/२०९१)

(9)-107 «اللّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ، وَرَبَّ الأَرْضِ، وَرَبَّ العَرْشِ العَظِيمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، فَالِقَ الحَبِّ وَالنَّوَى، وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالإِنْجِيلِ وَالفُرْقَانِ؛ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ. اللّهُمَّ أَنْتَ الأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ البَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ؛ اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ، وَأَغْنِنَا مِنَ الفَقْرِ».

ऐ अल्लाह । ऐ सातों आसमानों के रब् और अर्शे अज़ीम के रब् । ऐ हमारे और हर चीज़ के रब । दाने और गुठली को फाड़ने वाले, तौरात, इन्जील और फ़ुरक़ान (क़ुरआन) के नाज़िल् करने वाले! मैं हर

উস চীज़ की बुराई तथा शर् से तेरी पनाह चाहता हूँ जिस की पेशानी तू पकड़े हुए है । ऐ अल्लाह ! तू ही अव्वल् है पस् तुझ् से पहले कोई चीज़ नहीं और तू ही आख़िर है पस् तेरे बाद कोई चीज़ नहीं । तू ही ज़ाहिर है पस् तुझ से ऊपर कोई चीज़ नहीं और तू ही बातिन् है पस् तुझ से अधिक पोशीदा कोई चीज़ नहीं । हमारा क़र्ज अदा कर दे और हमें मुहताजगी से (निकाल कर) ग़नी कर दे । (मुस्लिम ४/२०८४)

108-(10) «الحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا، وَكَفَانَا وَآوَانَا؛ فَكَمْ مِمَّنْ لَا كَافِيَ لَهُ، وَلَا مُؤْوِيَ!».

सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने हमें खिलाया और पिलाया और हमें काफी हो गया और हमें ठिकाना दिया, पस् कितने ही लोग ऐसे हैं जिन्हें को ई किफायत् करने वाला नहीं न कोई ठिकाना देने वाला है । (मुस्लिम ४२२०८५)

109-(11) «اللّٰهُمَّ عَالِمَ الغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ، رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ؛ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي، وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ، وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِي سُوءًا،

أَوْ أَجُرَّهُ إِلَى مُسْلِمٍ».

ऐ अल्लाह ऐ ग़ैब तथा हाज़िर को जानने वाले, आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले, हर चीज़ के रब और मालिक ! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं । मैं तेरी पनाह माँगता हूँ अपने नफ़्स के शर् से और शैतान के शर् और उस के शिर्क से और इस बात से कि मैं अपनी जान पर कोई बुराई करुँ या किसी और मुसलमान के लिए बुराई का कारण बनूँ । (अबूदाऊद ४२३१७, और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१४२)

(12)-110 ﴿الٓمٓ ۝١ تَنزِيلُ ٱلۡكِتَٰبِ﴾ السَّجْدَة، ﴿تَبَٰرَكَ ٱلَّذِي بِيَدِهِ ٱلۡمُلۡكُ﴾.

सूरतुस-सज्दा और सूरतुल-मुल्क पढ़े । (त्रिमिज़ी, नसाई और देखिए सहीहुल् जामिअ़ ४/२५५)

(13)-111 «اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجَا مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ، وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ».

ऐ अल्लाह[1] मैं ने अपने नफ्स (प्राण) को तेरे ह़वाले कर दिया और अपना मामला तुझे सौंप दिया और अपना चेहरा तेरी तरफ कर लिया और अपनी पीठ तेरी ओर झुकाई। तेरी तरफ रग़बत् करते हुए और तुझ से डरते हुए। तेरे दर के सिवा न कोई पनाह की जगह है और न भाग कर जाने की। मैं ईमान लाया तेरी उस किताब पर जो तू ने उतारी और तेरे उस नबी पर जो तू ने भेजा। (इस दुआ को पढ़ने वाले के बारे में नबी म ने फरमायाः "अगर तुम्हारी मौत हो जाये तो तुम्हारी मौत फित्रते इस्लाम पर होगी"। बुख़ारी फत्हुल् बारी के साथ ११/११३ मुस्लिम ४/२०८१)

29 रात को कर्वट् बदल्ते समय की दुआ

रात को जब करवट् बदले तो यह दुआ पढ़े :

112-«لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ الوَاحِدُ القَهَّارُ، رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا العَزِيزُ الغَفَّارُ».

1 जब तुम सोने चलो तो नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू कर लो फिर दाहिने करवट पर लेट कर यह दुआ पढ़ो।

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। जो अकेला और ताक़तवार है। आसमानों और ज़मीन और उन के बीच की सारी चीज़ों का रब, बहुत ग़ालिब बहुत माफ करने वाला है। (इसे हाकिम् ने रिवायत् करके सहीह कहा है और जंहबी ने इसकी पुष्टि की है १२५४०, अमलुलञ्यौमि वलञ्लैला नसाई, इब्नुसञ्सुन्नी, देखिए सहीहुल् जामिअ् ४/२१३)

30 नींद में बेचैनी और घब्राहट् तथा वह्शत् की दुआ

113-«أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ، وَعِقَابِهِ، وَشَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ، وَأَنْ يَحْضُرُونِ».

मैं अल्लाह के पूरे कलिमात की पनाह पकड़ता हूँ उस के ग़ुस्से और उस की सज़ा से, उस के बन्दों के शर् से, शैतानों के चोकों से और इस बात से कि वे मेरे पास हाज़िर हों। (अबूदाऊद ४/१२ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१७१)

31 कोई आदमी बुरा ख़्वाब (सपना) देखे तो क्या करे?

114-(1) अपनी बायीं ओर् तीन बार थूके। (मुस्लिम ४/१७७२)

(2) शैतान और अपने इस ख़्वाब की बुराई से तीन बार अल्लाह की पनाह माँगे। (मुस्लिम ४/१७७२ १७७३)

(3) यह ख़्वाब किसी को न सुनाए। (मुस्लिम ४/१७७२)

(4) जिस पहलू पर लेटा हो उसे बदल् दे। (मुस्लिम४/१७७३)

115-(5) अगर इच्छा हो तो उठ कर नमाज़ पढ़े। (मुस्लिम ४२१७७३)

32 कुनूते वित्र की दुआएँ।

116-(1) «اللَّهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ، وَعَافِنِي فِيمَنْ عَافَيْتَ، وَتَوَلَّنِي فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ، وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَ، وَقِنِي شَرَّ مَا

قَضَيْتَ؛ فَإِنَّكَ تَقْضِي وَلَا يُقْضَى عَلَيْكَ، إِنَّهُ لَا يَذِلُّ مَنْ وَالَيْتَ، [وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ]، تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ».

ऐ अल्लाह तू ने जिन लोगों को हिदायत् दी है उन्हीं हिदायत याफता लोगों में से मुझे भी कर दे और जिन लोगों को तूने आ़फियत् दी है उन्हीं के साथ मुझे भी आ़फियत् दे और जिन का तू वाली बना है उन्हीं के साथ साथ मेरा भी वाली बन जा, और तूने जो कुछ मुझे अता किया है उस में मेरे लिए बरकत् दे, और जो फैसिले तूने किए हैं उन की बुराई से मुझे मह्फूज रख्। क्योंकि तू ही फैसिला करने वाला है और तेरे खिलाफ कोई भी फैसिला नहीं कर सकता। जिस का तू दोस्त बन जाए वह कभी रुसवा नहीं हो सकता, और जिस का तू दुश्मन बन जाए वह इज़्ज़त् वाला नहीं हो सकता। ऐ हमारे रब् तू बहुत बरकत् वाला और बुलन्द है।

(खअध लपहूले ।.।भतंजे गपिदशे दक्ष्ृगक भपतपे खनभले लपवभजे नपामभे अक्नमंजे लपकगपक मपकूद्यपकब मक अजउ अक्नमंज मक ॅपत्रृल नक्बे खपक्व लकाृप,५ सह़ीह़ त्रिमिज़ी १/१४४, सह़ीह़ इब्ने माजा १/१९४, दवयफथ हंथजथ ६खथअपगजद्द द्दरज्ञठद्द)

117-(2) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ، لَا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ، أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ».

ऐ अल्लाह मैं तेरी नाराज़गी से भाग कर तेरी रजा की ओर पनाह पकड़ता हूँ और तेरी सज़ा से तेरी माफी की पनाह चाहता हूँ, और तुझ से तेरी ही पनाह चाहता हूँ। मैं तेरी पूरी तारीफ बयान करने की ताक़त् नहीं रखता। तू उसी तरह है जिस तरह तू ने खुद् अपनी तारीफ की है। (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, नसाई, इब्ने माजाए और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८० और सहीह इब्ने माजा १/१९४, इरवाउल ग़लील 'अलबानी' २/१७५)

118-(3) «اللَّهُمَّ إِيَّاكَ نَعْبُدُ، وَلَكَ نُصَلِّي وَنَسْجُدُ، وَإِلَيْكَ نَسْعَى وَنَحْفِدُ، نَرْجُو رَحْمَتَكَ، وَنَخْشَى عَذَابَكَ؛ إِنَّ عَذَابَكَ بِالكَافِرِينَ مُلْحِقٌ. اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْتَعِينُكَ، وَنَسْتَغْفِرُكَ، وَنُثْنِي عَلَيْكَ الخَيْرَ، وَلَا نَكْفُرُكَ، وَنُؤْمِنُ بِكَ، وَنَخْضَعُ لَكَ، وَنَخْلَعُ مَنْ يَكْفُرُكَ».

ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत् करते हैं। तेरे लिए ही नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं। तेरी तरफ ही कोशिश् और जल्दी करते हैं। तेरी रह़मत् की

उम्मीद रखते हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं। तेरा अज़ाब काफिरों को मिलने वाला है। ऐ अल्लाह हम तुझ से मदद् माँगते हैं और तुझ से बख्शिश् माँगते हैं। तेरी अच्छी तारीफ करते हैं। तुझ से कुफ्र नहीं करते और तुझ पर ईमान रखते हैं और तेरे सामने झुकते हैं और जो तुझ से कुफ्र करे हम उस से अपना रिश्ता खत्म करते हैं। (सुनन कुब्रा बैहक़ी २/२११ और बैहक़ी ने दमिज गिल मपक निजन मनप नके शैख़ अल्बानी अपनी किताब इर्वाउल् ग़लील में फरमाते हैं कि इस की सनद् सहीह़ है २/१७० और यह दुआ उमर (رضي الله عنه) के क़ौल से साबित है रसूलुल्लाह ﷺ से नहीं)

33 वित्र से सलाम फेरने के बाद की दुआ

119-«سُبْحَانَ المَلِكِ القُدُّوسِ».

पाक है बहुत पाकीज़गी वाला बादशाह।

वित्र से सलाम फेरने बाद यह दुआ तीन बार पढ़े, तीसरी बार बुलन्द आवाज़ से पढ़े और आवाज़ लम्बी करे और उसके साथ यह भी पढ़े :

[رَبِّ المَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ].

फरिश्तों और रुह (जिब्रील) का रब्। (नसाई ३/२४४, दारकुतनी, बरेकिट के बीच के शब्द दारकुतनी के हैं २/३१, इसकी सनद् सहीह़ है, देखिए ज़ादुल मआद ुअैब और अब्दुल क़ादिर अरनाऊत की तहक़ीक़ १/३३७)

34 ग़म् (चिन्ता) और फिक्र के समय की दुआएं

120-(1) «اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ، ابْنُ عَبْدِكَ، ابْنُ أَمَتِكَ، نَاصِيَتِي بِيَدِكَ، مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِيَّ قَضَاؤُكَ، أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ، سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ، أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ، أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ، أَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الغَيْبِ عِنْدَكَ: أَنْ تَجْعَلَ القُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِي، وَنُورَ صَدْرِي، وَجِلَاءَ حُزْنِي، وَذَهَابَ هَمِّي».

ऐ अल्लाह मैं तेरा बन्दा हूँ। तेरे बन्दे और तेरी बन्दी का बेटा हूँ। तेरा हुक्म मुझ में जारी है। मेरे बारे में तेरा फैसिला इंसाफ पर मब्नी है। मैं तुझ से तेरे हर उस ख़ास नाम के ज़रिऐ जो तू ने खुद अपना नाम रखा है या उसे अपनी किताब में नाज़िल किया

है या अपनी मख़्लूक़ में से किसी को सिखाया है या तूने उसे अपने इल्मे ग़ैब में महफ़ूज़ कर रखा है यह सवाल करता हूँ कि तू कुरआन को मेरे दिल की बहार और मेरे सीने का नूर और मेरे ग़म् को दूर करने वाला और मेरी परेशानी को खत्म करने वाला बना दे। (मुसनद् अहमद् १/३९१ शैख़ अल्बानी (रहि) ने इसे सहीह कहा है)

121-(2) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الهَمِّ وَالحَزَنِ، وَالعَجْزِ وَالكَسَلِ، وَالبُخْلِ وَالجُبْنِ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ».

ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ परेशानी और ग़म् से और आजिज़् हो जाने तथा सुस्ती व काहिली से और बुज़दिली और बुख्ल् (कन्जूसी) से और क़र्ज (ऋण) के बोझ और लोगों के गल्बे से। (बुख़ारी ७/१५८ रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ अधिक से अधिक किया करते थे। देखिए बुख़ारी फतहुल्बारी के साथ ११/१७३)

35 बेक़रारी तथा बेचैनी की दुआ

122-(1) «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ العَظِيمُ الحَلِيمُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ العَرْشِ

العَظِيمِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَرَبُّ الأَرْضِ وَرَبُّ العَرْشِ الكَرِيمِ».

अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत् के लायक़ नहीं। वह अज़्मत् वाला तथा बुर्दबार है। अल्लाह के अलावा कोई इबादत् के लायक़ नहीं जो बडें अर्श का रब् है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़ नहीं जो आसमानों का रब् और ज़मीन का रब् और अर्शे करीम का रब् है। (बुख़ारी ७/१५४ मुस्लिम ४/२०९२)

123-(2) «اللَّهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُو؛ فَلَا تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ، وَأَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ؛ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ».

ऐ अल्लाह मैं तेरी रह़मत् ही की आशा रखता हूँ। इस लिए तू मुझे पलक् झपक्ने के बराबर भी मेरे नफ़्स (आत्मा) के ह़वाले न कर और मेरे लिए मेरे तमाम काम ठीक कर दे। तेरे सिवा कोई भी इबादत् के लायक़ नहीं। (अबूदाऊद ४/३२४ अह़मद् ५/४२ शैख़ अल्बानी रह़ि ने इसे ह़सन् कहा है, देखिए सह़ीह़ अबूदाऊद ३/९५९)

124-(3) «لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ».

तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक़ नहीं, तू पाक है । बेशक मैं ही ज़ालिमों में से हूँ । (त्रिमिज़ी ५/५२९, और हाकिम ने इसे सहीह कहा है और जंह्बी ने इसकी पुष्टि की है १२५०५, और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१६८)

125-(1) «اللهُ، اللهُ رَبِّي، لَا أُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا».

अल्लाह, अल्लाह मेरा रब् है, मैं उस के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करता । (अबूदाऊद २/८७ और देखिए सहीह़ इब्ने माजा २/३३५)

36 दुश्मन् तथा शासन् अधिकारी से मुलाक़ात के समय की दुआ

126-(1) «اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ، وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ».

ऐ अल्लाह हम तुझी को उन के मुक़ाबिले में करते हैं और उन की शरारतों से तेरी पनाह चाहते हैं । (अबूदाऊद २/८९, हाकिम ने इसे सहीह़ कहा है और ज़हबी ने भी इस पर अपनी सहमति व्यक्त की है २/१४२)

127-(2) «اللَّهُمَّ أَنْتَ عَضُدِي، وَأَنْتَ نَصِيرِي؛ بِكَ أَحُولُ، وَبِكَ

أَصُولُ، وَبِكَ أُقَاتِلُ».

১২৭. ऐ अल्लाह तू ही मेरे बाजूं (सहायक) है और तू ही मेरा मदद्गार है। तेरी ही मदद से मैं दुश्मन की चालों को रोकता हूइ और तेरी ही तौफीकं से मैं हमला करता हूँ और तेरी ताकंत के साथ ही मैं दुश्मन से लड़ता हूँ। (अबूदाऊद ३/४३ त्रिमिज़ी ५/५७२ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८३)

(3)-128 «حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الوَكِيلُ».

हमारे लिए अल्लाह ही काफी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है। (बुख़ारी ५/१७२)

37 शासक् के अत्याचार से डरने वाले की दुआएं

(1)-129 «اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ، وَرَبَّ العَرْشِ العَظِيمِ؛ كُنْ لِي جَارًا مِنْ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ، وَأَحْزَابِهِ مِنْ خَلَائِقِكَ؛ أَنْ يَفْرُطَ عَلَيَّ أَحَدٌ مِنْهُمْ أَوْ يَطْغَى، عَزَّ جَارُكَ، وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ».

ऐ अल्लाह। सातों आसमानों के रब् और बडे अर्श

के रब् मेरे लिए फलाँ बिन फलाँ से और अपनी मख्लूकं में से उनके जत्थों से इस बात से पनाह देने वाला बन जा कि उन में से कोई मेरे ऊपर जिंयादती करे या सरकशी करे। तेरी पनाह बहुत मजंबूत है और तेरी तारीफ बहुत बडी है और तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक़ नहीं। (अद्बुल् मुफ्रद लिल बुखारी न. ७०७, शैख अलबानी ने इसे सहीह कहा है, सहीह अद्बुल् मुफ्रद् ५४५)

130-(2) «اللهُ أَكْبَرُ، اللهُ أَعَزُّ مِنْ خَلْقِهِ جَمِيعًا، اللهُ أَعَزُّ مِمَّا أَخَافُ وَأَحْذَرُ، أَعُوذُ بِاللهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، المُمْسِكِ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ أَنْ يَقَعْنَ عَلَى الأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ: مِنْ شَرِّ عَبْدِكَ فُلَانٍ، وَجُنُودِهِ وَأَتْبَاعِهِ وَأَشْيَاعِهِ، مِنَ الجِنِّ وَالإِنْسِ، اللَّهُمَّ كُنْ لِي جَارًا مِنْ شَرِّهِمْ، جَلَّ ثَنَاؤُكَ، وَعَزَّ جَارُكَ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ»

अल्लाह सब से बडा है। अल्लाह अपनी सारी मख़लूक़ात से सब से ज्यादा ताकंत और गल्बा वाला है। मैं जिस चीज़ से डरता और खौफ खाता हूँ अल्लाह उस से कहीं ज्यादा ताकंतवार है। मैं

उस अल्लाह की पनाह में आता हूँ जिस के सिवा कोई इबादत् के लायक़ नही,जो सातों आसमानों को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है लेकिन उस की इजाजत से (गिरसकते हैं), तेरे फलाँ बन्दे के शर् से, और उस के लश्करों, चेलों और जिन्नातों और इन्सानों में से उसके जत्थों की बुराई से (तेरी पनाह में आता हूइ) । ऐ अल्लाह तू उन के शर से मेरे लिए मददगार बन जा । तेरी तारीफ बहुत बडी है, तेरी पनाह बहुत मजंबूत है और तेरा नाम बहुत बरकत वाला है और तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक़ नहीं । (अद्बुल् मुफ्रद लिल बुखारी हदसि न. ७०८, शैख अलबानी ने इसे सहीह कहा है, सहीहुल् अद्बिल् मुफ्रद् ५४६)

38 दुश्मन् के लिए बद्दुआ

131-«اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الكِتَابِ، سَرِيعَ الحِسَابِ؛ اهْزِمِ الأَحْزَابَ، اللَّهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ».

ऐ अल्लाह ! ऐ किताब उतारने वाले, जल्दी हिसाब लेने वाले इन जमाअतों को शिकस्त दे दे, ऐ अल्लाह

इन्हें शिकस्त दे और इन्हें सख़्त झिंझोड़ दे । (मुस्लिम ३/१३६२)

39 थपकहपकब कि :वक चपक सन लत्रखप भपज्ञक

132-«اللَّهُمَّ اكْفِنِيهِمْ بِمَا شِئْتَ».

ऐ अल्लाह मुझे इन से काफी हो जा जिस तरह तू चाहे । (मुस्लिम ४/२३००)

40 जिसे अपने ईमान में शक् हो जाए उसके लिए दुआ

133-(1) अल्लाह की पनाह माँगे । (बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ६/३३६, मुस्लिम १२१२०)

(2) जिस चीज़ में शक पैदा हो रहा है उस से रुक जाए । (बुख़ारी फत्हुल्बारी के साथ ६/३३६, मुस्लिम १२१२०)

134-(3) यह दुआ पढ़े :

«آمَنْتُ بِاللهِ وَرُسُلِهِ».

मैं ईमान लाया अल्लाह और उस के रसूलों पर। (मुस्लिम १/११९/७१२०)

135-(4) अल्लाह का यह फरमान पढ़े :

﴿هُوَ ٱلۡأَوَّلُ وَٱلۡأٓخِرُ وَٱلظَّٰهِرُ وَٱلۡبَاطِنُۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيۡءٍ عَلِيمٌ﴾.

वही अव्वल् है वही आख़िर है वही जाहिर है वही बातिन् है और वह हर चीज़ को जानने वाला है। (अबूदाऊद ४/३२९ शैख़ अल्बानी (रहि) ने इसे ह़सन् कहा है,सहीह अबूदाऊद ३/९६२)

41 क़र्ज की अदायगी के लिए दुआ

136-(1) «اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ، وَأَغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ».

ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी ह़लाल चीज़ों के साथ अपनी ह़राम चीज़ों से काफी हो जा और मुझे अपने फज़्ल व करम् के ज़रिया अपने सिवा सभी लोगों से बेनियाजं कर दे। (त्रिमिज़ी ५/५६०, देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१८०)

137-(2)- «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الهَمِّ وَالحَزَنِ، وَالعَجْزِ وَالكَسَلِ، وَالبُخْلِ وَالجُبْنِ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ».

ऐ अल्लाह मैं परेशानी और ग़म् से, आ़जिज़ी तथा सुस्ती से, बख़ीली (कन्जूसी) तथा बुज़्दिली से, क़र्ज (ऋण) के बोझ और लोगों के अपने हृष्व हंपाथअ खपगक से तेरी पनाह चाहता हूँ। (बुख़ारी ७/१५८)

42 नमाज़ में या कुरआन पढ़ते समय पैदा होने वाले वसवसों से बचने की दुआ

138- «أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ».

मैं शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह में आता हूँ।

यह पढ़ कर बायीं ओर तीन बार थूक दो। (मुस्लिम ४/१७२९ इस के रावी उस्मान (रजि) फरमाते हैं कि मैं ने ऐसा ही किया तो अल्लाह तआला ने इसे मुझ से दूर कर दिया)

43 उस आदमी की दुआ जिस पर कोई काम मुश्किल् हो जाए

139-«اللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ إِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا، وَأَنْتَ تَجْعَلُ الحَزْنَ إِذَا شِئْتَ سَهْلًا».

ऐ अल्लाह कोई काम आसान नहीं मगर जिसे तू आसान कर दे और तू जब चाहे मुश्किल् को आसान कर देता है। (सहीह इब्ने हिब्बान हदीस न० २४२७ (मवारिद) इब्नुसञ्सुन्नी न.३५१, हाफिज़ ने कहा : यह हदीस सहीह है। और अब्दुल क़ादिर अरनाऊत ने इमाम नववी की किताब अल-अज़्कार की तखरीज में इस हदीस को सहीह कहा है। देखिए पृष्ठ न.१०६)

44 गुनाह कर बैठे तो कौन सी दुआ पढ़े और क्या करे ?

140-«مَا مِنْ عَبْدٍ يُذْنِبُ ذَنْبًا فَيُحْسِنُ الطُّهُورَ، ثُمَّ يَقُومُ فَيُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ يَسْتَغْفِرُ اللهَ إِلَّا غَفَرَ اللهُ لَهُ».

जब किसी बन्दे से गुनाह हो जाए तो वह अच्छी तरह् वुज़ू करे फिर खडा होकर दो रक्अत (नफ्ली)

नमाज़ पढ़े फिर अल्लाह से बख़्शिश् की दुआ माँगे तो अल्लाह तआला ऐसे बन्दे को बख़्श देता है। (अबूदाऊद २/८६ त्रिमिज़ी २/२५७ और शैख अलबानी ने इसे सहीह कहा है, सहीह अबू दाऊद १/२८३)

45 शैतान और उस के वसवसे दूर करने की दुआ

141-(1) «الِاسْتِعَاذَةُ بِاللهِ مِنْهُ».

शैतान से अल्लाह की पनाह मांगना। (अबूदाऊद १/२०६ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी १/७७ और देखिए सूरा अल७मूमिनून : ९८, ९९)

142-(2) «الأَذَانُ».

अज़ान। (मुस्लिम १/२९१ बुख़ारी १/१५१)

143-(3) «الأَذْكَارُ، وَقِرَاءَةُ القُرْآنِ».

मसनून दुआएँ और कुरआन की तिलावत्। (रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि अपने घरों को क़बरस्तान न बनाओ, शैतान उस घर से भागता है जिस में सूरा बक़रा पढ़ी जाये। (मुस्लिम १/५३९)

और सुबह़ व शाम तथा सोने जागने की दुआयें, घर में दाख़िल् होने और घर से बाहर निकल्ने की दुआएँ, मस्जिद में दाख़िल् होने और मस्जिद से बाहर निकल्ने की दुआएँ भी शैतान को भगाती हैं। इसी तरह दूसरी मसनून दुआएँ जैसे सोते समय आयतल् कुर्सी पढ़ना, सूरा बक़्रा की आख़िरी दो आयतें पढ़ना और जो आदमी सौ बार पढ़े : ((ला इलाहा इललल्लाहु वह़्दहू ला शरीक लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् ह़म्दु वहुवा अला कुल्लि शैइन् क़दीर)) तो पूरा दिन शैतान से मह़फ़ूज़ रहेगा। इसी तरह अज़ान भी शैतान को भगाती है।)

46 नापसन्दीदा वाक़िआ पेश आने या बेबसी की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : अल्लाह के यहाज़ ताक़त्वर मोमिन् कमज़ोर मोमिन् से बेहतर और महबूब है जबकि दोनों में भलाई है, जो काम तुम्हें नफा दे उस के अभिलाषी बनो और अल्लाह से मदद मांगो, बेबस होकर न बैठो, अगर तुम्हें कोई

नुक़्सान पहुँच जाए तो यह मत् कहो कि ((अगर मैं इस तरह् करता तो यह हो जाता)) बल्कि यूँ कहो :

144-«قَدَرُ اللهِ، وَمَا شَاءَ فَعَلَ».

अल्लाह ने (ऐसा ही) तक़दीर में लिखा था और उस ने जो चाहा किया ।

क्योंकि ((अगर)) का शब्द शैतान का काम शुरू कर देता है । (मुस्लिम ४/२०५२)

47 नया पैदा होने वाले बच्चे की मुबारक्बाद और उसका जवाब

145-«بَارَكَ اللهُ لَكَ فِي المَوْهُوبِ لَكَ، وَشَكَرْتَ الوَاهِبَ، وَبَلَغَ أَشُدَّهُ، وَرُزِقْتَ بِرَّهُ».

अल्लाह तुम्हें इस बच्चे में जो तुम्हें अता किया गया है बरकत् दे । देने वाले अल्लाह का तुम शुक्र अदा करो । वह अपनी जवानी को पहुंचे और तुम्हें उस का अच्छा सुलूक नसीब हो ।

जिसे मुबारक्बाद दी जा रही हो वह मुबारक्बाद दे

ने वाले के लिए इस तरह दुआ करे :

«بَارَكَ اللهُ لَكَ، وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَزَاكَ اللهُ خَيْرًا، وَرَزَقَكَ اللهُ مِثْلَهُ، وَأَجْزَلَ ثَوَابَكَ».

अल्लाह तेरे लिए और तुझ पर बरकत् फरमाये और अल्लाह तुझे बेहतरीन बदला दे और अल्लाह उस जैसा तुझे भी नवाज़े और तुझे बहुत ज्यादा सवाब दे । (नववी की अज़्कार पृष्ठ ३४६, और सलीम हिलाली की सहीहुल अज़्कार लिन-नववी २/७१३)

48 बच्चों को किन कलिमात के साथ अल्लाह की पनाह में दिया जाए

रसूलुल्लाह ﷺ ह़सन् और हुसैन को इन कलिमात के साथ अल्लाह की पनाह में दिया करते थे :

146- «أُعِيذُكُمَا بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ، مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ».

मैं तुम दोनों को हर शैतान और ज़हरीले जानवर से और हर लग् जाने वाली नज़र से अल्लाह के

मुकम्मल् कलिमात के साथ पनाह देता हूँ। (बुख़ारी ४/११९ इब्ने अब्बास की हदीस)

49 बीमार पुर्सी के वक़्त मरीज़ के लिए दुआ

147-(1) «لَا بَأْسَ، طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللهُ».

कोई हरज् नहीं यह बीमारी अल्लाह ने चाहा तो (गुनाहों से) पाक करने वाली है। (बुख़ारी फत्हुलबारी के साथ १०/११८)

148-(2) «أَسْأَلُ اللهَ العَظِيمَ رَبَّ العَرْشِ العَظِيمِ أَنْ يَشْفِيَكَ».

मैं बड़ी अज़्मत् वाले अल्लाह से जो अर्शे अज़ीम का रब है सवाल करता हूँ कि वह तुझे शिफा दे। (कोई मुसलमान ऐसे मरीज़ की बीमार पुर्सी करे जिस की मौत का समय न आ पहुँचा हो और सात बार यह दुआ पढ़े तो अल्लाह के हुक्म से उसे शिफा मिल जाती है, त्रिमिज़ी, अबूदाऊद और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/२१० और सहीहुल् जामिअ् ५/१८०)

50 বীমার পুর্সী की फज़ीलत

149-قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «إِذَا عَادَ الرَّجُلُ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ مَشَى فِي خِرَافَةِ الْجَنَّةِ حَتَّى يَجْلِسَ، فَإِذَا جَلَسَ غَمَرَتْهُ الرَّحْمَةُ، فَإِنْ كَانَ غُدْوَةً صَلَّى عَلَيْهِ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ حَتَّى يُمْسِيَ، وَإِنْ كَانَ مَسَاءً صَلَّى عَلَيْهِ سَبْعُونَ أَلْفَ مَلَكٍ حَتَّى يُصْبِحَ».

हजरत अली (रजिं) फरमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह भ से सुना कि (आदमी जब अपने मुस्लिम भाई की बीमार पुर्सी के लिए जाता है तो वह बैठने तक जन्नत के फलों तथा मेवों में चलता है, जब वह बैठ जाता है तो उसे (अल्लाह की) रह़मत् ढाँप ले ती है, अगर सुबह़ के समय गया हो तो शाम तक सत्तर हज़ार फरिश्ते उस के लिए दुआ करते र हते हैं और अगर शाम के समय गया हो तो सत्तर हज़ार फरिश्ते सुबह़ तक दुआ करते रहते हैं। (त्रिमिज़ी, इब्ने माजा, अह़मद और देखिए सह़ीह़ इब्ने माजा १/२४४ और सह़ीह़ त्रिमिज़ी १/२८६ शैख़ अहमद शाकिर ने भी इसे सह़ीह़ कहा है)

51 ज़िन्दगी से मायूस मरीज़ की दुआ

(1)-150 «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ الأَعْلَى».

ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम् कर और मुझे रफीक़े आला के साथ मिला दे। (बुख़ारी ७/१० मुस्लिम ४/१८९३)

(2)-151 «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ؛ إِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ».

आइशा (रजिं) फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ वफात के समय अपने दोनों हाथों को पानी में डाल कर अपने चेहरे पर फेरने लगे और यह दुआ पढ़ने लगे :

अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं, बे शक् मौत की कई सख़्तियाँ हैं। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ८/१४४, इस हदीस में मिसवाक का भी उल्लेख है)

(3)-152 «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ».

अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं और

अल्लाह सब से बड़ा है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं, वह अकेला है, अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए हर किस्म की तारीफ है। अल्लाह के सिवा कोई बन्दगी के लायक़् नहीं और न बचने की ताक़त् है और न कुछ करने की मगर अल्लाह की मदद् से। (त्रिमिज़ी, इब्ने माजा, शैख़ अल्बानी (रहि) ने इसे सहीह़ कहा है देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१५२ और सहीह़ इब्ने माजा २/३१७)

52 जो आदमी मरने के क़रीब हो उसे यह कलिमा पढ़ाया जाए

(2)-151 «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ».

जिस का अख़िरी कलाम ((लाइलाहा इल्लल्लाह)) हो गा वह जन्नत में दाख़िल् होगा। (अबूदाऊद ३/१९० और देखिए सहीहुल् जामिअ् ५/३४२)

53 छघ(जिसे कोई मुसीबत् पहुँचे वह निम्नलिखित दुआ पढ़े

154-«إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ، اللّٰهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي، وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا».

बेशक् हम अल्लाह ही की मिलकियत हैं और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं। ऐ अल्लाह मुझे मेरी मुसीबत् में सवाब दे और मुझे इस के बदले में इस से बेहतर चीज़ अता कर। (मुस्लिम २/६३२)

54 मैयित की आँखें बन्द करते वक्त की दुआ

155-«اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِفُلَانٍ (بِاسْمِهِ)، وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِي المَهْدِيِّينَ، وَاخْلُفْهُ فِي عَقِبِهِ فِي الغَابِرِينَ، وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهُ يَا رَبَّ العَالَمِينَ، وَافْسَحْ لَهُ فِي قَبْرِهِ، وَنَوِّرْ لَهُ فِيهِ».

ऐ अल्लाह फलाँ को (नाम लेकर कहे) बख़्श दे और हिदायत् पाने वालों में इस का दर्जा (पद) बुलन्द कर

और इस के बाद इस के पीछे रहने वालों में तू इस का जानशीन (प्रतिनिधि) बन जा। और ऐ रब्बुल् आलमीन हमें और इसे बख़्श दे और इस के लिए इस की क़ब्र को कुशादा कर दे और इस के लिए उस में रौशनी कर दे। (मुस्लिम २/६३४)

55 नमाज़े जनाज़ा की दुआ

(1)-156 «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ، وَارْحَمْهُ، وَعَافِهِ، وَاعْفُ عَنْهُ، وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ، وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ، وَاغْسِلْهُ بِالمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالبَرَدِ، وَنَقِّهِ مِنَ الخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ، وَأَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ، وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ، وَزَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ، وَأَدْخِلْهُ الجَنَّةَ، وَأَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ القَبْرِ، [وَعَذَابِ النَّارِ]».

ऐ अल्लाह इसको बख्श दे, और इस पर रहम् फर मा, और इसको आफियत् दे, और इस को माफ कर दे, और इस की अच्छी मेहमान नवाजी कर, और इस की क़ब्र को कुशादा कर दे, और इस के गुनाह को पानी, बर्फ और ओले से धुल् दे। और इस को गुनाहों से इस तरह साफ कर दे जैसे तू ने सफे

द कप्ड़े को मैल से साफ कर दिया है। और इसे बदले में इस के घर से अच्छा घर दे, और इस के घर वालों से अच्छे घर वाले दे और इस के जोड़े से अच्छा जोड़ा दे। और इस को जन्नत् में दाख़िल् फरमा। और इसको क़ब्र और जहन्नम् के अज़ाब से बचा ले। (मुस्लिम २ /६६३)

157-(2) «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا، وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا، وَصَغِيرِنَا وَكَبِيرِنَا، وَذَكَرِنَا وَأُنْثَانَا، اللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَى الإِسْلَامِ، وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الإِيمَانِ، اللَّهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ، وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهُ».

ऐ अल्लाह हमारे जिन्दों और मुर्दों, हमारे हाजिर और गायब, हमारे छोटों और बड़ों और हमारे मर्दों और औरतों को बख़्श दे। ऐ अल्लाह हम मे से जिसको तू जिंन्दा रखे उसको इस्लाम पर जिंन्दा रख् और हम में से जिसको तू मौत दे उसको ईमान पर मौ त दे। ऐ अल्लाह इसके बद्ले (अजश) से हम को महरूम न रख् और इस के बाद हम को गुमराह न कर। (इब्ने माजा १२४८०, अहमद २२३६८, देखिए सहीह़ इब्ने माजा १/२५१)

158-(3) «اللَّهُمَّ إِنَّ فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ فِي ذِمَّتِكَ، وَحَبْلِ جِوَارِكَ؛ فَقِهِ مِنْ فِتْنَةِ القَبْرِ، وَعَذَابِ النَّارِ، وَأَنْتَ أَهْلُ الوَفَاءِ وَالحَقِّ؛ فَاغْفِرْ لَهُ، وَارْحَمْهُ؛ إِنَّكَ أَنْتَ الغَفُورُ الرَّحِيمُ».

ऐ अल्लाह फलाँ बिन् फलाँ तेरे ज़िम्मे और तेरी पनाह में है। इस लिए तू इसे क़ब्र की आज़माइश् और जहन्नम के अज़ाब से बचा। तू वफा और हक़् वाला है। इस लिए इसे बख़्श दे और इस पर रहम कर। बेशक तू ही बख़्शने वाला बहुत ज्यादा मेहर बान है। (इब्ने माजा और देखिए सहीह़ इब्ने माजा १/२५१ और अबूदाऊद ३/२११)

159-(4) «اللَّهُمَّ عَبْدُكَ وَابْنُ أَمَتِكَ احْتَاجَ إِلَى رَحْمَتِكَ، وَأَنْتَ غَنِيٌّ عَنْ عَذَابِهِ؛ إِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِي حَسَنَاتِهِ، وَإِنْ كَانَ مُسِيئًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ».

ऐ अल्लाह यह तेरा बन्दा और तेरी बांदी का बेटा तेरी रह़मत् का मुह़्ताज हो गया है और तू इस को अज़ाब देने से बेनियाज़ है। अगर यह नेकी करने वाला था तो इस की नेकियों में इज़ांफा कर और अगर बुराई करने वाला था तो इस से दर्गुज़र

(माफ) फरमा। (हाकिम ने इसे रिवायत् किया और सहीह् कहा है और इमाम ज़हबी ने भी इस पर सहमति व्यक्त की है १/३५९ और देखिए शैख़ अल्बानी (रहि) की किताब अह्कामुल् जनाइज़् पृष्ठ १२५)

56 बच्चे पर नमाजें जनाज़ा के दौरान की दुआएं

160-(1) «اللَّهُمَّ أَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ القَبْرِ».

ऐ अल्लाह इसे क़ब्र के अज़ाब से बचा। (सईद बिन मुसैइब कहते हैं कि मैं ने अबू हुरैरा के पीछेएकऐसे बच्चे की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी जिस ने कभी कोई पाप नहीं किया था, मैं ने उन्हें इन शब्दों में दुआ करते हुये सुना।... मुवत्ता १/२८८, मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा २/२१७, बैहक़ी ४/६, और इसकी सनद को शुअैब अरनाऊत ने शरहुस-सुन्ना लिल-बग़वी की तहक़ीक़ में सहीह कहा है ५/२५७)

यह दुआ पढ़ना भी बेहतर है:

«اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ فَرَطًا وَذُخْرًا لِوَالِدَيْهِ، وَشَفِيعًا مُجَابًا، اللَّهُمَّ ثَقِّلْ بِهِ مَوَازِينَهُمَا، وَأَعْظِمْ بِهِ أُجُورَهُمَا، وَأَلْحِقْهُ بِصَالِحِ الْمُؤْمِنِينَ، وَاجْعَلْهُ فِي كَفَالَةِ إِبْرَاهِيمَ، وَقِهِ بِرَحْمَتِكَ عَذَابَ الْجَحِيمِ، وَأَبْدِلْهُ

دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ، وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِأَسْلَافِنَا، وَأَفْرَاطِنَا، وَمَنْ سَبَقَنَا بِالإِيمَانِ».

ऐ अल्लाह इसे इस के माँ बाप के लिए पहले जाकर मेहमान नवाज़ी की तैयारी करने वाला और ज़ख़ीरा बना दे और ऐसा सिफारिशी बना जिस की सिफारिश् क़बूल हो। ऐ अल्लाह इस के साथ इस के माँ बाप दोनों के तराज़ू को भारी कर दे और इस के जरिये से उन दोनों के सवाब को बढ़ा दे और इसे नेक मोमिनों के साथ मिला दे और इसे इब्राहीम की कफालत् में कर दे और अपनी रह़मत् से इसे जहन्नम के अज़ाब से बचा। ऐ अल्लाह इस को बदले में इस के घर से अच्छा घर और इस के घर वालों से अच्छा घर वाले दे।ऐ अल्लाह हमारे असलाफ और हमारे पहले जाकर मेहमान नवाज़ी की तैयारी करने वालों और हम से पहले गुज़रे हुऐ ईमान वालों को माफ कर दे। (देखिए : इब्ने कुदामा की मुगनी ३२४१६, शैख़ बिन् बाज़ (रहि) की किताब ((अद्दुरूसुल् मुहिम्मा लिआम्मतिल् उम्मा)) पृष्ठ १५)

161-(1) «اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا، وَسَلَفًا، وَأَجْرًا».

ऐ अल्लाह इसे हमारे लिए पहले से जाकर मेहमान

নवाजी के लिए तैयारी करने वाला और पेशरव् और सवाब का जरिया बना दे। (हसन् बसरी ताबई (रहि) बच्चे के जनाजां पर सूरा फातिहा और यह दुआ पढंते थे। बग़वी की किताब शरहुस्सुन्ना ५/३५७, मुसन्नफ अब्दुर्रज्जांकं हदीस न.६५८८, बुखारी ने इसे किताबुल जनाईजं में मुअल्लकं जिंक किया है, ६५ जनाजां पर फातिहा पढंने का बाब २२११३)

57 ताज़ियत् की दुआ (मैयित के घर वालों को किस तरह तसल्ली दें)

162-«إِنَّ لِلّٰهِ مَا أَخَذَ، وَلَهُ مَا أَعْطَى، وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُسَمًّى... فَلْتَصْبِرْ، وَلْتَحْتَسِبْ».

अल्लाह ही का है जो उस ने ले लिया और उसी का है जो उस ने अता किया और उस के पास हर चीज़ के लिए एक मुकर्रर वक्त है। इस लिए आप सब्र से काम लें और सवाब की नीयत् रखें। (बुख़ारी २/८० मुस्लिम २/६३६)

और अगर इस प्रकार कहे तो अच्छा है :

«أَعْظَمَ اللّٰهُ أَجْرَكَ، وَأَحْسَنَ عَزَاءَكَ، وَغَفَرَ لِمَيِّتِكَ».

अल्लाह तआला आप को बहुत ज्यादा सवाब दे और आप लोगों को अच्छी तरह तसल्ली दे, और आप के मरने वाले् को बख़्श दे। (इमाम नववी की किताब अल् अज़्कार पृष्ठ : १२६)

58 मैयित को क़ब्र में दाख़िल् करते समय की दुआ

163-«بِاسْمِ اللهِ، وَعَلَى سُنَّةِ رَسُولِ اللهِ».

अल्लाह के नाम से और रसूलुल्लाह भ की सुन्नत के मुताबिक़ तुम्हें क़ब्र में दाख़िल कर रहा हूँ। (अबूदाऊद ३/३१४ सनद् सहीह़ है। मुसनद् अह़् मद् के शब्द यह हैं : «بِسْمِ اللهِ وَعَلَى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللهِ» और इस की सनद् भी सहीह़ है)

59 मैयित को दफन् करने के बाद की दुआ

164- «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ، اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ».

ऐ अल्लाह इसे माफ कर दे, ऐ अल्लाह इसे साबित क़दम रख । (रसूलुल्लाह ﷺ जब मुर्दे को दफन करने से फारिग़ होते तो उस के पास ठहर कर फरमातेः (अपने भाई के लिए अल्लाह से बख़्शिश् माँगों और इस के लिए साबित् क़दम् रहने की दुआ करो क्योंकि अब इस से सवाल किया जायेगा । अबूदाऊद ३/३१५ और इमाम ह़ाकिम ने इसे रिवायत करके सह़ीह़ कहा है और इमाम ज़हबी ने इस पर सहमति व्यक्त की है १/३७०)

60 क़ब्रों की ज़ियारत् की दुआ

165-«السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ، وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ، [وَيَرْحَمُ اللهُ الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنَّا وَالْمُسْتَأْخِرِينَ]، أَسْأَلُ اللهَ لَنَا وَلَكُمُ العَافِيَةَ».

ऐ इस घर वाले (क़ब्र तथा बर्ज़ख़ी घर वाले) मोमिनो और मुसलमानो ! तुम पर सलाम हो और हम भी अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम से मिलने वाले हैं । [और हम में से पहले जाने वालों पर और बाद में जाने वालों पर अल्लाह रह़्म फरमाए ।] मैं अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह से आ़फियत् का सवाल करता हूं । (मुस्लिम २/६७१, इब्ने माजा १२४९४,

और शब्द उन्हीं के हैं और बुरैदा रावी हैं, दोनों बरेकिटों के बीच मुस्लिम में आइशा रजिंयल्लाहु अन्हा की हदीस के शब्द हैं २२६७१)

61 आन्धी की दुआएं

166-(1) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا».

ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस की भलाई का सवाल करता हूँ और इस की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ। (अबूदाऊद ४/३२६ इब्ने माजा २/१२२८ और देखिए सह़ीह़ इब्ने माजा २/३०५)

167-(2) «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا، وَخَيْرَ مَا فِيهَا، وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ مَا فِيهَا، وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ».

ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस की भलाई का और उस चीज़ की भलाई का जो इस में है और उस चीज़ की भलाई का जिस के साथ यह भेजी गई है और मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस की बुराई से और उस चीज़ की बुराई से जो इस में है और उस चीज़ की बुराई से जिस के साथ यह भेजी गई है। (मुस्लिम २/६१६ बुख़ारी ४/७६)

बादल गरजते समय पढ़ी जाने वाली दुआ

अब्दुल्लाह बिन् जुंबैर (त) जब बादल की गरज् सुनते तो बातें छोड़ देते और यह दुआ पढ़ते :

168-«سُبْحَانَ الَّذِي يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ، وَالمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ».

१६८. पाक है वह ज़ात बादल् की गरज जिस की तस्बीह़ बयान करती है उस की तारीफ के साथ और फरिश्ते भी उस के डर से उस की तस्बीह़ पढ़ते हैं । (मोवत्ता २/९९२ शैख़ अल्बानी (रहि) फरमाते हैं कि सह़ाबी से इस दुआ की सनद् सह़ीह़ है)

बारिश् माँगने की कुछ दुआएँ

169-(1) «اللَّهُمَّ اسْقِنَا غَيْثًا مُغِيثًا، مَرِيئًا مَرِيعًا، نَافِعًا غَيْرَ ضَارٍّ، عَاجِلًا غَيْرَ آجِلٍ».

ऐ अल्लाह हमें ऐसी बारिश् अता कर जो मदद् गार, खुश्गवार, सरसब्ज़ करने वाली और फायदा पहुँचाने वाली हो, नुक़्सान देने वाली न हो, जल्दी

आने वाली हो न कि देर से आने वाली। (अबूदाऊद १/३०३, शैख अलबानी ने सहीह अबू दाऊद में इस की सनद को सहीह़ कहा है १/२१६)

170-(2) «اللَّهُمَّ أَغِثْنَا، اللَّهُمَّ أَغِثْنَا، اللَّهُمَّ أَغِثْنَا».

ऐ अल्लाह हमें बारिश् दे। ऐ अल्लाह हमें बारिश् दे। ऐ अल्लाह हमें बारिश् दे। (बुख़ारी १/२२४ मुस्लिम २/६१३)

171-(3) «اللَّهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ، وَبَهَائِمَكَ، وَانْشُرْ رَحْمَتَكَ، وَأَحْيِ بَلَدَكَ الْمَيِّتَ».

ऐ अल्लाह अपने बन्दों और अपने चौपायों को पानी पिला और अपनी रह़मत् को फैला दे और अपने मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दे। (अबूदाऊद १/३०५ और शैख अलबानी ने सहीह अबूदाऊद में इसे हसन कहा है १२२१८)

64 बारिश् उतरते समय की दुआ

172-«اللَّهُمَّ صَيِّبًا نَافِعًا».

ऐ अल्लाह इसे नफा देने वाली बारिश् बना दे। (बुख़ारी फतहुल् बारी के साथ २/५१८)

65 बारिश् उतरने के बाद की दुआ

173-«مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللهِ وَرَحْمَتِهِ».

हम पर अल्लाह के फज़्ल और उस की रह़मत् से बारिश् हुई । (बुख़ारी १/२०५ मुसिलम १/८३)

66 बारिश् रुकवाने के लिए दुआ

174-«اللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا، اللّٰهُمَّ عَلَى الآكَامِ وَالظِّرَابِ، وَبُطُونِ الأَوْدِيَةِ، وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ».

ऐ अल्लाह हमारे आस पास बारिश् बरसा और (अब) हम पर न बरसा । ऐ अल्लाह टीलों और पहाड़ियों पर और वादियों के बीच और पेड़ों के उगने की जगहों पर बारिश् बरसा । (बुख़ारी १/२२४ मुस्लिम २/६१४)

67 नया चाँद देखने की दुआ

175-«اللهُ أَكْبَرُ، اللّٰهُمَّ أَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالأَمْنِ وَالإِيمَانِ، وَالسَّلَامَةِ وَالإِسْلَامِ، وَالتَّوْفِيقِ لِمَا تُحِبُّ رَبَّنَا وَتَرْضَى، رَبُّنَا وَرَبُّكَ اللهُ».

१७५. अल्लाह सब से बड़ा है। ऐ अल्लाह तू इसे हम पर तुलू कर अम्न, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ और उस चीज़ की तौफीक़ के साथ जिस को तू पसन्द करता है ऐ हमारे रब और जिस से तू खुश होता है। (ऐ चाँद) हमारा रब् और तेरा रब् अल्लाह है। (त्रिमिज़ी ५/५०४ दारमी १/३३६ शब्द दार मी के हैं और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५७)

68 रोज़ा खोलते समय की दुआयें

(1)-176 «ذَهَبَ الظَّمَأُ، وَابْتَلَّتِ العُرُوقُ، وَثَبَتَ الأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللهُ».

प्यास चली गई और रगें तर हो गईं और अगर अल्लाह ने चाहा तो अज्र (सवाब) साबित् हो गया। (अबूदाऊद २/३०६ और देखिए सहीहुल् जामिअ् ४/२०९)

(2)-177 «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ أَنْ تَغْفِرَ لِي».

ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरी उस रहमत के जरिये से जिस ने हर चीज़ को घेर रखा है यह सवाल करता हूँ कि तू मुझे बख़्श दे। (इब्ने माजा १/५५७, यह दुआ

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन् आस ﷺ रोज़ा खोलते समय पढा कर ते थे, हाफिज़ ने अल्अज़्कार की तख़रीज में इसे ह़सन् कहा है। देखिए अज़कार की शरह़ ४/३४२)

69 खाना खाने से पहले की दुआ

178-(1) रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से कोई खाना खाने लगे तो पढ़े :

«بِاسْمِ اللهِ».

अल्लाह के नाम से खाना शुरु करता हूँ।

और अगर शुरू में कहना भूल जाए तो कहे :

«بِاسْمِ اللهِ فِي أَوَّلِهِ وَآخِرِهِ».

अल्लाह के नाम से (खाना शुरु करता हूँ) इस के शुरू में और इस के आख़िर में। (अबूदाऊद ३/३४७ त्रिमिज़ी ४/२८८ और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी २/१६७)

179-(2) जिसे अल्लाह तआला खाना खिलाए वह यह दुआ पढ़े :

«اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ، وَأَطْعِمْنَا خَيْرًا مِنْه».

ऐ अल्लाह हमारे लिए इस में बरकत् दे और हमें इस से बेहतर खिला।

और जिसे अल्लाह तआला दूध पिलाए वह यह दुआ पढ़े:

«اللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ، وَزِدْنَا مِنْهُ».

ऐ अल्लाह हमारे लिए इस में बरकत् अता कर और हमें इस से भी ज्यादा दे। (त्रिमिज़ी ५/५०६ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५८)

70 खाने से फारिग़ होने के बाद की दुआ

180-(1) «الحَمْدُ لِلهِ الَّذِي أَطْعَمَنِي هَذَا، وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلَا قُوَّةٍ».

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मुझे यह खाना खिलाया और मेरी किसी भी ताक़त् के बिना मुझे यह खाना दिया। (अबूदाऊद, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५९)

181-(2) «الحَمْدُ لِلهِ حَمْدًا كَثِيرًا، طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ، غَيْرَ [مَكْفِيٍّ

وَلَا] مُوَدَّعٍ، وَلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا».

तमाम तारीफ अल्लाह के लिए है, बहुत ज्यादा, पाकीज़ा तारीफ जिस में बरकत् की गई है, जिसे न काफी समझा गया है, न विदा किया गया है और न उस से बेनियाजं हुआ जा सकता है ऐ हमारे रब् ।

(बुख़ारी ६/२१४ त्रिमिज़ी ५/५०७, शब्द त्रिमिजी के हैं)

71 मेहमान की मेज़बान के लिए दुआ

182- «اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيمَا رَزَقْتَهُمْ، وَاغْفِرْ لَهُمْ، وَارْحَمْهُمْ».

ऐ अल्लाह तू ने इन्हें जो कुछ दिया है उस में इन के लिए बरकत् फरमा और इन्हें बख़्श दे और इन पर रहम फरमा । (मुस्लिम ३/१६१५)

72 जो आदमी कुछ पिलाए या पिलाना चाहे उस के लिए दुआ

183-«اللَّهُمَّ أَطْعِمْ مَنْ أَطْعَمَنِي، وَاسْقِ مَنْ سَقَانِي».

ऐ अल्लाह जिस ने मुझे खिलाया तू उसे खिला और

जिस ने मुझे पिलाया तू उस को पिला। (मुस्लिम ३/१२६)

73 किसी के यहाँ रोज़ा इफ्तारी करने की दुआ

184-«أَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُونَ، وَأَكَلَ طَعَامَكُمُ الأَبْرَارُ، وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ المَلَائِكَةُ».

तुम्हारे यहाञ रोज़ेदार इफतार करते रहें और तुम्हारा खाना नेक लोग खाते रहें और फरिश्ते तुम्हारे लिए दुआयें करते रहें। (अबूदाऊद ३/३६७, इब्ने माजा १२५५६, नसाई अमलुल७यौमि वल७लैला न.२९६७२९८, और उन्हों ने बयान किया है कि नबी भ जब किसी के घर इफतार करते थे यह दुआ पढ़ते थे। और शैख़ अल्बानी (रहि) ने सहीह अबू दाऊद में इसे सहीह़ कहा है २२७३०)

74 दुआ जब खाना हाजिंर हो और रो ज़ादार रोज़ा न खोले

185-«إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ فَلْيُجِبْ، فَإِنْ كَانَ صَائِمًا فَلْيُصَلِّ، وَإِنْ

كَانَ مُفْطِرًا فَلْيَطْعَمْ».

रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से किसी को (खाने की) दावत दी जाए तो उसे क़बूल कर नी चाहिए, अगर वह रोज़ादार हो तो उसे (दावत दे ने वाले के लिए) दुआ करनी चाहिए और अगर रो ज़े से न हो तो उसे खाना चाहिए। (मुस्लिम २/१०५४)

75 रोज़ादार को जब कोई गाली दे तो वह क्या कहे ?

186-«إِنِّي صَائِمٌ، إِنِّي صَائِمٌ».

मैं रोज़े से हूँ, मैं रोज़े से हूँ। (बुखारी फतहुल् बारी के साथ ४/१०३ मुस्लिम २/८०६)

76 पहला फल देखने के समय की दुआ

187-«اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي ثَمَرِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِي مَدِينَتِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِي صَاعِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِي مُدِّنَا».

১৮৭. ऐ अल्लाह हमारे लिए हमारे फल् में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे शहर में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे साअ़ में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे मुद् में (अर्थात नाप, तौल के पैमानों में) बर कत् दे। (मुस्लिम २/१०००)

77 छींक की दुआ

188-«إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ، فَلْيَقُلِ: الحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلْيَقُلْ لَهُ أَخُوهُ أَوْ صَاحِبُهُ: يَرْحَمُكَ اللّٰهُ، فَإِذَا قَالَ لَهُ: يَرْحَمُكَ اللّٰهُ، فَلْيَقُلْ: يَهْدِيكُمُ اللّٰهُ، وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ».

१८८. रसूल ﷺ ने फरमाया : जब तुम में से किसी को छींक आए तो उसे कहना चाहिए :

«الحَمْدُ لِلّٰهِ».

हर किस्म की तारीफ अल्लाह ही के लिए है।

और उस के दोस्त या भाई को कहना चाहिए :

«يَرْحَمُكَ اللّٰهُ».

अल्लाह तुझ पर रहम् करे ।

और जब उस का भाई उसे

يَرْحَمُكَ اللهُ

कहे तो वह उसे यह कहे :

«يَهْدِيكُمُ اللهُ، وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ».

अल्लाह तुम्हें हिदायत् दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे । (बुख़ारी ७/१२५)

78 जब काफिर छींकते समय अल् ह़म्दुलिल्लाह कहे तो उस के लिए क्या कहा जाए

189-«يَهْدِيكُمُ اللهُ، وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ».

१८९. अल्लाह तुम को हिदायत् दे और तुम्हारी ह़ालत् संवार दे । (त्रिमिज़ी ५/८२, अहमद ४२४००, अबू दाऊद ४२३०८ और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी २/३५४)

79 शादी करने वाले के लिए दुआ

190-«بَارَكَ اللهُ لَكَ، وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ».

अल्लाह तेरे लिए बरकत् करे और तुझ पर बर कत् करे और तुम दोनों को भलाई पर इकट्ठा करे।

(अबूदाऊद, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी १/३१६)

80 शादी करने और सवारी ख़रीदने वाले की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से को ई आदमी किसी औरत से शादी करे या लौंडी ख़र ीदे तो यह कहे:

191-«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا، وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ».

ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस की भलाई का सवाल कर ता हूँ और उस चीज़ की भलाई का सवाल करता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है और तेरी पनाह माँगता हूँ इस के शर से और उस चीज़ के शर से

जिस पर तू ने इसे पैदा किया है ।

और जब कोई ऊँट (या जानवर) ख़रीदे तो उस की कौहान की चोटी पकड़ कर यही दुआ पढ़े । (अबूदाऊद २/२४८ इब्ने माजा १/६१७ और देखिए सहीह़ इब्ने माजा १/३२४)

81 बीवी के पास आने से पहले की दुआ

192-«بِاسْمِ اللهِ، اللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ، وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا».

अल्लाह के नाम से । ऐ अल्लाह हमें शैतान से बचा और जो (औलाद) हमें अता करे उसे भी शैतान से बचा । (बुख़ारी ६/१४१ मुस्लिम २/१०२८)

82 गुस्सा आ जाने के वक़्त की दुआ

193-«أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ».

मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ । (बुख़ारी ७/९९ मुस्लिम ४/२०१५)

83 मुसीबत् में मुब्तला आदमी को देखने के वक़्त की दुआ

194- «الحَمْدُ لِلهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ، وَفَضَّلَنِي عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيلًا».

तमाम तारीफ उस अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे उस चीज़ से आफियत् दी जिस में तुझे मुब्तला किया है और उस ने मुझे अपने पैदा किए हुए बहुत से लोगों पर फज़ीलत् बख़्शी। (त्रिमिज़ी ५/४९४, ५२४९३ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५३)

84 मजलिस् में पढ़ने की दुआ

अब्दुल्लाह बिन उमर (रजिंयल्लाहु अन्हुमा) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के लिए एक ही मजलिस में उठने से पहले सौ (१००) बार यह दुआ शुमार की जाती थी :

«رَبِّ اغْفِرْ لِي، وَتُبْ عَلَيَّ؛ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الغَفُورُ».

ऐ मेरे रब् मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा क़बूल फर

मा बेशक् तू बहुत तौबा क़बूल करने वाला, बहुत ज्यादा बख़्शने वाला है। (त्रिमिज़ी वगैंरह और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१५३ और सहीह़ इब्ने माजा २/३२१ श्ब्द त्रिमिज़ी के हैं)

85 मजलिस के गुनाह दूर करने की दुआ (भतार्थ म मठ्ंत्तपवपं)

196-«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ».

ऐ अल्लाह तू पाक है और तेरे लिए हर प्रकार की तारीफ है। मैं शहादत् देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं। मैं तुझ से माफी चाहता हूँ और तुझ से तौबा करता हूँ। (त्रिमिज़ी, अबूदाऊद, नसाई, इब्नेमाजा और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१५३, आइशा (रजि) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ किसी मजलिस् में बैठते या कुर आन पढ़ते या नमाज़ पढ़ते तो उसका इख़्तिताम इस दुआ पर करते थे ..... नसाई की अमलुल यौम वल७लैला न.३०८, मुसनद् अह्मद् ६/७७, डा.

फारुकं हमादा ने नसाई की अमलुल यौमि वल७लै ला की तहकीकं पृष्ठ २७३ में इसे सहीह कहा है)

86 (ग़फरल्लाहु लका) यानी अल्लाह तुझे माफ फरमाये कहने वाले के लिए दुआ

197-«وَلَكَ».

और तुझे भी माफ करे। (मुस्नद् अह्मद् ५/८२, नसाई की अमलुल यौम वल७लैला पृष्ठ :२१८ न.४२१, डा. फारुकं हमादा की तहकीक)

87 अच्छा सुलूक करने वाले के लिए दुआ

198-«جَزَاكَ اللهُ خَيْرًا».

अल्लाह तआला तुझे बेहतरीन बदला दे। (त्रिमिज़ी हदीस २०३५ और देखिए सहीहुल् जामिअ् हदीस न० – ६२४४ और सहीह त्रिमिज़ी २/२००)

दज्जाल से महफूज़ रहने के वजांईफं

199- «مَنْ حَفِظَ عَشْرَ آيَاتٍ مِنْ أَوَّلِ سُورَةِ الكَهْفِ، عُصِمَ مِنَ الدَّجَّالِ»، وَالِاسْتِعَاذَةُ بِاللهِ مِنْ فِتْنَتِهِ عَقِبَ التَّشَهُّدِ الأَخِيرِ مِنْ كُلِّ صَلَاةٍ.

जो आदमी सूरा कहफ् के शुरू की दस् आयतें याद कर ले वह दज्जाल से महफूज़ (सुरक्षित) रहेगा। (मुस्लिम १/५५५, और एक रिवायत में है सूरा कहफ् की आखिरी दस आयतें मुस्लिम १२५५६)

हर नमाज़ के आख़िरी तशह्हुद् के बाद दज्जाल के फित्ने से पनाह माँगना। (देखिए इसी किताब में दुआ न०–५५,५६)

(मुझे तुम से अल्लाह के लिए मोहब्बत् है) कहने वाले के लिए दुआ

200-«أَحَبَّكَ الَّذِي أَحْبَبْتَنِي لَهُ».

वह हस्ती (अल्लाह) तुझ से मोहब्बत् करे जिस के लिए तूने मुझ से मोहब्बत् की। (अबूदाऊद ४/३३३, शैख अलबानी ने सहीह सुनन अबू दाऊद ३२९६५ में इसे हसन कहा है)

90 माल व दौलत पेश करने वाले के लिए दुआ

201-«بَارَكَ اللهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ».

अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे परिवार और माल व दौलत में बरकत् दे। (बुख़ारी फतहुल् बारी के साथ ४/८८)

91 क़र्ज़ अदा करते समय क़र्ज़ देने वाले के लिए दुआ

202-«بَارَكَ اللهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ؛ إِنَّمَا جَزَاءُ السَّلَفِ: الحَمْدُ، وَالأَدَاءُ».

अल्लाह तआला तेरे लिए तेरे परिवार और माल में बरकत् दे। क़र्ज का बदला तो सिर्फ तारीफ (शुक्रिया) और अदा करना है। (नसाई की अमलुल यौ

मि वलञ्लैला पृष्ठ :३००, इब्ने माजा २/८०९ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/५५)

92 शिर्क से डरने की दुआ

203-«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أُشْرِكَ بِكَ وَأَنَا أَعْلَمُ، وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا أَعْلَمُ».

ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस बात से कि मैं जानते हुए तेरे साथ किसी को शरीक बनाऊँ। और मैं तुझ से बख़शिश् माँगता हूँ उन गुनाहों से जो मैं नहीं जानता। (मुस्नद अहमद ४/४०३ और देखिए सहीहुल् जामिअ् ३/२३३ और अलबानी की सहीह तरग़ीब व तरहीब १/१९)

93 बरकत की दुआ देने वाले के लिए दुआ

204-«وَفِيكَ بَارَكَ اللهُ».

अल्लाह तुझे भी बरकत् दे। (इब्नुस्सुन्नी पृष्ठ १३८ हदीस न०–२७८ और देखिए इब्नुल् क़ैयिम् की किताब अल्वाबिलुस्सैयिब् पृष्ठ : ३०४, तहकीकं बशीर मुहम्मद ऊयून)

94 बद् फाली को नापसन्द करने की दुआ

205-«اللَّهُمَّ لَا طَيْرَ إِلَّا طَيْرُكَ، وَلَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ».

ऐ अल्लाह नहीं है कोई नहूसत् मगर तेरी ही नहूसत् (यानी तेर ही हुक्म से) और नही है कोई भलाई मगर तेरी ही भलाई और तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं। (अह्मद्२/२२०, इब्नुस्सुन्नी न. २९२, और अलबानी ने अल्अहादीसुस्सहीहा ३२५४, न. १०६५ में इसे सहीह कहा है, किन्तु फाल (नेक फाली) को नबी भ पसन्द करते थे, इसी लिए एक दफा एक आदकी के मुज्ह से आप ने एक अच्छी बात सुनी तो आप को अच्छी लगी, चुनांचे फरमाया: तेरी फाल हम ने तेरे मुज्ह से ली है। अबू दाऊद, अहमद, शैख अलबानी ने अल७अहादीसुस७सहीहा २२३६३ में इसे सहीह कहा है और इसकी निसबत अखलाकुंन७नबी पृष्ठ : २७० में अबुश७शैख की ओर की है)

95 सवारी पर सवार होने की दुआ

206--«بِاسْمِ اللهِ، وَالحَمْدُ لِلّٰهِ، ﴿سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٣﴾ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ﴾، الحَمْدُ لِلّٰهِ، الحَمْدُ لِلّٰهِ،

الحَمْدُ لِلّٰهِ، اللهُ أَكْبَرُ، اللهُ أَكْبَرُ، اللهُ أَكْبَرُ، سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي؛ فَاغْفِرْ لِي؛ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ».

अल्लाह के नाम से। हर किस्म की तारीफ अल्लाह के लिए है। पाक है वह ज़ात जिस ने इस (सवारी) को हमारे क़ाबू में कर दिया है हालाँकि हम इसे अपने कांबू में नहीं कर सकते थे और हम अपने रब ही की ओर लौट कर जाने वाले हैं। सब तारीफ अल्लाह के लिए है। सब तारीफ अल्लाह के लिए है। सब तारीफ अल्लाह के लिए है। अल्लाह सब से बडा है। अल्लाह सब से बडा है। अल्लाह सब से बडा है। ऐ अल्लाह तू पाक है। वाकई मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया है, पस् मुझे बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई गुनाहों को बख़्शने वाला नहीं। (अबूदाऊद ३/३४ त्रिमिज़ी ५/५०१ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५६)

96 सफर (यात्रा) की दुआ

207-اللهُ أَكْبَرُ، اللهُ أَكْبَرُ، اللهُ أَكْبَرُ، ﴿سُبْحَانَ ٱلَّذِى سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا

وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٣﴾ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ﴾»، «اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هَذَا البِرَّ وَالتَّقْوَى، وَمِنَ العَمَلِ مَا تَرْضَى، اللَّهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هَذَا، وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ، وَالخَلِيفَةُ فِي الأَهْلِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ المَنْظَرِ، وَسُوءِ المُنْقَلَبِ فِي المَالِ وَالأَهْلِ».

अल्लाह सब से बडा है। अल्लाह सब से बडा है। अल्लाह सब से बडा है। पाक है वह जांत जिस ने इस को हमारे क़ाबू में कर दिया हालाँकि हम इसे अपने क़ाबू में न कर सकते थे। ऐ अल्लाह हम अपने इस सफर (यात्रा) में तुझ से नेकी और तक़वा और ऐसे अमल् का सवाल करते हैं जिसे तू पसन्द करे। ऐ अल्लाह हमारा यह सफर हम पर आसान कर दे और इस की दूरी को हमारे लिए समेट दे। ऐ अल्लाह तू ही सफर में (हमारा) साथी और घर वालों में जानशीन् है। ऐ अल्लाह मैं तुझ से सफर की मशक़्क़त् से और उसके तकलीफदेह मन्जंर से और माल तथा घर वालों में बुरी तबदीली (या बुरी हालत में लौटने) से तेरी पनाह चाहता हूँ।

और जब सफर से घर की तरफ वापस् लौटे तो ऊपर की दुआ पढ़े और उस के साथ यह दुआ भी पढ़े :

«آيِبُونَ، تَائِبُونَ، عَابِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ».

हम वापस लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत् करने वाले और अपने रब् ही की तारीफ करने वाले हैं । (मुस्लिम २/९९८)

97 किसी गाँव या शहर में दाख़िल् होने की दुआ

208-«اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظْلَلْنَ، وَرَبَّ الأَرَضِينَ السَّبْعِ وَمَا أَقْلَلْنَ، وَرَبَّ الشَّيَاطِينِ وَمَا أَضْلَلْنَ، وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ؛ أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ القَرْيَةِ، وَخَيْرَ أَهْلِهَا، وَخَيْرَ مَا فِيهَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ أَهْلِهَا، وَشَرِّ مَا فِيهَا».

ऐ अल्लाह ऐ सातों आसमानों के रब् और उन चीज़ों के रब् जिन पर यह साया कर रखे हैं, और सातों ज़मीनों और उन चीज़ों के रब् जिन को यह उठा

रखे हैं, और शैतानों और उन चीज़ों के रब् जिन्हें इन्हों ने गुमराह किया है, और हवाओं के रब् और उन चीजों के जो उन्हों ने उड़ायी हैं। मैं तुझ से इस गावँ की भलाई का और इस गावँ में रहने वालों की भलाई का और इस में मौजूद चीज़ों की भलाई का सवाल करता हूँ,और मैं इस गावँ की बुराई और इस के बासियों की बुराई से और उन चीज़ों की बुर ाई से तेरी पनाह माँगता हूँ जो इस में हैं। (इमाम ह़ाकिम् ने इसे रिवायत् करके सह़ीह़ कहा है और इमाम ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है २/१००, इब्नुस्सुन्नी न. ५२४, हाफिज़ ने अज़कार की तखरीज में इसे हसन कहा है ५२१५४, शैख़ बिन् बाज़ (रह़ि) ने फरमाया: नसाई ने इसे ह़सन् सनद के साथ रिवायत किया है, देखिए तुह़फतुल् अख़्यार पृष्ठ ३७)

98 बाज़ार में दाख़िल् होने की दुआ

209-«لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، يُحْيِي وَيُمِيتُ، وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ، بِيَدِهِ الخَيْرُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ».

अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक़् नहीं। वह

अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । उसी का मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है । वह ज़िन्दा करता है और मारता है । और वह ज़िन्दा है उसे मौत नहीं आती उसी के हाथ में सब भलाई है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है । (त्रिमिज़ी ५/२९१ ह़ाकिम् १/५३८, शैख अलबानी ने सहीह इब्ने माजा २२२१ और सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१५२ में इसे हसन कहा है)

99 सवारी के फिसल्ने या गिरने के समय की दुआ

210-«بِاسْمِ اللهِ».

अल्लाह के नाम से । (अबूदाऊद ४/२९६ और शैख अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद ३२९४१ में सहीह कहा है)

100 मुसाफिर की मुक़ीम के लिए दुआ

211-«أَسْتَوْدِعُكُمُ اللهَ الَّذِي لَا تَضِيعُ وَدَائِعُهُ».

मैं तुम्हें उस अल्लाह के हवाले करता हूँ जिस के

हवाले की हुई चीज़ें कभी नष्ट और बरबाद नहीं हो तीं। (अह़मद् २/४०३, इब्ने माजा २/९४३ और देखिए सह़ीह़ इब्ने माजा २/१३३)

101 मुक़ीम आदमी की मुसाफिर के लिए दुआ

212-(1) «أَسْتَوْدِعُ اللهَ دِينَكَ، وَأَمَانَتَكَ، وَخَوَاتِيمَ عَمَلِكَ».

मैं तेरे दीन, तेरी अमानत् और तेरे आखिरी अमल को अल्लाह के हवाले करता हूँ। (अह़मद् २/७ त्रिमिज़ी ५/४९९ और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी २/१५५)

213-(2) «زَوَّدَكَ اللهُ التَّقْوَى، وَغَفَرَ ذَنْبَكَ، وَيَسَّرَ لَكَ الخَيْرَ حَيْثُمَا كُنْتَ».

अल्लाह तआला तुझे तक़्वा अता करे और तेरे गुनाह बख़्शे और तू जहाँ कहीं भी रहे अल्लाह तआला तेरे लिए भलाई आसान कर दे। (त्रिमिज़ी और देखिए सह़ीह़ त्रिमिज़ी ३/१५५)

102 सफर के दौरान तस्बीह और तक्बीर

215- قَالَ جَابِرٌ رضي الله عنه: «كُنَّا إِذَا صَعِدْنَا كَبَّرْنَا، وَإِذَا نَزَلْنَا سَبَّحْنَا».

जाबिर رضي الله عنه फरमाते हैं कि जब हम ऊपर चढ़ते तो तक्बीर ((अल्लाहु अक्बर)) पढ़ते और नीचे उतरते तो तस्बीह ((सुब्हानल्लाह)) कहते थे। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ६/१३५)

103 मुसाफिर की दुआ जब वह सुबह करे

215-«سَمَّعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللهِ، وَحُسْنِ بَلَائِهِ عَلَيْنَا، رَبَّنَا، صَاحِبْنَا، وَأَفْضِلْ عَلَيْنَا، عَائِذًا بِاللهِ مِنَ النَّارِ».

एक सुनने वाले ने हमारी ओर से अल्लाह की तारीफ और उस के हम पर जो अच्छे इनआमात और एह़सानात हैं उन का शुक्र सुना। ऐ हमारे रब् हमारा साथी बन जा और हम पर फज़्ल फरमा। आग से अल्लाह की पनाह माँगते हुए (हम) यह दुआ करतै हैं। (मुस्लिम ४/२०८६)

104 सफर के दौरान या बिना सफर के किसी जगह ठहरने की दुआ

216- «أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ».

मैं अल्लाह के पूरे कलिमात के साथ पनाह चाहता हूँ उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की है। (मुस्लिम ४/२०८०)

105 सफर से वापसी की दुआ

तअ वधिथत्रथ्थपन ﷺ किसी जंग या हज्ज से वापस लौटते तो हर ऊँची जगह पर तीन बार अल्लाहु अक्बर कहते, फिर यह दुआ पढ़ते :

217- «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، آيِبُونَ، تَائِبُونَ، عَابِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ، صَدَقَ اللهُ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ».

अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत् के लायक् नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए मुल्क है। उसी के लिए तारीफ है और वह हर

चीज़ पर क़ादिर है। हम वापस लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत् करने वाले और केवल अपने रब् की तारीफ करने वाले हैं। अल्लाह ने अपना वादा सच्चा कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद् की और अकेले अल्लाह ने सारे लश्करों को शिकस्त दी (पराजित कर दिया) (बुख़ारी ७/१६३ मुस्लिम २/९८०)

106 खुश् खबरी या ना पसन्दीदा बात सुनने वाला क्या कहे ?

218- रसूलुल्लाह भ के पास अगर कोई खुश करने वाली खबर् आती तो आप फरमाते :

«الحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي بِنِعْمَتِهِ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ».

सब तारीफ अल्लाह ही के लिए है जिस के इन्आम से अच्छे काम मुकम्मल् होते हैं।

और अगर आप को कोई ना पसन्दीदा मामला पेश आता तो फरमाते :

«الحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ».

हर ह़ाल में तमाम तारीफ अल्लाह ही के लिए है। (इब्नुस्सुन्नी की अमलुल यौमि वल७लैला, इमाम ह़ाकिम् ने इसे रिवायत् करके सह़ीह़ कहा है १/४९९, शैख़ अल्बानी रहिमहुल्लाह़ ने सह़ीहुल् जामिअ़् में इसे सह़ीह़ कहा है ४/२०१)

107 रसूलुल्लाह ﷺ पर दरूद भेजने की फज़ीलत्

219-(1) قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जो आदमी मुझ पर एक बार (दरूद भेजे गा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें नाजिंल फरमाये गा। (मुस्लिम १/२८८)

220-(2) وَقَالَ ﷺ: «لَا تَجْعَلُوا قَبْرِي عِيدًا، وَصَلُّوا عَلَيَّ؛ فَإِنَّ صَلَاتَكُمْ تَبْلُغُنِي حَيْثُ كُنْتُمْ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : ((मेरी क़ब्र को मेलागाह न् बनाओ और मुझ पर दरुद भेजो। तुम जहाँ भी हो तुम्हारा दरुद मुझे पहुँच जाता है। (अबूदाऊद २/२१८ अह्मद् २/३६७, शैख़ अल्बानी रहि़ ने सह़ीह़ अबू दाऊद में इसे सह़ीह़ कहा है २/३८३)

221-(3) وَقَالَ ﷺ: «البَخِيلُ مَنْ ذُكِرْتُ عِنْدَهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : बख़ील (कन्जूस) वह है जिस के पास मेरा जिक्र हो और वह मुझ पर दरुद न भेजे । (त्रिमिज़ी ५/५५१ और देखिए सहीहुल् जामिअ् ३/२५ और सहीह़ त्रिमिज़ी ३/१७७)

222-(4) وَقَالَ ﷺ: «إِنَّ لِلّٰهِ مَلَائِكَةً سَيَّاحِينَ فِي الأَرْضِ يُبَلِّغُونِي مِنْ أُمَّتِي السَّلَامَ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला के कुछ ऐसे फरिश्ते हैं जो ज़मीन में घूमते फिरते हैं वह मेरे उम्मतियों का सलाम मुझे पहुँचाते हैं । (नसाई, ह़ाकिम् २/४२१ और इस ह़दीस को शैख़ अल्बानी (रहि) ने सहीह़ कहा है देखिए सहीह़ नसाई १/२७४)

223-(5) وَقَالَ ﷺ: «مَا مِنْ أَحَدٍ يُسَلِّمُ عَلَيَّ إِلَّا رَدَّ اللّٰهُ عَلَيَّ رُوحِي حَتَّى أَرُدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : कोई आदमी जब भी मुझ पर सलाम पढ़ता है तो अल्लाह तआला मेरी रूह़ (प्राण) को मेरे बदन् में वापस लौटा देता है

ताकि मैं उसे सलाम का जवाब दूँ। (अबूदाऊद ह़दीस न०–२०४१ और शैख़ अल्बानी (रहि) ने इस ह़दीस को ह़सन् कहा है देखिए सह़ीह़ अबूदाऊद १/३८३)

108 सलाम को फैलाना

224-(1) قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «لَا تَدْخُلُوا الجَنَّةَ حَتَّى تُؤْمِنُوا، وَلَا تُؤْمِنُوا حَتَّى تَحَابُّوا، أَوَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى شَيْءٍ إِذَا فَعَلْتُمُوهُ تَحَابَبْتُمْ؟! أَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : तुम जन्नत में दाख़िल् नहीं हो सकते यहाँ तक कि तुम मोमिन् बनो और तुम मोमिन् नहीं होगे यहाँ तक कि आपस में एक दूसरे से मोहब्बत करो। क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ जिस के करने से तुम एक दूसरे से मोहब्बत करने लगोगे। आपस में सलाम को खूब फैलाओ। (मुस्लिम १/७४, वगैरा)

225-(2) «ثَلَاثٌ مَنْ جَمَعَهُنَّ، فَقَدْ جَمَعَ الإِيمَانَ: الإِنْصَافُ مِنْ نَفْسِكَ، وَبَذْلُ السَّلَامِ لِلْعَالَمِ، وَالإِنْفَاقُ مِنَ الإِقْتَارِ».

अम्मार बिन् यासिर ﵁ फरमाते हैं कि : तीन चीज़ें ऐसी हैं कि जो आदमी इन तीनों को ह़ासिल् कर ले तो उस ने ईमान जमा कर लिया : (१) अपने आप से इन्साफ करना। (२) तमाम लोगों से सलाम कर ना। (३) तन्गादस्त होते हुये भी (अल्लाह की राह में) ख़र्च करना। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ १/८२ मौकूफ मो अल्लक् यानी यह सहाबी का फरमान है)

226-(3) وَعَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ ﵄: أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ: أَيُّ الإِسْلَامِ خَيْرٌ؟ قَالَ: «تُطْعِمُ الطَّعَامَ، وَتَقْرَأُ السَّلَامَ عَلَى مَنْ عَرَفْتَ وَمَنْ لَمْ تَعْرِفْ».

२२६. अब्दुल्लाह बिन् उमर (रजिं.) फरमाते हैं कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया कि इस्लाम का कौन सा काम सब से बेहतर है ? आप ﷺ ने फरमाया: ((यह कि तुम खाना खिलाओ और जिसे तुम पहचानते हो और जिसे नहीं पहचानते सब से सलाम करो।)) (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ १/५५ मुस्लिम १/६५)

109 काफिर के सलाम का जवाब किस तरह दिया जाए

227-«إِذَا سَلَّمَ عَلَيْكُمْ أَهْلُ الكِتَابِ، فَقُولُوا: وَعَلَيْكُمْ».

रसूलुल्लाह भ ने फरमाया कि : जब यहूद व नसारा तुम से सलाम करें तो तुम उन्हें जवाब में कहो :

«وَعَلَيْكُمْ».

(और तुम पर भी)। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ११/४२ और मुस्लिम ४/१७०५)

110 मुर्ग़ बोलने और गदहा हींगने के वक़्त की दुआ

228-«إِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ الدِّيَكَةِ فَاسْأَلُوا اللهَ مِنْ فَضْلِهِ؛ فَإِنَّهَا رَأَتْ مَلَكًا، وَإِذَا سَمِعْتُمْ نَهِيقَ الحِمَارِ فَتَعَوَّذُوا بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ؛ فَإِنَّهُ رَأَى شَيْطَانًا».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि : जब तुम मुर्ग़ की

बाँग सुनो तो अल्लाह तआला से उस का फज़्ल माँगो (मिसाल के तौर पर यह पढ़ो) : «اَللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ»

क्योंकि वह फरिश्ता देखता है, और जब गदहे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह माँगों क्योंकि वह शैतान देखता है । (यानी यह पढ़ो : «أَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ» (बुख़ारी फतहुल बारी के साथ ६/३५० मुस्लिम ४/२०९२)

111 रात को कुत्तों के भूँकने के वक्त की दुआ

229-«إِذَا سَمِعْتُمْ نُبَاحَ الكِلَابِ وَنَهِيقَ الحَمِيرِ بِاللَّيْلِ، فَتَعَوَّذُوا بِاللهِ مِنْهُنَّ؛ فَإِنَّهُنَّ يَرَيْنَ مَا لَا تَرَوْنَ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि जब तुम रात के वक्त कुत्तों के भूँकने और गदहों के हींगने की आवाजं सुनो तो उन से अल्लाह की पनाह माँगों क्योंकि वह ऐसी चीज़ें देखते हैं जिन्हें तुम नहीं देख

পাते । (अबूदाऊद ४/३२७, अहमद ३/३०६ और शैख़ अल्बानी ने इस ह़दीस को सहीह अबू दाऊद ३२९६१ में सह़ीह़ कहा है)

112 उस आदमी के लिए दुआ जिसे तुम ने बुरा भला कहा हो या गाली दी हो

अबू हुरैरा (रजि) फरमाते हैं कि उन्हों ने रसूलुल्लाह भ को यह दुआ करते हुए सुना :

230-«اللَّهُمَّ فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ سَبَبْتُهُ، فَاجْعَلْ ذَلِكَ لَهُ قُرْبَةً إِلَيْكَ يَوْمَ القِيَامَةِ».

ऐ अल्लाह जिस किसी मोमिन को मैं ने बुरा भला कहा हो तो क़यामत् के दिन इसे उस के लिए अपने क़रीब होने का जंरिया बना दे । (बुख़ारी फत् हुल बारी के साथ ११/१७१, मुस्लिम ४/२००७, मुस्लिम के शब्द हैं: «فاجعلها له زكاة ورحمة». (इस को उसके लिए पाकीजंगी और रहमत का जंरिया बना दे ।)

113 মুসলমান किसी मुसलमान की तारीफ में क्या कहे

231-قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «إِذَا كَانَ أَحَدُكُمْ مَادِحًا صَاحِبَهُ لَا مَحَالَةَ، فَلْيَقُلْ: أَحْسَبُ فُلَانًا وَاللهُ حَسِيبُهُ، وَلَا أُزَكِّي عَلَى اللهِ أَحَدًا، أَحْسَبُهُ -إِنْ كَانَ يَعْلَمُ ذَاكَ- كَذَا وَكَذَا».

आप ﷺ ने फरमाया : जब तुम में से किसी को जरूर ही किसी की तारीफ करनी हो तो यह कहे :

मैं समझता हूज़ कि फलाँ आदमी ऐसे और ऐसे (मिसाल के तौर पर नेक, परहेजंगार, दीनदार् वगैरा)) है, और अल्लाह उस का हिसाब लेने वाला है और मैं किसी को अल्लाह के सामने पाक नहीं करार दे सकता। यह तारीफ भी उस वक़्त करे जब यह खूब अच्छी तरह जानता हो। (मुस्लिम ४/२२९६)

114 जब मुसलमान अपनी तारीफ सुने तो क्या कहे

232-«اللَّهُمَّ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا يَقُولُونَ، وَاغْفِرْ لِي مَا لَا يَعْلَمُونَ،

[وَاجْعَلْنِي خَيْرًا مِمَّا يَظُنُّونَ]».

ऐ अल्लाह जो यह लोग मेरे बारे में कह रहे हैं उस पर मेरी पकड़ मत करना और मुझे माफ कर दे वह जो ये नहीं जानते हैं। [और मुझे उस से बेहतर बना दे जो ये मेरे बारे में गुमान करते है।] (बुखारी की अदबुल मुफरद न.७६१, शैख अलबानी ने सहीहुल् अद् बिल् मुफ्रद् न.५८५ में इसकी सनद को सहीह कहा है, दोनों बरेकिटों के बीच के शब्द बैहकी ने शुअबुल ईमान ४२२२८ में एक दूसरी सनद से ज्यादा किए हैं)

115 हज्ज या उम्रा का इह़राम बाँधने वाला तल्बिया कैसे कहे

233-«لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالمُلْكَ، لَا شَرِيكَ لَكَ».

मैं ह़ाजिर हूँ। ऐ अल्लाह मैं ह़ाजिर हूँ। मैं ह़ाजिर हूँ तेरा कोई शरीक नहीं, मैं ह़ाजिर हूँ। बेशक् तमाम तारीफ और नेमत् और बादशाही तेरे ही लिए है। तेरा कोई शरीक नहीं। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ३/४०८ मुस्लिम २/८४१)

116 हज्रे अस्वद् वाले कोने पर अल्लाहु अक्बर कहना चाहिए

234-«طَافَ النَّبِيُّ ﷺ بِالبَيْتِ عَلَى بَعِيرٍ؛ كُلَّمَا أَتَى الرُّكْنَ، أَشَارَ إِلَيْهِ بِشَيْءٍ عِنْدَهُ، وَكَبَّرَ»

नबी ﷺ ने ऊँट पर सवार हो कर बैतुल्लाह का तवाफ किया। जब आप ﷺ हज्रे अस्वद् वाले कोने के पास आते तो उस की तरफ् अपने पास मौजूद किसी चीज़ से इशारा करते और ((अल्लाहु अक्बर)) कहते। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ३/४७६) किसी चीज़ से मुराद छड़ी है। देखिए बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ३/४७२)

117 रुक्ने यमानी और हज्रे अस्वद् के दरमियान दुआ

235-«﴿رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِي ٱلدُّنۡيَا حَسَنَةً وَفِي ٱلۡأٓخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ﴾».

ऐ हमारे रब् हमें दुनिया और आख़िरत् में भलाई अता फरमा और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा। (अबूदाऊद

२/१७९ अह्मद् ३/४११ शरहुस्सुन्ना लिल् बग़वी ७/१२८, अलबानी ने सहीह अबू दाऊद १२३५४ में इसे हसन कहा है)

118 सफा और मरवा पर ठहरने की दुआ

236- जब आप ﷺ सफा के क़रीब पहुँचे तो फरमाया:

«﴿إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلۡمَرۡوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ﴾ أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللّٰهُ بِهِ».

सफा और मरवा (यह दोनों पहाड़ियाँ) अल्लाह की निशानियों में से हैं। मैं उसी से शुरू कर रहा हूँ जिस से अल्लाह ने शुरू किया है।

फिर आप ने सफा से सई शुरू की, उस पर चढ़ते गए यहाँ तक कि बैतुल्लाह नज़र आने लगा, फिर आप ने क़िब्ला की तरफ् मुहँ किया और अल्लाह की तौहीद और बडांई बयान करते हुए यह दुआ पढी :

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ، أَنْجَزَ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ».

अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक़् नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। अल्लाह के सिवा को ई इबादत् के लायक़् नहीं। वह अकेला है। उस ने अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे की मदद् की और अकेले उस ने सारे लश्करों को शिकस्त दी।

फिर इसके बीच आप ने दुआ फरमाई, इस तरह आप ने तीन बार कहा। हदीस लम्बी है और उस में यह भी है कि नबी ﷺ ने मरवा पर भी वैसे ही किया जैसे सफा पर किया।

(मुस्लिम २२८८८)

119 अरफा के दिन (९जुल्हिज्जा) की दुआ

237-قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «خَيْرُ الدُّعَاءِ دُعَاءُ يَوْمِ عَرَفَةَ، وَخَيْرُ مَا قُلْتُ أَنَا وَالنَّبِيُّونَ مِنْ قَبْلِي:

वधिथ ﷺ गक त्तवभपसप ५ अि कि अकनचव

লত্রখপ খবত্তপ মক লিগ মজ লত্রখপ নকে খপক্ব ন লিগ তপক মত্রল ভক্ব গক খপক্ব ভত্রশ্র কি ষ্নথক গাঅসপকব গক মনপ ন ভকব অি কি খত্ততংথ সন নক ৫

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ».

অল্লাহ্ কে সিবা কোই ইবাদত কে লায়ক্ নহীং। বহ অকেলা হৈ, উস কা কোই শরীক নহীং, উসী কে লিএ বাদশাহী হৈ অৌর উসী কে লিএ তারীফ হৈ অৌর বহ হর চীজ় পর ক়াদির হৈ।(ত্রিমিজ়ী, শৈখ অলবানী নে সহীহ্ ত্রিমিজ়ী ৩/১৮৪ অৌর সিলসিলা সহীহা ৪২৬ মেং ইসে হসন কহা হৈ)

120 ভুপজ্খবক নবপভ মক ষ্পি মজ লত্রখপ

238-«رَكِبَ النَّبِيُّ ﷺ القَصْوَاءَ حَتَّى أَتَى المَشْعَرَ الحَرَامَ، فَاسْتَقْبَلَ القِبْلَةَ (فَدَعَاهُ، وَكَبَّرَهُ، وَهَلَّلَهُ، وَوَحَّدَهُ)، فَلَمْ يَزَلْ وَاقِفًا حَتَّى أَسْفَرَ جِدًّا، فَدَفَعَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ».

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़सवा .ऊँटनीऋ पर सवार हो गये। जब मशअरे हराम .मुज़्दल्फाऋ पहुँचे तो क़िब्ला की ओर मुँह कर के अल्लाह तआला से दुआ की, अल्लाहु अक्बर, लाइलाहा इल्लल्लाह और तौहीद के कलिमात कहते रहे। अच्छी तरह रोशनी होने तक यहीं ठहरे रहे। फिर सूरज निकलने से पहले यहाँ से रवाना हो गये। (मुस्लिम २/८६१)

121 तभवपच मज वभज मक यम्ंच नव मबमवज मक पिँप चमञ्अजव

239- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीनों जमरात के पास जब भी कंकरी फेंकते अल्लाहु अक्बर कहते, फिर आगे बढ़ते और पहले और दूसरे जमरा के बाद क़िब्ला की ओर मुँह करके अपने दोनों हाथ उठाकर दुआ करते। किन्तु जमरा अक़बा .आखिरी जमराऋ की रमी करते हुये हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक्बर कहते और उसके पास बिना ठहरे हुये वापस हो जाते। (बुखारी फत्हुल बारी के साथ ३/५८३, ३/५८४, और इसके शब्द

यहीं देखिये, बुखारी फत्हुल बारी के साथ ३/५८१, मुस्लिम ने भी इसे रिवायत किया है)

122 तअज्जुब् और खुश कुन काम पर दुआ

(1)-240 «سُبْحَانَ اللهِ!».

अल्लाह पाक है। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ १/२१०, ३९०, ४१४ मुस्लिम ४/१८५७)

(2)-241 «اللهُ أَكْبَرُ!».

अल्लाह सब से बडा है। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ८/४४१ और देखिए सहीह़ त्रिमिज़ी २/१०३, २२२३५, मुसनद अहद ५२२१८)

123 पत्रुपृपंअवज ।भथगक ष्व म्सप मवक्

242-«كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَتَاهُ أَمْرٌ يَسُرُّهُ أَوْ يُسَرُّ بِهِ، خَرَّ سَاجِدًا شُكْرًا لِلهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى».

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी खुश करने वाली चीज़ की ख़बर मिलती तो आप अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हुये सज्दा में गिर पड़ते। (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा, देखिए सहीह इब्ने माजा १/२३३, इर्वाउल ग़लील २/२२६ऋ

124 जो आदमी अपने जिस्म में दर्द महसूस करे वह क्या दुआ पढ़े

243- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है कि जिस्म के जिस हिस्से में तकलीफ़ हो उस पर अपना हाथ रखो और तीन बार कहोः

«بِاسْمِ اللهِ».

अल्लाह के नाम से।

और सात बार यह दुआ पढ़ोः

«أَعُوذُ بِاللهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ».

मैं अल्लाह तआला और उसकी कुदरत् की पनाह

पकड़ता हूँ उस चीज़ के शर् (बुराई) से जो मैं पाता हूँ और जिस से डरता हूँ। (मुस्लिम ४/१७२८)

125 खष्राज गतंव थह तपगक मप :व नपक चपक म्सप मनक

244- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जब तुम में से कोई आदमी अपने भाई या अपने यहाँ या अपने माल में खुश करने वाली चीज़ देखे तो उसे बरकत की दुआ करनी चाहिए, क्योंकि नज़र लग जाना हक़ है। (मुसनद अहमद ४/४४७, इब्ने माजा, मालिक, अलबानी ने सहीहुल जामिअ में इसे सहीह कहा है १/२१२, देखिए ज़ादुल मआद अरनाऊत की तहक़ीक़ ४/१७०)

126 रुपअवपनख मक भिस म्सप मनप तप,?

245-«لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ!».

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ६/१८१, मुस्लिम ४/२२०८)

127 आम जानवर या ऊन्ट ज़बह् करते समय क्या कहे?

246-«بِاسْمِ اللهِ، وَاللهُ أَكْبَرُ، [اللَّهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ]، اللَّهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّي».

अल्लाह के नाम से ज़बह् करता हूँ। अल्लाह सब से बड़ा है [ऐ अल्लाह यह कुरबानी तेरी ही तरफ से और तेरे ही लिए है] ऐ अल्लाह यह (कुरबानी) मेरी तरफ से क़बूल फरमा। (मुस्लिम ३/१५५७ बैहक़ी ९/२८७, बरैकिट के बीच के शब्द बैहकी वगैरा के हैं, और आखिरी जुमला मुस्लिम की रिवायत का अर्थ है)

128 सरकश् शैतानों के फरेब और चाल से बचने की दुआ

247- «أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ: مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَبَرَأَ وَذَرَأَ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيهَا، وَمِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الأَرْضِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا، وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ، وَمِنْ شَرِّ كُلِّ طَارِقٍ، إِلَّا

طَارِقًا يَطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمَنُ!».

मैं अल्लाह के उन मुकम्मल् कलिमात की पनाह पकड़ता हूँ जिन से कोई नेक और कोई बुरा आगे नहीं गुज़र सकता उस चीज़ की बुराई से जिसे उस ने पैदा किया और वजूद बख्शा और फैलाया, और उस चीजं की बुराई से जो आसमान से उतरती है, और उस चीजं की बुराई से जो उस में चढंती है, और उस चीज़ की बुराई से जो उस ने ज़मीन में फैलाया और उस की बुराई से जो उस से निकलती है और रात और दिन के फित्नों के शर से और र ात के वक्त हर आने वाले की बुराई से सिवाए उस रात को आने वाले के जो भलाई के साथ आए । ऐ बहुत ज्यादा रहम करने वाले । (अह्मद् ३/४१९ सह़ीह़ सनद् के साथ, इब्नुस सुन्नी न. ६३७, अरनाऊत ने तहाविया की तखरीजं पृष्ठ १३३ में इसकी सनद को सहीह कहा है, देखिए मजमऊज्जंवाइद् १०२१२७)

129 तौबा और इस्तिग्फार (अल्लाह से माफी और बख्शिश् माँगना)

248-(1) قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «وَاللهِ، إِنِّي لَأَسْتَغْفِرُ اللهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي اليَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً».

রসূলুল্লাহ ﷺ ने फरमाया : अल्लाह की क़सम मैं दिन में सत्तर मर्तबा से ज्यादा अल्लाह से बख़्शिश् माँगता और उस के सामने तौबा करता हूँ। (बुख़ारी फत्हुल बारी के साथ ११/१०१)

249-(2) وَقَالَ ﷺ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ، تُوبُوا إِلَى اللهِ؛ فَإِنِّي أَتُوبُ فِي اليَوْمِ إِلَيْهِ مِائَةَ مَرَّةٍ».

नबी ﷺ ने फरमाया : ऐ लोगो अल्लाह के सामने तौबा करो, मैं दिन में सौ (१००) बार उस के सामने तौबा करता हूँ। (मुस्लिम ४/२०७६)

250-(3) وَقَالَ ﷺ: «مَنْ قَالَ: أَسْتَغْفِرُ اللهَ العَظِيمَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الحَيَّ القَيُّومَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ، غَفَرَ اللهُ لَهُ وَإِنْ كَانَ فَرَّ مِنَ الزَّحْفِ».

आप ﷺ ने फरमाया : जो आदमी यह दुआ पढ़े :

«أَسْتَغْفِرُ اللهَ العَظِيمَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الحَيَّ القَيُّومَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ».

मैं अजमत वाले अल्लाह से माफी माँगता हूँ जिस

के सिवा कोई इबादत के लायक़् नहीं वह हमेशा जिन्दा रहने वाला और सब को कांयम रखने वाला है और मैं उसके सामने तौबा करता हूँ।

तो अल्लाह तआला उसे बख़्श् देता है चाहे वह लडांई के मैदान से भागा हुआ हो। (अबूदाऊद २/८५, त्रिमिज़ी ५/५६९, और हाकिम ने इसे रिवायत कर के सहीह कहा है और जंहबी ने इसकी पुष्टि की है, और शैख अलबानी ने भी इसे सहीह कहा है, देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८२, जामिउल उसूल ४२३८९७३९० तहकीकं अरनाऊत)

251-(4) وَقَالَ ﷺ: «أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الرَّبُّ مِنَ العَبْدِ فِي جَوْفِ اللَّيْلِ الآخِرِ؛ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَكُونَ مِمَّنْ يَذْكُرُ اللهَ فِي تِلْكَ السَّاعَةِ، فَكُنْ».

आप भ ने फरमाया : अल्लाह तआला बन्दे के सब से क़रीब रात के आख़िरी हिस्से में होता है। अगर तुम उन लोगों में शामिल् हो सको जो उस वक्त अल्लाह को याद करते हैं तो हो जाओ। (त्रिमिजी, नसाई १२२७९, हाकिम और देखिये सहीह त्रिमिज़ी ३/१८३, जामिउल उसूल ४२१४४ तहकीकं अरनाऊत)

252-(5) وَقَالَ ﷺ: «أَقْرَبُ مَا يَكُونُ العَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ؛ فَأَكْثِرُوا الدُّعَاءَ».

আপ ﷺ ने फरमाया : बन्दा अपने रब् से सब से ज्यादा क़रीब सजदे की ह़ालत् में होता है तो सजदे में ज्यादा से ज्यादा दुआ किया करो । (मुस्लिम १/३५०)

253-(6) وَقَالَ ﷺ: «إِنَّهُ لَيُغَانُ عَلَى قَلْبِي، وَإِنِّي لَأَسْتَغْفِرُ اللهَ فِي اليَوْمِ مِائَةَ مَرَّةٍ».

अग़र्र मुज़नी बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: मेरे दिल् पर पर्दा सा आ जाता है और मैं दिन में सौ (१००) बार अल्लाह से बख्शिश् माँगता हूँ । (मुस्लिम ४/२०७५)

(इब्नुल् असीर फरमाते हैं कि पर्दा सा आने से मुराद भूल है । क्योंकि आप ﷺ हमेशा ज्यादा से ज्यादा ज़िक्र व अज़कार, कुंर्बत और अल्लाह के मुराकंबा में मश्गूल रहते थे । लेकिन जब कभी इन में किसी चीज़ से कुछ ग़फ्लत् हो जाती या आप भूल जाते तो उसे अपने लिए गुनाह शुमार करते और ऐसी ह़ालत् में अधिक से अधिक तौबा व इस्तिग़्फार करते । देखिए जामिउल् उसूल २/३८६)

चीअजन चनञ्भजल चनञ्थजथ खपक्व चमञ्अजव मज त्ततंजथच

254-(1) قَـالَ ﷺ: «مَـنْ قَالَ: سُـبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْـدِهِ فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَـرَّةٍ، حُطَّـتْ خَطَايَاهُ وَلَـوْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَـدِ البَحْرِ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो आदमी एक दिन में सौ (१००) बार :

«سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ».

पाक है अल्लाह अपनी तारीफों के साथ

कहे उस के गुनाह माफ कर दिए जाते हैं चाहे वह समुन्दर के झाग के बराबर हों। (बुख़ारी ७/१६८, मुस्लिम ४/२०७१, सुब्ह व शाम इस दुआ को सौ बार पढ़ने की फजीलत के लिए देखिए इसी किताब की हदीस न. ९१)

255-(2) وَقَالَ ﷺ: «مَنْ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، عَشْرَ مِرَارٍ: كَانَ كَمَنْ أَعْتَقَ أَرْبَعَةَ أَنْفُسٍ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो आदमी दस बार यह दुआ पढ़े :

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ».

वह उस आदमी की तरह होगा जिस ने इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद किए। (बुख़ारी ७/६७, मुस्लिम शब्द के साथ ४/२०७१, इस दुआ को दिन में सौ बार कहने की फजीलत के लिए देखिए इसी किताब की हदीस न.९३)

256-(3) وَقَالَ ﷺ: «كَلِمَتَانِ خَفِيفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ، ثَقِيلَتَانِ فِي المِيزَانِ، حَبِيبَتَانِ إِلَى الرَّحْمَنِ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللهِ العَظِيمِ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : दो कलमे ज़बान पर हलके हैं लेकिन मीज़ान (तराजू) में भारी हैं और अल्लाह को बड़े प्यारे हैं:

«سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللهِ العَظِيمِ».

पाक है अल्लाह और उसी के लिए हर किस्म की तारीफ है, पाक है अज़मत् वाला अल्लाह। (बुखारी ७/१६८ मुस्लिम ४/२०७२)

257-(4) وَقَالَ ﷺ: «لَأَنْ أَقُولَ: سُبْحَانَ اللهِ، وَالحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ: أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ».

রসূলুল্লাহ ﷺ ने फरमाया: मेरे नज़दीक सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, लाइलाहा इल्लल्लाह और अल्लाहु अक्बर का कहना उन तमाम चीजों से ज्यादा महबूब है जिन पर सूरज निकलता है। (यानी यह कलिमात कहना दुनिया की सारी नेमतों से ज्यादा महबूब है) (मुस्लिम ४/२०७२)

258-(5) وَقَالَ ﷺ: «أَيَعْجِزُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَكْسِبَ كُلَّ يَوْمٍ أَلْفَ حَسَنَةٍ»، فَسَأَلَهُ سَائِلٌ مِنْ جُلَسَائِهِ: كَيْفَ يَكْسِبُ أَحَدُنَا أَلْفَ حَسَنَةٍ؟ قَالَ: «يُسَبِّحُ مِائَةَ تَسْبِيحَةٍ، فَيُكْتَبُ لَهُ أَلْفُ حَسَنَةٍ، أَوْ يُحَطُّ عَنْهُ أَلْفُ خَطِيئَةٍ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : ((क्या तुम में से कोई आदमी रोजाना एक हज़ार नेकी कमाने से भी आजिज़ है ? आप के पास बैठे हुए साथियों में से एक ने कहा हम में से कोई एक हज़ार नेकी कैसे कमा सकता है ? आप ﷺ ने फरमाया : वह सौ बार तस्बीह कहे तो उस के लिए एक हज़ार नेकी लिखी

जाएगी या (आप ने फरमाया) उस के एक हज़ार गुनाह मिटा दिये जाऐं गे। (मुस्लिम ४/२०७३)

259-(6) «مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ العَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ، غُرِسَتْ لَهُ نَخْلَةٌ فِي الجَنَّةِ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो आदमी

«سُبْحَانَ اللهِ العَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ».

अजंमतों वाला अल्लाह पाक है अपनी तारीफों के साथ।

कहता है उस के लिए जन्नत में खजूर का एक पेड़ लगा दिया जाता है। (त्रिमिजी ५२५११, हाकिम १२१०५, हाकिम ने इसे सहीह कहा है और जंहबी ने इसकी पुष्टि की है, दे खिए सहीहुल जामिअ ५२५३१, सहीह त्रिमिजी ३२१६०)

260-(7) وَقَالَ ﷺ: «يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ، أَلَا أَدُلُّكَ عَلَى كَنْزٍ مِنْ كُنُوزِ الجَنَّةِ؟!»، فَقُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: «قُلْ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ».

नबी ﷺ ने फरमाया : ऐ अब्दुल्लाह बिन् क़ैस क्या मैं तुझे जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना न

बताऊँ ? मैं ने कहा या रसूलल्लाह क्यों नहीं जरूर बतायें ! आप ﷺ ने फरमाया: तुम कहो

«لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ».

अल्लाह की तौफीक़ के बिना न गुनाह से बचने की हिम्मत है न नेकी करने की ताक़त। (बुखारी फत्हुल बारी के साथ ११/२१३, मुस्लिम ४/२०७६)

261-(8) وَقَالَ ﷺ: «أَحَبُّ الكَلَامِ إِلَى اللهِ: أَرْبَعٌ: سُبْحَانَ اللهِ، وَالحَمْدُ لِلهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ؛ لَا يَضُرُّكَ بِأَيِّهِنَّ بَدَأْتَ».

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : चार कलिमात अल्लाह के यहाइ सब से ज्यादा महबूब हैं

«سُبْحَانَ اللهِ، وَالحَمْدُ لِلهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ».

और इन में से जिस से भी चाहो शुरू करो कोई हरज नहीं। (मुस्लिम ३/१६८५)

262-(9) جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: عَلِّمْنِي كَلَامًا أَقُولُهُ، قَالَ: «قُلْ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، اللهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، وَالحَمْدُ لِلهِ كَثِيرًا، سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ العَالَمِينَ، لَا حَوْلَ

وَلَا قُـوَّةَ إِلَّا بِـاللهِ العَزِيـزِ الحَكِيمِ»، قَـالَ: فَهَؤُلَاءِ لِـرَبِّي، فَمَا لِي؟ قَـالَ: «قُـلِ: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْـنِي، وَاهْـدِنِي، وَارْزُقْنِي».

एक आराबी (दिहाती) रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और कहने लगा मुझे कुछ कलाम सिखायें जो मैं कहा करूँ। आप ﷺ ने फरमाया कहो :

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَحْـدَهُ لَا شَرِيـكَ لَهُ، اللهُ أَكْـبَرُ كَبِـيرًا، وَالحَمْـدُ لِلهِ كَثِـيرًا، سُـبْحَانَ اللهِ رَبِّ العَالَمِينَ، لَا حَـوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ العَزِيـزِ الحَكِيمِ».

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा और तमाम तारीफ के वल अल्लाह ही के लिए है बहुत ज्यादा। अल्लाह बहुत पाक है जो सारे जहानों का रब् है। खथ्थपन हंपाथअ खपक्व ानमभच यपथक मज चपक्तजमं मक ाअगप ग अत्रवपदश कि अउगक मज ानभ्भच नक ग गकमज मवगक मज चपमंचब

दिहाती ने कहा यह तो मेरे रब के लिए हैं, मेरे लिए क्या है ? आप ﷺ ने फरमाया कहो :

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَارْزُقْنِي».

ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम कर, मुझे हिदायत् दे और मुझे रोज़ी दे। (मुस्लिम ४/२०७२ अबू दाऊद ने यह ज़्यादा किया है कि जब वह दिहाती वापस जाने लगा तो आप भ ने फरमाया : इसने अपने दोनों हाथ भलाई से भर लिये, १२२२०)

(10)-263 كَانَ الرَّجُلُ إِذَا أَسْلَمَ، عَلَّمَهُ النَّبِيُّ ﷺ الصَّلَاةَ، ثُمَّ أَمَرَهُ أَنْ يَدْعُوَ بِهَؤُلَاءِ الكَلِمَاتِ:

जब कोई आदमी मुसलमान होता तो नबी भ उसे नमाज़ सिखाते फिर उसे इन कलिमात के साथ दुआ करने का आदेश देते:

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَعَافِنِي، وَارْزُقْنِي».

ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम कर, मुझे हिदायत् दे, मुझे आफियत् दे और मुझे रोज़ी दे। (मुस्लिम ४/२०७३, मुस्लिम की एक रिवायत में है कि यह कलिमात तेरे लिए तेरी दुनिया और आखिरत जमा कर दें गे)

(11)-264 «إِنَّ أَفْضَلَ الدُّعَاءِ: الحَمْدُ لِلَّهِ، وَأَفْضَلَ الذِّكْرِ: لَا إِلَهَ

إِلَّا اللهُ».

नबी ﷺ का फरमान है कि सब से अफज़ल् दुआ अलहमदुलिल्लाह है और सब से अफजंल ांतंच्र लाइलाहा इल्लल्लाह है। (त्रिमिज़ी ५/४६२, इब्ने माजा २२१२४९, हाकिम १२५०३, हाकिम ने इसे सहीह कहा है और जंहबी ने इसकी पुष्टि की है, देखिए सहीहुल जामिअ १२३६२)

265-(12) «البَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ:

अल्बाक़ियातुस्सालिहात (अर्थात बाक़ी रहने वाले ने क अमल्) यह हैं :

«سُبْحَانَ اللهِ، وَالحَمْدُ لِلهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ».

अल्लाह पाक है, और सब तारीफ अल्लाह के लिए है, और अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, और अल्लाह सब से बड़ा है, और नहीं है बुराई से बचने की हिम्मत और न नेकी करने की ताक़त मगर अल्लाह की तौफीक़ से। (बगकइ गइस्य हब्धकृः!रु तरतीब अहमद ाािकर, इसकी सनद सहीह है, और देखिए मजमउज़्ज़वाइद

१/२६७, हाफिज़ इब्ने हजर ने बुलूगुल मराम में इसे अबू सईद की रिवायत से नसाई के हवाले से नक़ल किया है और फरमाया है कि इसे इब्ने हिब्बान और हाकिम ने सहीह कहा है।)

131 गअज थ्यिथ्थपनत्र खथक्कन यथ्यिभ चीअजन मक्कि ष्ंचक ँपक ?

266-عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو ﷺ، قَالَ: «رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَعْقِدُ التَّسْبِيحَ»، وفي زيادةٍ: «بِيَمِينِهِ».

अब्दुल्लाह बिन् अम्र (रजिंयल्लाहु अन्हुमा) फरमाते हैं कि मैं ने नबी ﷺ को अपने दायें हाथ से तस्बीह़ गिनते देखा। (अबूदाउद शब्द के साथ २/८१ त्रिमिजी ५२५२१ और देखिए सह़ीहुल् जामिअ् ४/२७१ हदीस न(४८६५)

132 भत्रृपंचाथत्त गकामसपज्ञ खपक्व तपाभख खपलपअ

267-قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «إِذَا كَانَ جُنْحُ اللَّيْلِ -أَوْ أَمْسَيْتُمْ- فَكُفُّوا صِبْيَانَكُمْ؛ فَإِنَّ الشَّيَاطِينَ تَنْتَشِرُ حِينَئِذٍ، فَإِذَا ذَهَبَ سَاعَةٌ

مِـنَ اللَّيْـلِ فَخَلُّوهُمْ، وَأَغْلِقُـوا الأَبْـوَابَ وَاذْكُرُوا اسْـمَ اللهِ؛ فَإِنَّ الشَّـيْطَانَ لَا يَفْتَـحُ بَابًـا مُغْلَقًـا، وَأَوْكُـوا قِرَبَكُمْ وَاذْكُرُوا اسْـمَ اللهِ، وَخَمِّـرُوا آنِيَتَكُمْ وَاذْكُرُوا اسْـمَ اللهِ؛ وَلَـوْ أَنْ تَعْرُضُوا عَلَيْهَا شَـيْئًا، وَأَطْفِئُوا مَصَابِيحَكُمْ».

রসূলুল্লাহ ﷺ ने फरमाया : जब रात का अंधेरा छा जाये या फरमाया जब शाम हो जाए तो अपने बच्चों को रोक लिया करो क्योंकि उस समय शैतान फैलते हैं और जब रात का कुछ हिस्सा बीत जाए तो उन्हें छोड़ दो, और बिस्मिल्लाह पढ़ कर दरवाज़े बन्द कर दिया करो क्योंकि शैतान बन्द दर वाज़ा नहीं खोलता, और अल्लाह का नाम लेकर अपने मश्कीज़ों के मुँह तस्मे से बाँध दिया करो और अल्लाह का नाम लेकर अपने बरतन् ढाँप दिया करो चाहे (अगर ढाँकने के लिए कुछ न मिले तो) उन पर कोई चीज़ ही रख दिया करो और अपने चिराग़ बुझा दिया करो। (बुखारी फत्हुल बारी के साथ १०२८८, मुस्लिम ३२१५९५)

وصلى الله وسلم وبارك على نبينا محمد وعلى آله وأصحابه أجمعين.

विषय सूची

ष्शपम्मँपग ....

ातंच मज त्तंतंजथच ....

1. नींद से जागने के बाद की दुआएँ ....
2. कपड़ा पहनने की दुआ। ....
3. नया कपड़ा पहनने की दुआ। ....
4. नया कपड़ा पहनने वाले को क्या दुआ दी जाए ....
5. कपड़ा उतारे तो क्या पढ़े ?
6. शौचालय (बैतुल৺खला) में दाख़िल् होने की दुआ। ....
7. शौचालय (बैतुल৺खला) से निकलने की दुआ। ....
8. वुज़ू शुरु करने से पहले की दुआ। ....
9. वुज़ू से फारिग़ होने के बाद की दुआ। ....
10. घर से निकलते समय की दुआ। ....
11. घर में दाख़िल् होते समय की दुआ। ....
12. मस्जिद की ओर जाने की दुआ। ....
13. मस्जिद में दाख़िल् होने की दुआ। ....
14. मस्जिद से निकलने की दुआ। ....
15. अज़ान की दुआएँ। ....
16. नमाज़ शुरू करने की दुआएँ। ....
17. रुकूअ़ की दुआएँ ....
18. रुकूअ से उठने की दुआएँ। ....
19. सजदे की दुआएँ। ....

20. दोनों सजदों के बीच बैठने की दुआएँ। .....
21. सजदा तिलावत् की दुआ। .....
22. तशहहुद् की दुआ। .....
23. तशहहुद के बाद नबी करीम ﷺ पर दुरूद शरीफ। .....
24. आख़िरी तशहहुद् के बाद और सलाम फेरने से पहले की दुआएँ। .....
25. नमाज़ से सलाम फेरने के बाद की दुआएँ।.....
26. नमाजें इस्तिख़ारा की दुआ। .....
27. सुबह् और शाम के अज़्कार और दुआएँ। .....
28. सोने के समय की दुआएँ। .....
29. रात को करवट बदल्ते समय की दुआ। .....
30. नींद में बेचैनी और घब्राहट् की दुआ। .....
31. कोई आदमी बुरा ख़्वाब (स्वप्न) देखे तो क्या करे? .....
32. कुनूते वित्र की दुआ। .....
33. वित्र का सलाम फेरने के बाद की दुआ। .....
34. ग़म् और फिक्र से नजात पाने की दुआ.....
35. बेक़रारी तथा बेचैनी की दुआ। .....
36. दुश्मन् तथा शासन अधिकारी से मुलाक़ात के समय की दुआ। .....
37. शासक् के अत्याचार से डरने वाले की दुआ। .....
38. दुश्मन् पर बद्दुआ। .....
39. जब किसी क़ौम से डरता हो तो कौनसी दुआ पढ़े ?.....
40. जिसे अपने ईमान में शक् होने लगे तो वह यह दुआ पढ़े। .....

41. क़र्ज (ऋण) की अदायगी के लिए दुआ। ....
42. नमाज़ में या क़ुरआन पढ़ते समय उत्पन्न होने वाले वस्वसों से बचने की दुआ। ....
43. उस आदमी की दुआ जिस पर कोई काम मुश्किल हो जाए। ....
44. गुनाह कर बैठे तो कौनसी दुआ पढ़े और क्या करे ? ...
45. वह दुआएँ जो शैतान तथा उस के वस्वसों को दूर करती हैं। ....
46. नापसन्दीदा वाक़िआ पेश आने या बेबसी की दुआ ....
47. जिस के यहाँ कोई औलाद पैदा हो उसे किस प्रकार मुबारक्बाद (दुआ) दी जाए और जिसे मुबारक्बादी दी जा रही हो वह मुबारकबाद देने वाले के लिए क्या कहे ?
48. बच्चों को किन कलिमात के साथ अल्लाह की पनाह में दिया जाए। ....
49. बीमार पुर्सी के वक्त मरीज़ के लिए दुआ ....
50. बीमार पुर्सी की फज़ीलत्। ....
51. उस मरीज़ की दुआ जो अपनी ज़िन्दगी से मायूस हो चुका हो। ....
52. जो आदमी मरने के क़रीब हो उसे थप दथपनप दथ्यथ्यपन पढ़ाया जाए। ....
53. जिसे कोई मुसीबत् पहुँचे वह यह दुआ पढ़े। ....
54. मैयित् की आँखें बन्द करते समय की दुआ। ....
55. नमाज़े जनाज़ा की दुआ। ....
56. बच्चे पर नमाज जनाज़ा की दुआ। ....
57. ता्ज़ियत् (मैयित के घर वालों को तसल्ली देने) की

दुआ । .....

58. मैयित को क़ब्र में उतारते समय की दुआ .....
59. मैयित को क़ब्र में दफन् करने के बाद की दुआ .....
60. क़बरों की ज़ियारत् की दुआ । .....
61. आज़्धी की दुआ .....
62. बादल् गरजते समय पढ़ी जाने वाली दुआ । .....
63. बारिश् माँगने की कुछ दुआएँ । .....
64. बारिश् उतरते समय की दुआ । .....
65. बारिश् खत्म होने के बाद की दुआ । .....
66. बारिश् रुकवाने के लिए दुआ । .....
67. नया चाँद देखने की दुआ । .....
68. रोजा खोलते समय की दुआ । .....
69. ख़ाना खाने से पहले की दुआ । .....
70. खाने से फारिग़ होने के बाद की दुआ । .....
71. मेहमान की दुआ खाना खिलाने वाले मेज़बान के लिए ।
72. जो आदमी कुछ पिलाए या पिलाने का इरादा करे उस के लिए दुआ । .....
73. जब किसी घर वालों के यहाँ रोज़ा इफ्तार करे तो उन के लिए यह दुआ करे । .....
74. दुआ जब खाना हाजिर हो और रोज़ादार रोज़ा न खोले ।
75. रोज़ादार को जब कोई गाली दे तो क्या कहे ? .....
76. पहला फल् देखने के समय की दुआ । .....
77. छींक की दुआ । .....
78. जब काफिर छींकते समय अल्हम्दुलिल्लाह कहे तो उस

के लिए क्या कहा जाए ? ....
79. शादी करने वाले के लिए दुआ। ....
80. शादी करने और सवारी खरीदने की दुआ। ....
81. जिमाअ़ (संम्भोग) से पहल की दुआ। ....
82. गुस्सा आजाने के वक़्त की दुआ। ....
83. किसी बीमारी या मुसीबत् में मुब्तला आदमी को देखे तो यह दुआ पढ़े। ....
84. मजलिस में पढ़ने की दुआ। ....
85. मजलिस् के गुनाह दूर करने की दुआ। ....
86. जो आदमी कहे (ग़फरल्लाहु लका)) अर्थात अल्लाह तुझे बख़्श दे उस के लिए दुआ। ....
87. जो अच्छा सुलूक करे उस के लिए दुआ। ....
88. वह दुआ जिसे पढ़ने से आदमी दज्जाल के फित्ने से मह़्फूज़ रहता है। ....
89. जो आदमी कहे मुझे तुम से अल्लाह के लिए मोह़ब्बत् है उस के लिए दुआ। ....
90. जो आदमी तुम्हारे लिए अपना माल पेश करे उस के लिए दुआ। ....
91. क़र्ज़ (ऋण) अदा करते समय क़र्ज देने वाले के लिए दुआ। ....
92. शिर्क से डरने की दुआ। ....
93. त्पपक खपलभज मनक५ ६६खथ्थपन चत्रश्रक अवमच लक८८ चपक ७मिक ।थ, म्सप लत्रखप मज तपसक......
94. अलत्तपथज मपक गपषिग्ल मवगक मज लत्रखप...............
95. सवारी पर सवार होने की दुआ ....

96. सफर की दुआ .....
97. किसी गावँ या शहर में दाखिल् होने की दुआ .....
98. बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ .....
99. सवारी के फिसल्ने या गिरने के समय की दुआा.....
100. मुसाफिर की दुआ मुक़ीम के लिए .....
101. मुक़ीम की दुआ मुसाफिर के लिए । .....
102. त्तिव मक लपक्वपग तक्बीर और तस्वीह़ .....
103. मुसाफिर की दुआ जब सुबह् करे । .....
104. सफर के दौरान जब मुसाफिर किसी मन्ज़िल् (मुक़ाम) पर उतरे उस समय की दुआ .....
105. सफर से वापसी की दुआ । .....
106. खुश करने वाली या ना पसन्दीदा चीज़ पेश आने पर क्या कहे ? .....
107. रसूलुल्लाह भ पर दरूद की फज़ीलत् .....
108. सलाम को फैलाना । .....
109. जब काफिर सलाम कहे तो उसे किस तरह जवाब दिया जाए । .....
110. मुर्ग़ बोलने और गदहा हींगने के समय की दुआ । .....
111. रात में कुत्तों का भूँकना (तथा गदहों का हींगना) सुनकर यह दुआ पढ़े । .....
112. उस आदमी के लिए दुआ जिसे तुम ने बुरा भला कहा (या गाली दी) हो । .....
113. कोई मुस्लिम जब किसी मुस्लिम की तारीफ करे तो क्या कहे ? .....

114. जब किसी मुसलमान आदमी की तारीफ की जाए तो वह क्या कहे ? .....

115. ह़ज्ज या उमरा का इह़राम बाँधने वाला कैसे तल्बिया कहे? .....

116. ह़जरे अस्वद् वाले कोने पर अल्लाहु अक्वर कहना चाहिए । .....

117. रुक्ने यमानी और ह़ज्रे अस्वद् के दरमियान की दुआ ।

118. सफा और मरवा पर ठहरने की दुआ । .....

119. अरफा (९जुल्ह़िज्जा) के दिन की दुआ । .....

120. भुपञ्खवक नवपभ मक ष्पा मज लत्रखप.....

121. तभवपच मज वभज मक भिस नव मबमवज मक पिँप चमञ्अजव (खथ्थपनत्र खमञ्अव) मनगप .....

122. तअज्जुब या खुशी के समय की दुआ । .....

123. पत्रुपृपअवज ाभथगक ष्व म्सप मवक ?.....

124. जो आदमी अपने बदन् में दर्द मह़सूस करे वह कौन सी दुआ पढ़े ? .....

125. जिस को अपनी ही नज़र लगने का भय हो तो वह क्या करे ?.....

126. घबराहट के समय क्या कहा जाए.....

127. आम जानवर या ऊञ्ट ज़बह़ करते वक़्त की दुआ । ....

128. सरकश् शैतानों की ख़ुफिया तदबीरों के तोड़ के लिए दुआ । .....

129. तौबा व इस्तिग़फार करना (अल्लाह से ब़ख़्शाश् और माफी माँगना).....

130. तस्बीह (सुब्हानल्लाह), तहमीद (अल्हमदुलिल्लाह), तहलील

(ला इलाहा इल्लल्लाह) और तकबीर (अल्लाहु अक्बर कहने) की फज़ीलत.....
131. नबी ﷺ तस्बीह कैसे पढ़ते थेढ.....
132. अनेक प्रकार की नेकिया और जामिअ आदाब.....

हिंदी / الهندية

حصن المسلم

من أذكار الكتاب والسنة

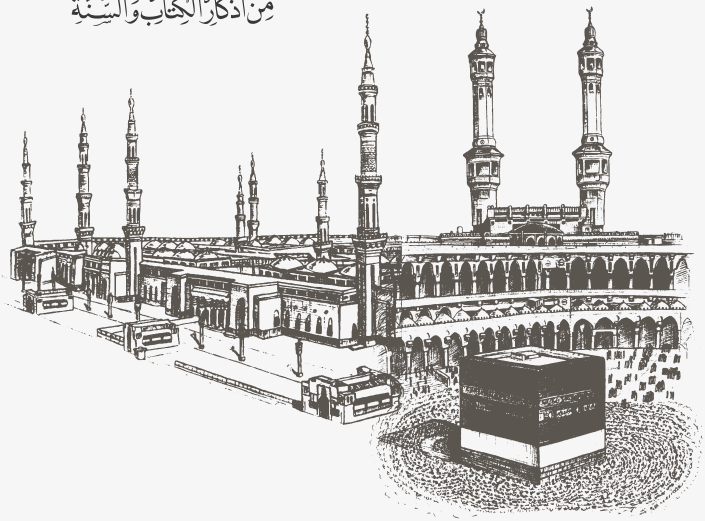

جمعية أصول
Osoul Foundation for Da'w

حرمين
رئاسة الشؤون الدينية
بالمسجد الحرام والمسجد النبوي

OSOUL STORE